साल्हावास खंड (जिला झज्जर) की आवास-योजना: एक पुरातात्विक अध्ययन

हरियाणा केन्द्रीय विश्वविद्यालय, महेन्द्रगढ़
एम. फिल्. (इतिहास एवं पुरातत्व)
की उपाधि हेतु प्रस्तुत
लघु शोध–प्रबंध

शोधार्थी
स्वाति राव
अनुक्रमांक-180172

शोध–निर्देशक
डॉ. नरेन्द्र परमार
सहायक प्राध्यापक
इतिहास एवं पुरातत्व विभाग

इतिहास एवं पुरातत्व विभाग

कला, मानविकी एवं समाज विज्ञान संकाय

हरियाणा केन्द्रीय विश्वविद्यालय, जांट-पाली, महेन्द्रगढ़

(2018-2019)

घोषणा-पत्र

मैं स्वाति राव यह घोषणा करती हूँ कि मैंने **साल्हावास खंड (जिला झज्जर) की आवास-योजना: एक पुरातात्विक अध्ययन** विषयक लघु शोध–प्रबंध डॉ. नरेन्द्र परमार (सहायक प्राध्यापक) के निर्देशन में लिखा है। इसकी समस्त सामग्री शोधपरक एवं मौलिक है। मेरी जानकारी में हरियाणा केन्द्रीय विश्वविद्यालय में इससे पूर्व इस विषय पर कोई शोध नहीं हुआ है। मैं इसे हरियाणा केन्द्रीय विश्वविद्यालय, महेन्द्रगढ़ में एम.फिल् (इतिहास एवं पुरातत्व विभाग) की उपाधि हेतु मुल्यांकनार्थ प्रस्तुत करती हूँ।

दिनांक:

स्वाति राव
शोधार्थी

प्रमाण पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि शोधार्थी स्वाति राव ने **साल्हावास खंड (जिला झज्जर) की आवास-योजना: एक पुरातात्विक अध्ययन** विषयक लघु शोध-प्रबंध मेरे निर्देशन में स्वयं लिखा है। इसकी सामग्री शोधपरक एवं मौलिक है। मेरी जानकारी में हरियाणा केन्द्रीय विश्वविद्यालय में इससे पूर्व इस विषय पर कोई शोध कार्य नहीं हुआ है। मैं इसे हरियाणा केन्द्रीय विश्वविद्यालय, महेन्द्रगढ़ में एम.फिल् (इतिहास एवं पुरातत्व) की उपाधि हेतु मुल्यांकनार्थ प्रस्तुत करने की संस्तुति करता हूँ।

दिनांक:

(डॉ. नरेन्द्र परमार)
इतिहास एवं पुरातत्व विभाग
हरियाणा केन्द्रीय विश्वविद्यालय
महेन्द्रगढ़-123029 (हरियाणा)

विषय-सूची

प्रस्तावना.....I

आभारोक्ति.....II

चित्र-सूची.....III-IV

तालिका.....V

अध्याय-1 परिचय.....1-12

1.1: ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

1.2: शोध-समस्या

1.3: अध्ययन-क्षेत्र

1.4: पूर्ववर्ती शोध कार्य

1.5: शोध-उद्देश्य

1.6: शोध-विधि

1.7: अध्याय-विभाजन

अध्याय-2 भौगोलिक पृष्ठभूमि……...13-27

2.1: भूगर्भिक विशेषताएं

2.2: स्थलाकृति

2.3: जलवायु

2.4: नदियां

2.5: मृदा

2.6: कृषि एवं सिंचाई व्यवस्था

2.7: पशुपालन एवं जीव जंतु

2.8: वनस्पति

अध्याय-3 सर्वेक्षण…….....28-56

अध्याय-4 आवास-योजना……..….57-70

4.1: आवास योजना

4.1.1: आवास योजना का वितरण

4.1.1.1: क्षेत्रफल के आधार पर आवासीय वितरण

4.1.1.2.: मृदा क्षेत्र के आधार पर आवासीय वितरण

4.1.1.3: पुरास्थल के स्वरूप के आधार पर आवास का वितरण

4.1.1.4: जनसंख्या के आधार पर आवासीय वितरण

अध्याय-5 सांस्कृतिक सामग्री……..….71-84

5.1.1: आरंभिक हड़प्पाकालीन मृदभांड-परंपरा

5.1.2: विकसित हड़प्पाकालीन मृदभांड-परंपरा

5.1.3: उत्तर हड़प्पाकालीन मृदभांड-परंपरा

5.1.4: पूर्व मध्यकालीन मृदभांड-परंपरा

5.2: पकी मिट्टी से निर्मित वस्तुएं

5.3: पत्थर से निर्मित वस्तुएं

5.4: फियांस की वस्तुएँ

अध्याय-6 सांस्कृतिक परिवर्तन……85-94

6.1: आरंभिक हड़प्पा संस्कृति

6.2: विकसित हड़प्पा संस्कृति

6.3: उत्तर हड़प्पा संस्कृति

6.4: पूर्व मध्यकाल संस्कृति

अध्याय-7 निष्कर्ष ……...95-100

सन्दर्भ सूची.....101-104

परिशिष्ट-1 साल्हावास खंड के पुरास्थल.....105-108

चित्र

प्रस्तावना

प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध में साल्हावास खंड (जिला झज्जर) की आवास योजना का पुरातात्विक दृष्टि से अध्ययन किया गया है। इस शोध कार्य में झज्जर की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, भौगोलिक स्थिति, पुरास्थलों की आवास-योजना, सांस्कृतिक सामग्री एवं सांस्कृतिक परिवर्तन पर प्रकाश डाला गया है। साल्हावास खंड अर्ध-शुष्क जलवायु वाले क्षेत्र में स्थित है। यह उत्तर में सरस्वती-दृषद्वती नदी, दक्षिण में अरावली की पहाड़ियां तथा पश्चिम में थार के मरुस्थल से घिरा हुआ है। इन पुरास्थलों से प्राप्त सांस्कृतिक सामग्री का अध्ययन कर इनका काल निर्धारण किया गया है जिससे यह पता चला कि इस क्षेत्र में सर्वप्रथम निवास करने वाली संस्कृति आरंभिक हड़प्पा कालीन संस्कृति थी। प्रस्तुत शोध प्रबंध में झज्जर की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर भी प्रकाश डाला गया है जिससे प्राचीन समय में इस क्षेत्र में बसने वाली संस्कृतियों के विषय में जानकारी मिलती है। इस शोध कार्य में साल्हावास खंड की भौगोलिक पृष्ठभूमि पर भी प्रकाश डाला गया है जो कि आवास योजना के अध्ययन में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। किसी भी संस्कृति के उदय एवं विकास में उस क्षेत्र की पारिस्थितिकी तंत्र एवं भौगोलिक पृष्ठभूमि की अहम भूमिका होती है। अत: भौगोलिक पृष्ठभूमि का अध्ययन कर प्राचीन संस्कृतियों की आवास योजना के विषय में विस्तृत जानकारी प्राप्त की गयी है। साल्हावास खंड के अंतर्गत आने वाले 38 गांव का सर्वेक्षण किया जिसके परिणामस्वरूप कुल 45 पुरास्थल प्रकाश में आए हैं। इस लघु शोध प्रबंध में पुरास्थलों की आवास योजना का अध्ययन क्षेत्रफल, मृदा, स्वरूप, और जनसंख्या के आधार पर किया गया है। इसके अतिरिक्त पुरास्थलों से प्राप्त सांस्कृतिक सामग्री का तुलनात्मक अध्ययन बादली, लोहट एवं अन्य उत्खनित पुरास्थलों से किया गया है। इस लघु शोध प्रबंध में सर्वेक्षण के दौरान मिले पुरास्थलों की विस्तृत जानकारी प्रदान की गयी है। इसके अतिरिक्त पुरास्थलों से मिली सांस्कृतिक सामग्री का अध्ययन भी किया गया है। सांस्कृतिक सामग्री के आधार पर प्रत्येक पुरास्थल का काल-क्रम निर्धारण कर उसमें आए सांस्कृतिक परिवर्तन पर विशेष रूप से प्रकाश डाला गया है। शोध कार्य के अंतर्गत साल्हावास खंड ही नहीं अपितु झज्जर जिले की सभी प्राचीन संस्कृतियों के सांस्कृतिक क्रम को चित्र द्वारा दर्शाया गया है।

स्वाति राव

आभारोक्ति

प्रस्तुत शोध-प्रबंध सहायक प्राध्यापक डॉ. नरेन्द्र परमार, इतिहास एवं पुरातत्व विभाग, हरियाणा केन्द्रीय विश्वविद्यालय के मार्गदर्शन, प्रोत्साहन एवं प्रेरणा से पूरा हुआ है। विश्वविद्यालय के प्रमुख कार्यो में व्यस्त रहते हुए भी उन्होंने शोध निर्देशक के रूप में मेरा जो मार्गदर्शन किया है उसके लिए मैं सर्वथा आभारी रहूँगी। उनके मार्गदर्शन, प्रेरणा एवं प्रोत्साहन के अभाव में मेरे लिए इस लधु शोध-प्रबंध को पूर्ण कर पाना संभव नही था। मैं विशेषकर डॉ. अमर सिंह के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करना चाहूँगी। उन्होनें अपना कीमती समय निकालकर पुरास्थलों का सांस्कृतिक काल-क्रम निर्धारित करवाया एवं सम्पूर्ण लघु शोध प्रबन्ध की जाँच करते हुए शोध में आई त्रुटियों को सुधारने में सहायता की। मैं विभाग के अन्य प्राध्यापक डॉ. विनय कुमार राव, डॉ. अभिरंजन कुमार, डॉ. ईश्वर परिड़ा के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करती हूँ जिन्होंने मुझे सहयोग देकर अनुग्रहित किया।

मैं इतिहास एवम् पुरातत्व विभाग के सभी छात्र-छात्राओं एवम् शोधकर्ताओं का आभार व्यक्त करती हूँ। मैं मेरे परिवार के सभी सदस्यों का हार्दिक आभार व्यक्त करती हूँ जिनके सहयोग के बिना शोध कार्य को पूर्ण करना संभव नहीं था। शोध-प्रबंध के दौरान परिवार के सभी सदस्यों ने मेरा मनोबल बनाये रखा। मैं मेरे पापा राकेश कुमार, मम्मी सविता यादव, भाई आशु राव व प्रांशु यादव, दादी सरस्वती देवी का हार्दिक आभार व्यक्त करती हूँ। इसके आलावा मैं मेरे दोस्त महेश कुमार का सहृदयता आभार व्यक्त करती हूँ जिसने सर्वेक्षण के दौरान मेरी हर संभव सहायता की।

स्वाति राव

चित्र-सूची

चित्र 1.1: झज्जर जिला

चित्र 1.2: साल्हावास खण्ड (जिला झज्जर)

चित्र: 2.1 साल्हावास खंड

चित्र: 2.2 झज्जर जिले में वार्षिक वर्षा का वितरण

चित्र: 2.3 झज्जर जिले में रबी और खरीफ की फसलें, 2008-09

चित्र: 2.4 हरियाणा राज्य में भूमिगत जल-स्तर

चित्र: 2.5 झज्जर जिले में पशुपालन एवम् मुर्गीपालन का वितरण

चित्र: 3.1 साल्हावास खंड के आरंभिक हड़प्पाकालीन,उत्तर हड़प्पाकालीन और पूर्व मध्यकालीन पुरास्थल

चित्र 4.1 साल्हावास खंड (झज्जर जिला) के आरंभिक हड़प्पाकालीन पुरास्थल

चित्र: 4.2 साल्हावास खंड के उत्तर हड़प्पाकालीन पुरास्थल

चित्र 4.3 साल्हावास खंड के पूर्व मध्यकालीन पुरास्थल

रेखाचित्र: 5.1 आरंभिक हड़प्पा कालीन मृदभांड

रेखाचित्र: 5.2 उत्तर हड़प्पाकालीन मृदभांड

रेखाचित्र: 5.3 पूर्व मध्यकालीन मृदभांड

रेखाचित्र: 5.4 पूर्व मध्यकालीन मृदभांड

रेखाचित्र: 5.5 पूर्व मध्यकालीन मृदभांड

चित्र: 6.1 झज्जर जिले में पुरास्थल

चित्र: 6.2 झज्जर जिले के आरंभिक हड़प्पाकालीन पुरास्थल

चित्र: 6.3 झज्जर जिले के विकसित हड़प्पाकालीन पुरास्थल

चित्र: 6.2 झज्जर जिले के उत्तर हड़प्पाकालीन पुरास्थल

चित्र: 6.2 झज्जर जिले के पूर्व मध्कालीन पुरास्थल

चित्र :1A साल्हावास खण्ड के पुरास्थल

चित्र: 1 आरंभिक हड़प्पाकालीन मृदभांड

चित्र: 2 उत्तर हड़प्पाकालीन मृदभांड

चित्र: 3 उत्तर हड़प्पाकालीन मृदभांड

चित्र: 4 पूर्व मध्यकालीन मृदभांड

चित्र: 5 पूर्व मध्यकालीन मृदभांड

चित्र: 6 पूर्व मध्यकालीन मृदभांड

चित्र: 7 पकी मिट्टी के पुरावशेष

चित्र : 8 कांचली एवं पकी मिट्टी की चूड़ियाँ

चित्र: 9 पत्थर के पुरावशेष

तालिका

तालिका: 2.1 झज्जर की औसत वार्षिक वर्षा

तालिका: 2.2 भूमिगत जल के सिंचाई के स्रोत

तालिका: 2.3 झज्जर जिले में वन वर्गीकरण

तालिका: 4.1 आरंभिक हड़प्पाकालीन, उत्तर हड़प्पाकालीन एवं पूर्व मध्यकालीन आवास योजना का वितरण

तालिका: 4.2 आरंभिक हड़प्पाकालीन संस्कृति के आवासीय आंकड़े

तालिका: 4.3 उत्तर हड़प्पाकालीन संस्कृति के आवासीय आंकड़े

तालिका: 4.4 पूर्व मध्यकालीन संस्कृति के आवासीय आंकड़े

तालिका: 4.5 आरंभिक हड़प्पाकालीन, उत्तर हड़प्पाकालीन संस्कृति तथा पूर्व मध्यकालीन संस्कृति के आवासों का रेतीले क्षेत्र में वितरण

तालिका: 4.6 आरंभिक हड़प्पाकालीन, उत्तर हड़प्पाकालीन एवं पूर्व मध्यकालीन संस्कृति के आवास का जलोढ़ मैदान में वितरण

तालिका: 4.7 पुरास्थलों के स्वरूप के आधार पर आवास का वितरण

तालिका: 4.8 आरंभिक हड़प्पाकाल, उत्तर हड़प्पाकाल एवं पूर्व मध्यकाल की जनसंख्या का वितरण

तालिका: 4.9 जनसंख्या आधारित आवास योजना का वितरण

अध्याय-1

परिचय

झज्जर हरियाणा राज्य के प्रमुख जिलों में से एक है। झज्जर जिले की स्थापना 15 जुलाई 1997 में हुई। इससे पूर्व यह रोहतक जिले का हिस्सा था। झज्जर जिला 28°21'31" उत्तरी अक्षांश से 28°50'19" दक्षिणी अक्षांश तथा 76°17'06" पश्चिमी देशांतर से 76°58'15" पूर्वी देशांतर के मध्य स्थित है। दिल्ली से यह 65 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। इसके उत्तर में रोहतक जिला तथा दक्षिण में रेवाड़ी और गुरुग्राम जिले स्थित हैं। इसी प्रकार पश्चिम में दादरी जिला तथा पूर्व में राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली की सीमाएं लगती हैं। झज्जर जिला 1834 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैला हुआ है। इसकी कुल जनसंख्या 958405 (जनगणना रिपोर्ट झज्जर 2011: 40) है। झज्जर जिले को पांच खंडों (साल्हावास, झज्जर, मातनहेल, बेरी तथा बहादुरगढ़) में बाँटा गया है और इसमें कुल 260 गांव हैं। बहादुरगढ़, झज्जर तथा बेरी इस जिले के प्रमुख नगर हैं। बहादुरगढ़ एक औद्योगिक नगर के रूप में प्रसिद्ध है तथा बेरी महाभारत कालीन भीमेश्वरीदेवी के मंदिर के लिए विख्यात है।

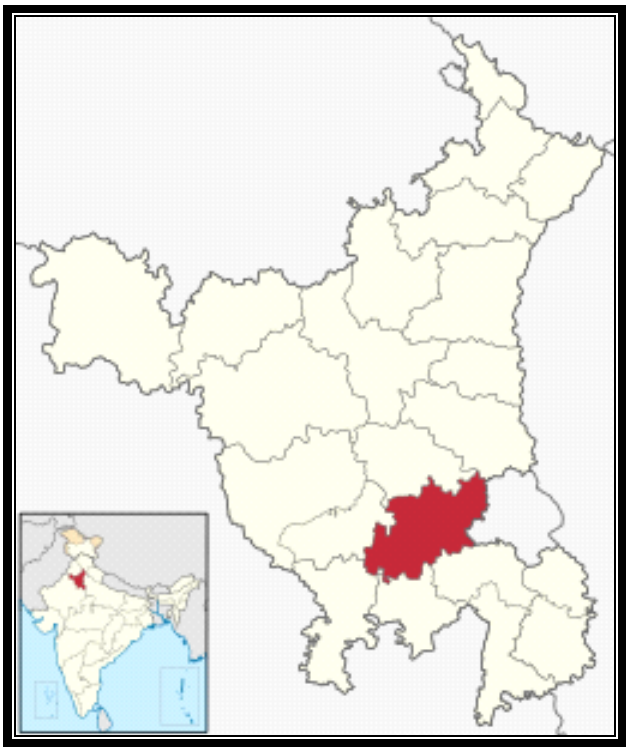

चित्र 1.1: झज्जर जिला

भौगोलिक दृष्टि से झज्जर जिला सिंधु-गंगा मैदान के उत्तर पूर्व में स्थित है। इसके पश्चिम में बांगर मैदान तथा दक्षिण में अरावली की पहाड़ियां स्थित हैं। जलोढ़ मैदानों का निर्माण प्रातिनूतन काल में विवर्तनिक उठानों के फलस्वरूप हुआ (सिंह 1988) है। भू-आकृति विज्ञान के अनुसार इन्हें तीन उप भागों में बांटा गया है- (1) उत्तर पूर्व उच्च मैदान (2) झज्जर निम्न भूमि (3) रेतीला मैदान। समुद्र तल से इसकी ऊंचाई 710 फीट है। इस क्षेत्र की कुल भूमि में से 3902.68 हेक्टेयर भूमि वन क्षेत्र से घिरी हुई है तथा कृषि योग्य भूमि 16,090 हेक्टेयर है। साहबी तथा कृष्णावती झज्जर की दो मौसमी नदियां हैं। साहबी इस क्षेत्र की मुख्य नदी है। झज्जर में मुख्यतः नहरों तथा कुओं से सिंचाई की जाती है। गेहूं, धान, जौ,बाजरा तथा सरसों आदि यहां की प्रमुख फसलें हैं। जिले की वार्षिक वर्षा 542 मिलीमीटर है तथा 80% वर्षा जून से सितंबर के बीच होती है (जनगणना रिपोर्ट झज्जर: 10)। वर्षा का वितरण पश्चिमी भाग की अपेक्षा पूर्वी भाग में अधिक है।

झज्जर की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के विषय में कहा जा सकता है कि यहां पर विभिन्न संस्कृतियों का दीर्घ काल तक निवास रहा। झज्जर में बादली क्षेत्र का सर्वप्रथम पुरातात्विक अन्वेषण का कार्य 1970 के आरंभ में सिलक राम ने किया (अशोक कुमार 1990-91: 7)। जिससे स्पष्ट हो गया कि यहां प्राचीन समय में विभिन्न संस्कृतियों के लोग निवास करते थे। खंडों के आधार पर किए गए सर्वेक्षण से स्पष्ट होता है कि यहां प्रथम बार निवास करने वाली संस्कृति आरंभिक हड़प्पा संस्कृति थी। झज्जर जिले के प्राक् हड़प्पाकालीन (आरंभिक हड़प्पाकालीन) पुरास्थलों की सांस्कृतिक समानता कालीबंगा-1 अथवा सोथी-सीसवाल संस्कृति से मेल खाती हैं (सूरजभान 1975: 120-125)। बादली के उत्खनन से आरंभिक हड़प्पाकाल की आरंभिक सीसवाल संस्कृति तथा विकसित हड़प्पा संस्कृति प्रकाश में आई (ठाकरान और अमर सिंह 2008: 167)। झज्जर जिले के विभिन्न खंडों में उत्तर हड़प्पाकालीन पुरास्थल भी प्रतिवेदित हैं (ढाका 1990-91, कटारिया 1989-90, अशोक कुमार 1990-91, रायसिंह कादियान 1987-88, राहड़ 1991-92)।

उत्तर हड़प्पाकालीन संस्कृति के पश्चयात यहाँ चित्रित धूसर संस्कृति प्रकाश में आई। बहादुरगढ़ खंड में राजीव कटारिया, बेरी खंड में रायसिंह कादियान, झज्जर खंड में जगदीश सिंह राहड़ और दक्षिणी साहबी नदी घाटी में राजेश कुमार द्वारा चित्रित धूसर संस्कृति के पुरास्थल प्रतिवेदित हैं। द्वितीय शताब्दी ईसा पूर्व से प्रथम शताब्दी ईसा पूर्व तक यौधेयों का शासन रहा। सुरहा, खेड़ी जाट, जहांगीरपुर आदि पुरास्थलों से कुषाण कालीन सांस्कृतिक अवशेष प्रतिवेदित हैं (अशोक कुमार 1990-91: 10-

12)। प्रथम-द्वितीय शताब्दी में यौधेय कुषाणों से पराजित हो गये और इस क्षेत्र पर कुषाणों का आधिपत्य हो गया। झज्जर में सुरहा, कबलाना, रायपुर आदि पुरास्थलों से कुषाण शासक हुविष्क और वासुदेव के सिक्के प्रतिवेदित हैं जो इस क्षेत्र में कुषाण साम्राज्य के शासन को प्रमाणित करते हैं। कुषाण शासकों ने उत्तर भारत की राजनीति में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। कनिष्क के शासनकाल में कुषाण साम्राज्य अपने चरमोत्कर्ष पर था। वासुदेव (145-176 ई.) के शासनकाल में कुषाणों की शक्ति क्षीण होती चली गई और इसी बीच यौधेय शक्तिशाली हो गए। महाभारत और वृहत्संहिता में यौधेयों को युद्ध प्रेमी गण कहा गया है। यौधेय एक गणतंत्र था तथा ये लड़ाकू थे। युद्ध में निपुण होने के कारण इनका नाम यौधेय पड़ा। अष्टाध्यायी में यौधेयों के संघ को आयुध जीवी संघ कहकर पुकारा है। यौधेयों का शासन काल हरियाणा में (150 ईसा पू. से 350 ई.) तक रहा और यौधेय गण के सिक्के ढ़ालने के सांचे बड़ी मात्रा में रोहतक में खोखराकोट टीले से मिले हैं (जिला गजेटियर रोहतक 1970: 20)। झज्जर जिले में यौधेय गण के सिक्कों का एक संग्रह (43 सिक्के) बिसाण गाँव से प्रतिवेदित हैं (मनमोहन कुमार 1991:79-98)। शक्तिशाली यौधेय गण ने उत्तर भारत तथा मध्य देश से कुषाणों को खदेड़ा और चौथी शताब्दी ई. के मध्य में यौधेयों की शक्ति कम हो गई। चौथी शताब्दी ई. के मध्य में यौधेय समुद्रगुप्त से पराजित हुए। समुद्रगुप्त के प्रयाग प्रशस्ति स्तंभ-लेख में वर्णन मिलता है कि यौधेयों ने समुद्रगुप्त की सार्वभौमिक सत्ता को स्वीकार कर लिया। बालादित्य ने 530 ई. में हूणों को पराजित किया तथा हूणों ने इस क्षेत्र के लोगों को सामाजिक एवं आर्थिक क्षति पहुंचाई। इसके पश्चात् स्थानीश्वर के पुष्यभूति शासकों के उदय के बाद इस क्षेत्र में शांति स्थापित हुई। सातवीं शताब्दी के आरंभ में यह क्षेत्र हर्षवर्धन के नियंत्रण में था (श्रीवास्तव 2005-06: 475)। हर्षवर्धन के दरबारी कवि बाणभट्ट और चीनी यात्री ह्वेनसांग ने इस क्षेत्र का वर्णन किया है। सातवीं शताब्दी के अंत तक कन्नौज के शासक यशोवर्मन ने इस क्षेत्र पर अपना आधिपत्य स्थापित कर लिया परंतु यशोवर्मन कश्मीरी शासक ललितादित्य मुक्तापिड़ से परास्त हो गया और यमुना से लेकर कालका तक का क्षेत्र कश्मीरी राजतंत्र के नियंत्रण में आ गया। ललितादित्य शासन को संभालने में असमर्थ रहा तथा प्रतिहार शासक वत्सराज ने इस क्षेत्र को अपने अधीन कर लिया किंतु वह भी इस क्षेत्र को लंबे समय तक इस पर नियंत्रण करने में असमर्थ रहा। प्रतिहार शासक वत्सराज राष्ट्रकूट शासक ध्रुव तथा पाल शासक धर्मपाल से पराजित हो गया। यह ऐतिहासिक सत्य है कि धर्मपाल ने कन्नौज में दरबार का आयोजन किया जिसमें श्रीकंठ जनपद के शासक भी विद्यमान थे जिससे प्रमाणित होता है कि इस क्षेत्र पर पाल शासक का आधिपत्य रहा। कुछ समय बाद ही वत्सराज के बेटे नागभट्ट द्वितीय ने धर्मपाल को पराजित

कर इस क्षेत्र पर फिर से कब्जा कर लिया। पेहवा अभिलेख (882 ई.) में वर्णित है कि सिरसा और दिल्ली पर महाराज भोजदेव का शासन था। इससे स्पष्ट है कि इस समय हरियाणा क्षेत्र प्रतिहार साम्राज्य का हिस्सा था। पेहवा अभिलेख से यह भी जानकारी मिलती है कि प्रतिहार शासक महिपाल के शासनकाल में तोमर उनके सामंत थे किंतु महिपाल की मृत्यु के पश्चात तोमर स्वतंत्र हो गए और उन्होंनें यहाँ पर अपना आधिपत्य स्थापित कर लिया।

रोहतक तथा उसके आसपास के क्षेत्र पर तोमर राजपूतों का आधिपत्य था जो ढ़िल्लिका (आधुनिक दिल्ली) से हरियाणा पर शासन करते थे (जिला गजेटियर रोहतक 1970: 1)। फेन्शिव के सेटेलमेंट रिपोर्ट जो कि स्थानीय अध्ययन पर आधारित थी। उसमें यह वर्णन मिलता है कि नवीं और दसवीं शताब्दी ई. में बड़ी संख्या में राजपूत तथा जाट जाति के लोग इस क्षेत्र में आकर बसे तथा उन्होंने निर्जन वनों में गांव बसाए तथा बसे हुए गांवो पर अधिकार कर लिया (जिला गजेटियर रोहतक 1970: 21)। जब गजनवी ने उत्तर-पश्चिम की ओर से आक्रमण किया उस समय हरियाणा पर दिल्ली से तोमर राजपूतों का शासन था। 1020 ई. में लाहौर पर गजनवी का अधिकार हो गया तथा इस समय तक दिल्ली के तोमरो और लाहौर के गजनवी ने एक दूसरे पर कोई आक्रमण नहीं किया एवं लगभग डेढ़ सौ वर्षों तक मुस्लिम और राजपूत दोनों का अस्तित्व साथ-साथ बना रहा। यह स्थिति तब परिवर्तित हुई जब लाहौर गौरी के हाथों में आ गया और दिल्ली के तोमरों को चाहमान शासकों ने पराजित कर दिया (जिला गजेटियर रोहतक 1970: 21-22)।

10 वीं शताब्दी में तोमरो का संघर्ष चाहमानों से हुआ और अजमेर के चाहमानों का शासन स्थापित हुआ। हालांकि उनके साम्राज्य के कुछ हिस्सों में तोमर चाहमानों के सामंत भी रहे। 12 वीं शताब्दी के अंत में चाहमान शासक पृथ्वीराज तृतीय दिल्ली का एक शक्तिशाली शासक था। चाहमान और गहडवालों की आपसी शत्रुता के कारण मुहम्मद गौरी को 1191 ई. में पृथ्वीराज तृतीय पर आक्रमण करने का अवसर मिल गया। तराईन की प्रथम लड़ाई में पृथ्वीराज तृतीय ने मुहम्मद गौरी को पराजित किया, किंतु 1192 ई. में मुहम्मद गौरी पृथ्वीराज को हराने के लिए आया और उसने हरियाणा के कुछ हिस्से पर आधिपत्य करते हुए महत्वपूर्ण कस्बे महम को नष्ट कर दिया (जिला गजेटियर रोहतक 1970: 22)। इस समय तक झज्जर दिल्ली के आसपास का निर्जन वन था और आस-पास के क्षेत्र एवं गांव युद्ध में तबाह हो गए (जनगणना रिपोर्ट झज्जर 2011: 7)। 1192 ई. में तराइन (करनाल जिले में स्थित आधुनिक तरावड़ी) के द्वितीय युद्ध में पृथ्वीराज तृतीय हार गया तथा इस पराजय ने

भारतीय भूमि में मुस्लिम सत्ता स्थापित होने का मार्ग प्रशस्त किया। इस पराजय के बाद मुहम्मद गौरी का दिल्ली पर पूर्ण नियंत्रण हो गया और इसी के साथ भारत में विदेशी शासन की स्थापना हुई। 1206 ई. में दिल्ली सल्तनत की स्थापना हुई। रोहतक और झज्जर दिल्ली के समीपवर्ती होने के कारण शासन के लिए होने वाले संघर्षों से प्रभावित होता रहा (जनगणना रिपोर्ट झज्जर 2011: 7)।

फिरोजशाह तुगलक (1351-88 ई.) ने सतलुज से झज्जर कस्बे तक एक नहर का निर्माण करवाया (जिला गज़ेटियर रोहतक 1970: 23)। मुगल काल के दौरान झज्जर के क्षेत्र में जाटों, सिक्खों, मराठों तथा राजपूतों के मध्यम निरंतर संघर्ष जारी रहा (जिला गज़ेटियर रोहतक 1970: 23)। मुगल काल के पतन के बाद भी इस क्षेत्र में राजनीतिक अस्थिरता बनी रही। फर्रूखसियर ने झज्जर क्षेत्र को अपने मंत्री रुक्खउद्दीन को सौंप दिया तथा वह भी इस क्षेत्र को संभालने में असमर्थ रहा और उसने इस क्षेत्र को फरुखनगर के नवाब को सौंप दिया (जनगणना रिपोर्ट झज्जर 2011: 7)। दूसरी तरफ इस समय तक मराठा, होल्कर और सिंधिया अपने-अपने राज्यों को विस्तारित करने में लगे हुए थे। इसी दौरान रघुनाथ राव और मल्हार राव होल्कर ने मराठा सेना की सहायता से नवाब पर आक्रमण कर दिया और भारी मात्रा में कर भी लगाए।

सूरजमल के नेतृत्व में जाटों ने फरुखनगर के नवाब को हराया और उसको इस क्षेत्र को छोड़ने के लिए बाध्य किया (जिला गजेटियर रोहतक 1970: 24)। कुछ समय बाद झज्जर वाल्टर रिंहर्ट के हाथों (बेगम समरू के पति) में आ गया। शाह आलम ने नजीब खान को मनोनीत किया और नजीब खान ने बेगम समरू को सरधाना, गोहाना, महम, रोहतक और खरखौदा सौंप दिया। 1785 से 1803 ई. के बीच रोहतक के भिन्न-भिन्न भागों में अलग-अलग शासक वर्ग रहे।

1780-81 ई. में जॉर्ज थॉमस भारत आया। वह कुछ समय तक बेगम समरू की सेवा में कार्यरत रहा तथा बाद में अप्पा कांडी राव ने उसे पुत्र के रूप में गोद ले लिया। अप्पा कांडी राव मराठा पेशवा महाराजा सिंधिया के नेतृत्व में सामंत नियुक्त थे। महाराजा सिंधिया की आज्ञा पाकर अप्पा कांडी राव ने झज्जर, बेरी, मांडोठी, पटौद का परगना जॉर्ज थॉमस को दे दिया तथा बदले में जरूरत पड़ने पर सिंधिया ने सैन्य सहायता की मांग की। जॉर्ज थॉमस से झज्जर को मुख्यालय बनाया और सुरक्षा की दृष्टि से जॉर्जगढ़ किले का निर्माण करवाया (आधुनिक जहाजगढ़ अथवा हुसैनगंज) का निर्माण करवाया (जिला गजेटियर रोहतक 1970: 25)। उसकी प्रशासनिक व्यवस्था से प्रभावित होकर मराठों ने उसे पानीपत, सोनीपत और करनाल का परगना दे दिया। अपनी बढ़ती हुई शक्ति को

देखकर जॉर्ज थॉमस की महत्वाकांक्षाएं भी और बढ़ गई। उसने हांसी पर अधिकार कर लिया और हांसी पर विजय प्राप्त करने के पश्चात उसने महम सहित 800 गांवों पर अधिकार जमा लिया। झज्जर में अपनी स्थिति सुदृढ़ करने के बाद वह संपूर्ण हरियाणा पर शासन करना चाहता था (जिला गजेटियर रोहतक 1910: 77)। इसके बाद उसने स्वयं को स्वतंत्र घोषित कर दिया तथा उसने मराठों, सिक्खों और राजपूतों के विरुद्ध अभियान छेड़ दिया। सिंधिया को थॉमस की प्रगति से ईर्ष्या हुई और उसने जनरल एम. पैरोल गंगा (दोआब के गवर्नर) को 1801 ई. में आक्रमण का आदेश दिया (जिला गजेटियर रोहतक 1970: 25)। मराठों ने जल्द ही उसके द्वारा अधिकृत क्षेत्र पर कब्जा कर लिया। जॉर्ज थॉमस जॉर्जगढ़ के किले को मुक्त कराना चाहता था किंतु अपने ही अधिकारियों के द्वारा धोखा दिए जाने के कारण उसे पराजय का सामना करना पड़ा और वापस हांसी लौटना पड़ा (जनगणना रिपोर्ट झज्जर 2011)। जॉर्ज थॉमस की पराजय के दो वर्ष के अंदर ही उत्तरी भारत में सिंधिया की बढ़ती हुई शक्तियों को देखते हुए ब्रिटिश सेना ने जनरल लेक के नेतृत्व में द्वितीय मराठा युद्ध लड़ा। इस युद्ध में मराठों के द्वारा अधिकृत क्षेत्र तथा यमुना के पश्चिमी क्षेत्र पर ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी का अधिकार हो गया। 1803 में मराठा और ईस्ट इंडिया कंपनी के मध्य सुरजी अर्जुन गांव की संधि हुई (जिला गजेटियर रोहतक 1970: 25)। जनरल लेक का मत था कि यमुनापार के बड़े क्षेत्र को ब्रिटिश कंपनी नहीं संभाल पाएगी इसलिए उसने दुजाना, झज्जर, बहादुरगढ़, पटौदी, जींद और कैथल रियासतों को मंत्रियों को सौंप दिया (जिला गजेटियर रोहतक 1970: 25)।

जनरल लेक ने बेरी का क्षेत्र दुजाना के नवाब को सौंप दिया तथा झज्जर की नवाबी निजामत अली खान को सौंप दी। बहादुरगढ़ का क्षेत्र नवाब निजामत अली खान के भाई नवाब इस्माइल खान को सौंप दिया तथा बाद में उसने झज्जर के प्रशासन की जिम्मेदारी अपने पुत्र फैज मुहम्मद खान को सौंप दी। फैज मुहम्मद ने झज्जर के विकास में रुचि दिखाई। उसने झज्जर में इमारतों का निर्माण करवाया। उसी समय झज्जर में नमक बनाने का काम शुरू करवाया गया जिससे बहुत से निर्जन गांव पुनः बसने लगे। उसने बादली में एक बांध का भी निर्माण करवाया। उसके पौत्र अब्दुर्रहमान खान ने जिहाँनारा गार्डन में एक महल का निर्माण करवाया। इसके अतिरिक्त उसने छुछकवास में एक भवन तथा तालाब का भी निर्माण करवाया (जिला गजेटियर रोहतक 1970: 26)।

1857 में रोहतक के कलेक्टर ने नवाब से आग्रह किया कि वह क्रांतिकारियों के दमन में उसकी सहायता करे। लेकिन सम्राट बहादुरशाह चाहता था कि वह क्रांतिकारियों की सहायता करे,

इसलिए नवाब को क्रांतिकारियों के समर्थन में सेना भेजनी पड़ी (जनगणना रिपोर्ट झज्जर 2011: 8)। ब्रिटिश सेना ने शीघ्र ही दिल्ली पर अधिकार कर लिया और नवाब को 18 अक्टूबर 1857 को ब्रिटिश जनरल लारेंस के समक्ष छुछकवास में आत्मसमर्पण करना पड़ा तत्पश्चात नवाब को लाल किले के सामने फांसी दे दी गई। सतलुज से लेकर यमुना तक के लोगों ने 1857 के विद्रोह के प्रति सहानुभूति दिखाई (जिला गजेटियर रोहतक 1970: 26)। रोहतक जिले में बड़ी संख्या में रांघड़ और जाट ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की रेजीमेंट में काम कर रहे थे वे ब्रिटिश मालिकों से पृथक हो गए (जिला गजेटियर रोहतक1970: 26)। इस बात को ध्यान में रखते हुए रोहतक के कलेक्टर जॉन एडम लोच ने अवकाश पर गए सभी सैनिकों को तत्काल जिला मुख्यालय बुलाया। झज्जर के नवाब ने कलेक्टर के आदेश पर घुड़सवार रोहतक भेज दिए। लोग अंग्रेजों के खिलाफ थे तथा इस समय सम्राट बहादुरशाह के दूत तफज्जुल खान सेना की एक टुकड़ी लेकर रोहतक आया। इससे कलेक्टर जॉन एडम लोच की मुश्किलें और भी बढ़ गई। वह उसे हराने में असमर्थ रहा तथा वह थानेदार भूरे खान के साथ गोहाना भाग गया (जिला गजेटियर रोहतक 1970: 27) तथा उसके साथ ही अन्य ब्रिटिश अधिकारी भी मैदान छोड़कर भाग खड़े हुए। सेना की टुकड़ी ने शासकीय रिकॉर्ड को नष्ट कर दिया तथा कस्बे के धनवान व्यक्तियों को लूटा। तफज्जुल खान ने सांपला पर भी आक्रमण कर दिया तथा यूरोपियन लोगों की इमारतें नष्ट कर दी (जिला गजेटियर रोहतक 1970: 27)। इस समय सभी कानून और आदेश लुप्त हो गए एवं रांघडों ने अपना झंडा फहरा दिया।

1857 के स्वतंत्रता संघर्ष के पश्चात झज्जर को प्रत्यक्ष रूप से ब्रिटिश शासन के अधिकार में ले लिया गया। उसके पश्चात सभी प्रांतों को पुनर्गठित किया गया। झज्जर को एक नया जिला बनाया गया और दादरी एवम् नारनौल क्षेत्र को इसमें सम्मिलित किया गया परंतु 1860 में इससे जिले का दर्जा छीन लिया गया तथा पुनः रोहतक जिले को एक तहसील बना दिया गया (जनगणना रिपोर्ट झज्जर 2011: 08)। 1857 के विद्रोह में सम्मिलित जागीरदारों को ब्रिटिश विरोधी गतिविधियों में भाग लेने के कारण दण्डित किया गया तथा इसी कारण रोहतक जिले (झज्जर) को किसी भी विकासशील कार्यक्रम में शामिल नहीं किया गया।

मार्च 1919 में महात्मा गांधी के आह्वान पर रोलेट एक्ट के खिलाफ प्रदर्शन करने हेतु रोहतक, सोनीपत, झज्जर तथा बहादुरगढ़ के लोगों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। 15 अगस्त 1947 को भारत

आजाद हुआ और झज्जर रोहतक जिले की एक तहसील बनकर रह गया। 15 जुलाई 1997 में झज्जर को पुनः जिला बना दिया गया।

1.2: शोध-समस्या

साल्हावास खंड के उत्तर में जलोढ़ मैदान, पश्चिम में थार मरुस्थल तथा दक्षिण एवं दक्षिण-पश्चिम में अरावली की पहाड़ियाँ स्थित हैं। सरस्वती-दृषद्वती नदियाँ उपजाऊ भूमि के लिए जानी जाती हैं। सरस्वती-दृषद्वती नदियों ने आघ-ऐतिहासिक लोगों के जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इन नदियों ने प्रथम कृषक समूह को कृषि योग्य भूमि एवं सिंचाई हेतु जल प्रदान किया। इस नदी घाटी में आघ-ऐतिहासिक पुरास्थल बड़ी संख्या में मिलते हैं किंतु दक्षिणी हरियाणा में विशेषकर अरावली की पहाड़ियों तथा अर्धशुष्क रेतीले क्षेत्र में भी प्रथम कृषक संस्कृति के पुरास्थल मिलते हैं। ये पुरास्थल छोटे एवं ग्रामीण स्वरूप के हैं किंतु प्रश्न यह उठता है कि आघ-ऐतिहासिक संस्कृति के लोग इस अर्धशुष्क जलवायु क्षेत्र में आकर क्यों बसे तथा इन पुरास्थलों का स्वरूप क्या रहा होगा? इस शोध-समस्या के समाधान हेतु साल्हावास खंड को चुना गया है क्योंकि यह क्षेत्र अरावली कि पहाड़ियों, जलोढ़ मैदान के दक्षिण में तथा रेतीले क्षेत्र में स्थित है।

1.3: अध्ययन-क्षेत्र

इस लधु-शोध ग्रंथ के लिए झज्जर जिले के साल्हावास खंड को अध्ययन के लिए चुना गया है। यह 28°28'51" उत्तरी अक्षांश से 28°31'8" दक्षिणी अक्षांश तथा 76°27'59" पश्चिमी देशांतर से 76°40'21" पूर्वी देशांतर के बीच स्थित है। साल्हावास खंड के पूर्व में झज्जर खंड, पश्चिम में मातनहेल खंड, उत्तर में झज्जर खंड तथा दक्षिण में रेवाड़ी जिला स्थित है। साल्हावास खंड झज्जर जिला मुख्यालय से 37 किलोमीटर की दूरी पर तथा राष्ट्रीय राजधानी से 72 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। राज्य राजमार्ग एस एच 22 इस खंड से होकर दिल्ली की ओर निकलता है। साल्हावास खंड की कुल जनसंख्या 81,061 है। जिसमें पुरुषों की जनसंख्या 42,206 तथा महिलाओं की जनसंख्या 37,855 है (जनगणना रिपोर्ट झज्जर 2011: 10)। साल्हावास खंड में कुल 38 गांव है। साल्हावास खंड 20066 हेक्टेयर क्षेत्र में फैला हुआ है तथा कुल भूमि में से 85.23% कृषि योग्य भूमि है। यह खंड नदियों द्वारा सिंचित मैदानी भाग तथा शुष्क एवं रेतीले टीलों के मध्य स्थित है। पश्चिमी यमुना नहर के जल से

सिंचाई की जाती है। जल निकासी के लिए नाला संख्या 8 का निर्माण किया गया है जो आगे जाकर भिंडावास झील में मिल जाता है।

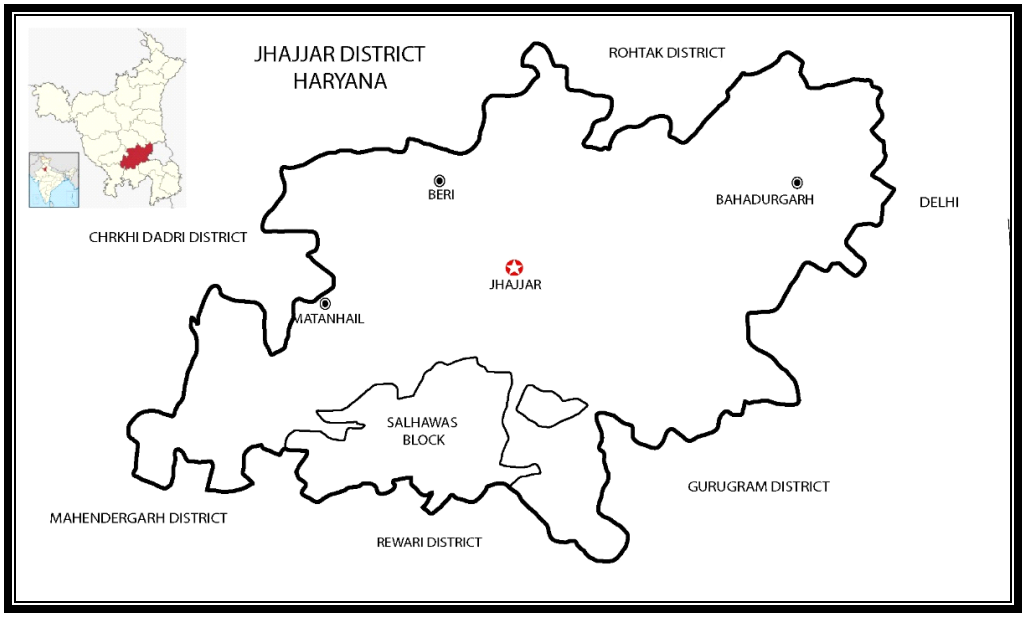

चित्र 2: साल्हावास खण्ड (जिला झज्जर)

1.4: पूर्ववर्ती शोध कार्य

साल्हावास खंड ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। सर्वप्रथम साल्हावास खंड का गाँव से गाँव का सर्वेक्षण महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय के एम.फिल.शोधार्थी सुरेंद्र सिंह ढाका ने 1990-91 में किया। उन्होंनें सर्वेक्षण के दौरान 20 पुरास्थल प्रतिवेदित किए, जिनमें से एक पुरास्थल उतर हड़प्पाकालीन, दो पुरास्थल ओ.सी.पी और अन्य सत्रह पुरास्थल पूर्व मध्यकालीन संस्कृति से सम्बन्ध रखते हैं (ढाका 1990-91: 13)। बी.बी.लाल ने बहादुरगढ़ में एक पुरास्थल का सर्वेक्षण किया तथा यहाँ से चित्रित धूसर संस्कृति के मृदभांड मिले। 1970 के आरंभ में सीलकराम ने बादली-1 और सुरहा दो पुरास्थल प्रतिवेदित किये (अशोक कुमार 1990-91: 7)। इस क्षेत्र में हरियाणा सरकार के पुरातत्व विभाग ने सर्वेक्षण कार्य किया जिससे आरंभिक ऐतिहासिक सामग्री तथा मोहनबाड़ी मंदिर के अवशेष प्रकाश में आए (IAR 1978-79)। पुरातात्विक शाखा दिल्ली सर्किल ने दक्षिणी हरियाणा के पुरातात्विक पुरास्थलों की खोज की (IAR 1981-82: 14-15)। झज्जर जिले के बहादुरगढ़, बेरी, झज्जर, मातनहेल और साल्हावास खंडों के सर्वेक्षण का कार्य महर्षि दयानंद

विश्वविद्यालय के एम.फिल शोधार्थियों ने किया गया। बेरी ब्लॉक का सर्वेक्षण एम.फिल शोधार्थी राय सिंह कादियान ने (1987-88) तथा बहादुरगढ़ ब्लॉक का सर्वेक्षण राजीव कटारिया ने (1989-90) ने किया। मातनहेल ब्लॉक का जय नारायण ने (1990-91), बादली क्षेत्र का सर्वेक्षण अशोक कुमार ने (1990-91) और झज्जर खंड का सर्वेक्षण जगदीश सिंह राहड़ (1991-92) ने किया। इन सर्वेक्षणों के अतिरिक्त इस क्षेत्र में बादली (ठाकरान और अमर सिंह 2009: 165-171 और 2010: 208-13) और लोहट का उत्खनन (ठाकरान और अमर सिंह: पर्सनल कम्युनिकेशन) दिल्ली विश्वविद्यालय तथा महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वाधान में किया गया।

1.5: शोध-उद्देश्य

शोध कार्य के उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

1. शोध कार्य के अंतर्गत आने वाले क्षेत्र के भू-दृश्य एवं पारिस्थितिकी का अध्ययन करना।

2. पुरातात्विक एवं ऐतिहासिक पुरास्थलों की संस्कृति के उद्भव, विकास के विषय में अध्ययन करना।

3. पुरातात्विक एवं ऐतिहासिक कालीन पुरास्थलों की आवास योजना का अध्ययन करना।

4. इस क्षेत्र की पुरातात्विक एवं ऐतिहासिक संस्कृतियों की क्षेत्रीय विभिन्नताओं का अध्ययन करना।

1.6: शोध-विधि

1.साल्हावास खंड के अंतर्गत आने वाले सभी गांवों का सर्वेक्षण किया। मृदभांड एवं अन्य सांस्कृतिक सामग्री का सुव्यवस्थित ढंग से अध्ययन किया।

2. पुरास्थलों के स्वरूप, एक पुरास्थल से दूसरे पुरास्थल का संबंध, क्षेत्रीय केंद्रों, शहरी केंद्रों, ग्रामीण एवं छोटे पुरास्थलों की पारिस्थितिकी का अध्ययन एवं विश्लेषण किया।

3. शोध से संबंधित सामग्री चित्रों, मानचित्रों, प्रकाशित एवं अप्रकाशित रिपोर्ट तथा लघु शोध-प्रबंध के संग्रह हेतु विभिन्न संग्रहालयों एवं विश्वविद्यालयों के पुस्तकालयों का दौरा किया।

4. उत्खनित पुरास्थलों बादली और लोहट से प्राप्त सांस्कृतिक सामग्री का तुलनात्मक अध्ययन किया।

1.7: अध्याय-विभाजन

अध्याय-1: परिचय

पहला अध्याय परिचय है जिसमें झज्जर की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, अध्ययन-क्षेत्र, पूर्ववर्ती शोध कार्य, शोध-उद्देश्य और शोध-विधि के विषय में वर्णन किया गया है।

अध्याय-2: भौगोलिक पृष्ठभूमि

दूसरे अध्याय में साल्हावास खंड की भौगोलिक पृष्ठभूमि पर प्रकाश डाला गया है। इसमें खंड की भूगर्भिक विशेषताओं, स्थलाकृति, जलवायु, नदियों, मृदा, कृषि-व्यवस्था, सिंचाई-व्यवस्था, पशुपालन और वनस्पति एवं जीव जंतुओं आदि के अध्ययन को सम्मिलित किया गया है।

अध्याय-3: सर्वेक्षण

तीसरे अध्याय में साल्हावास खंड के गांव के सर्वेक्षण के फलस्वरूप प्रकाश में आए प्रत्येक पुरास्थल के विषय में विस्तृत जानकारी दी गई है जिसमें पुरास्थलों की अवस्थिति, स्थिति और पुरास्थल की वर्तमान दशा का वर्णन भी किया गया है। इसके अतिरिक्त पुरास्थलों से प्राप्त सांस्कृतिक सामग्री के आधार पर पुरास्थलों का कालक्रम भी निर्धारित किया गया है।

अध्याय-4: आवास योजना

चौथा अध्याय पुरास्थलों की आवास-योजना का वर्णन करता है। इस अध्याय में आरंभिक हड़प्पाकाल, उत्तर हड़प्पाकाल तथा पूर्व मध्यकाल की संस्कृतियों की आवास योजना का अध्ययन पुरास्थलों के क्षेत्रफल, मृदा, स्वरूप तथा जनसंख्या के आधार पर किया गया है जिसमें प्रत्येक पुरास्थल के ज्ञात आकार, अज्ञात आकार, औसत आकार और अनुमानित आकार का वर्णन किया गया है।

अध्याय-5: सांस्कृतिक पुरावशेषों का अध्ययन

पांचवा अध्याय वर्तमान शोधकर्ता द्वारा सर्वेक्षित पुरास्थलों की सांस्कृतिक सामग्री का वर्णन करता है। इस अध्याय में आरंभिक हड़प्पाकालीन, उत्तर हड़प्पाकालीन तथा पूर्व मध्यकालीन पुरास्थलों की मृदभांड-परंपरा, पाषाण निर्मित वस्तुओं, कांचली मिट्टी से निर्मित वस्तुओं और पकी मिट्टी से निर्मित

वस्तुओं का वर्णन किया गया है। इसके अतिरिक्त दूसरे उत्खनित पुरास्थलों से प्राप्त सांस्कृतिक सामग्री के साथ तुलनात्मक अध्ययन भी किया गया है।

अध्याय-6: सांस्कृतिक परिवर्तन

छठा अध्याय पुरातात्विक सर्वेक्षण के फलस्वरूप प्रकाश में आई संस्कृतियों के उद्भव, विकास एवं पतन को दर्शाता है। इस अध्याय में प्रत्येक संस्कृति की प्रमुख विशेषताओं का वर्णन किया गया है जिसमें एक संस्कृति से दूसरे संस्कृति में आए परिवर्तनों, उनमें व्याप्त समानता एवं विकास को भी देखा जा सकता है।

अध्याय-7: सारांश और निष्कर्ष

अंतिम अध्याय निष्कर्ष से जुड़ा हुआ है। इसमें लघु शोध प्रबंध की शोध समस्या पर विशेष रूप से प्रकाश डालते हुए शोध कार्य के परिणाम पर चर्चा की गई है। इसके अतिरिक्त संदर्भ ग्रंथ सूची, परिशिष्ट और चित्र भी दिए गए हैं।

अध्याय-2

भौगोलिक पृष्ठभूमि

साल्हावास खंड झज्जर जिले के पांच खंडों में से एक है। साल्हावास खंड का नाम गांव साल्हावास से पड़ा है। यह झज्जर के दक्षिणी-पश्चिमी भाग में स्थित है। यह 28°28' उत्तरी अक्षांश से 28°31' दक्षिणी अक्षांश तथा 76°27' पश्चिमी देशांतर से 76°40' पूर्वी देशांतर के बीच स्थित है। साल्हावास खंड 1834 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैला हुआ है। इस खंड में कुल 38 गांव हैं। साल्हावास से राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली तथा झज्जर जिला मुख्यालय की क्रमशः दूरी 65 किलोमीटर तथा 30 किलोमीटर है। राष्ट्रीय राजमार्ग एन.एच.71 तथा राज्य राजमार्ग एन.एच.22 साल्हावास खंड से होकर गुजरते हैं। सड़क परिवहन की सुलभता के कारण यह खंड राज्य के दूसरे कस्बों तथा नगरों से जुड़ा हुआ है। साल्हावास खंड के पूर्व में झज्जर खंड, दक्षिण में रेवाड़ी जिला, उत्तर-पश्चिम में मातनहेल तथा उत्तर में झज्जर खंड स्थित है।

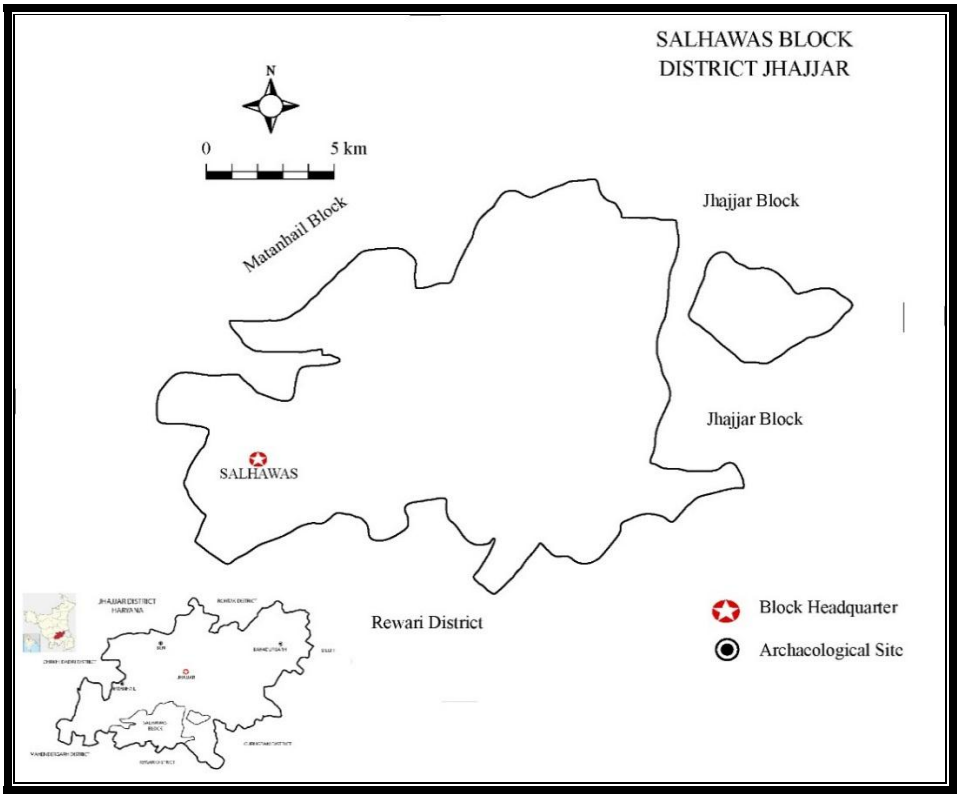

चित्र: 2.1 साल्हावास खंड

2.1: भूगर्भिक विशेषताएं

साल्हावास खंड जलोढ़ मैदान, अरावली की पहाड़ियों तथा थार मरुस्थल के मध्य स्थित है। साल्हावास के उत्तर में जलोढ़ मैदान स्थित हैं जिनका निर्माण सरस्वती एवं दृषद्वती नदियों के द्वारा बहाकर लायी गई उपजाऊ मिट्टी से हुआ है। इसके दक्षिण-पश्चिम में थार मरुस्थल के रेतीले टीले विद्यमान हैं और खंड के दक्षिण में अरावली की पहाड़ियां स्थित हैं। साल्हावास खंड का क्षेत्र जलोढ़ मैदान के अंतर्गत आता है जिसमें समतल भूमि से लेकर उबड़-खाबड़ रेतीले टीले भी शामिल हैं। इन मैदानों का निर्माण प्रातिनूतन काल तथा हाल ही के अवसादन की प्रक्रिया के फलस्वरुप हुआ है (आर.एल.सिंह 1995)। अध्ययन क्षेत्र में जलोढ़ मृदा की मोटाई अलग-अलग स्थानों पर भिन्न-भिन्न है। दक्षिण की ओर मृदा की मोटाई कम होती जाती है तथा दक्षिण में यह केवल एक महीन परत के रूप में ही दिखाई देती है। जलोढ़क की यह विषमता उसके निर्माण काल पर निर्भर करती है और इसी आधार पर इसे दो वर्गों में बांटा गया है- प्राचीन जलोढ़ और नवीन जलोढ़। चतुर्थक काल में निर्मित मृदा जिसे प्राचीन जलोढ़ भी कहा जाता है उसका निर्माण चिकनी मिट्टी, बजरी, रेत, रेतीली एवम् चिकनी गाद और कंकड़ के समानुपातिक मिश्रण से हुआ है। साल्हावास खंड का पश्चिमी तथा दक्षिणी पश्चिमी भाग का निर्माण हवा चलने, मोटे कणों के जमाव से और भूरे रंग के रेत के जमा होने से हुआ है (आर.एल.सिंह 1995: 87-89)। यह रेतीला क्षेत्र है जिसे बांगर क्षेत्र भी कहते हैं। प्राचीन जलोढ़ क्षेत्र को बांगर भी कहा जाता है जिसका निर्माण मध्य अथवा उच्च प्रातिनूतन काल में हुआ है। नवीन जलोढ़ को खादर कहा जाता है जिसका निर्माण निम्न क्षेत्रों में नदियों द्वारा बहाकर लाई गई मिट्टी के फलस्वरुप उच्च प्रातिनूतन काल में हुआ है (खुल्लर 2014: 49)। साल्हावास का उत्तर-पूर्वी भाग खादर मैदान के अंतर्गत आता है जिसका निर्माण यमुना द्वारा बहाकर लाई गई अवसादों के फलस्वरूप हुआ है। यह चिकनी दोमट मिट्टी है।खंड के उत्तर-पूर्व तथा दक्षिण में अरावली की पहाड़ियां स्थित हैं जिनका निर्माण निम्न कडप्पा युग में हुआ। दिल्ली अरावली तंत्र की पहाड़ियां दिल्ली से राजस्थान के अलवर के दक्षिण तक फैली हुई है (हुसैन 2015: 1.6-1.7)। दिल्ली सुपर ग्रुप के 95% भाग का निर्माण चतुर्थक काल मे हुआ है। इनका निर्माण मध्य से नव प्रोटेर्जीक चट्टानों से हुआ है ये पहाड़ियां हरियाणा राज्य के दक्षिण एवम् दक्षिणी-पश्चिमी भाग में स्थित हैं। जबकि उत्तर-पूर्वी भाग में स्थित पहाड़ियां तृतीयक काल में निर्मित हैं। दिल्ली सुपर ग्रुप के अंतर्गत अवसादी चट्टानों को अलवर व अजबगढ़ दो वर्गों (जी.एस.आई.रिपोर्ट 2017: 4-5) में बाँटा गया है- अलवर ग्रुप को बयाल-पचनौता

जमाव दर्शाता है तथा ये पहाड़ियाँ अच्छी तरह से विकसित हैं बयाल-पचनौता, माधवगढ़, खुडाना आदि दक्षिणी-पश्चिमी भाग में स्थित हैं। दिल्ली के पास अजबगढ़ वर्ग की चट्टाने हैं। ये पहाड़ियाँ उत्तर-पूर्व से दक्षिण-पश्चिम की ओर विस्तृत हैं। अरावली की पहाड़ियों में शेल, क्वार्टजाइट, क्वार्ट्ज, स्लेट,अभ्रक, तांबा, निकल, कोबाल्ट,मैंगनीज अयस्क, लौह-अयस्क, मार्बल, जैस्पर, चूना पत्थर आदि खनिज मिलते हैं।

2.2: स्थलाकृति

साल्हावास खंड ही नहीं अपितु संपूर्ण हरियाणा सिंधु-गंगा जल विभाजक अथवा पंजाब मैदान के अंतर्गत आता है। इन मैदानों का निर्माण हिमालय क्षेत्र तथा प्रायद्वीप के बीच गहरे गड्ढे के भराव के फल स्वरुप हुआ है (खुल्लर 2014: 74)। इन दोनों भू-भागों से नदियां निकलती थी। इन नदियों द्वारा बहाकर लाए गए अवसादों से इन जलोढ़ मैदानों का निर्माण हुआ है। भूगर्भ विज्ञान के अनुसार प्रातिनूतन काल से लेकर नूतनकाल अथवा हाल ही के जमाव का निर्माण चिकनी मिट्टी, रेत, गाद व कंकड़ के अलग-अलग अनुपात में मिश्रण के फलस्वरूप हुआ है। साल्हावास खंड का संपूर्ण क्षेत्र समतल मैदानी भाग नहीं है। प्रादेशिक भूगोल के आधार पर देखा जाए तो स्थलाकृतियों में तीन प्रकार की विविधताएं दृष्टिगोचर होती हैं (जिला गज़ेटियर, रोहतक 1970: 4)। साल्हावास खंड का उत्तर-पश्चिमी भाग मैदानी है। अधिकतर मैदानी भाग में दक्षिण तथा पूर्व की ओर ढ़लान है। पश्चिमी एवं दक्षिण-पश्चिमी भाग रेतीला है जिसमें भिन्न-भिन्न आकार-प्रकार के उबड़-खाबड़ रेतीले टीले हैं। इसके उत्तर-पूर्व की ओर यमुना द्वारा निर्मित खादर के मैदान स्थित हैं। साल्हावास खंड को तीन भागों (खादर, उच्च भूमि मैदान और रेतीला क्षेत्र) में बांटा गया है।

वर्षा के समय यमुना तथा उसकी सहायक नदियों द्वारा बहाकर लाई गई नई जलोढ़ मिट्टी का जमाव होता रहता है जिसे खादर कहा जाता है। बाढ़ के दौरान प्रत्येक वर्ष जलोढ़ मृदा की एक नई परत बनती रहती है। यमुना नदी के किनारे 2 से लेकर 4 मील तक खादर मैदान स्थित हैं (जिला गज़ेटियर रोहतक 1970: 5)। कुछ रेतीले टीलों को छोड़कर खादर के मैदान समतल निम्न भूमि से युक्त हैं। यह उच्च भूमि मैदान की अपेक्षा 20 से 30 फीट कम ऊंचे हैं तथा खादर के दक्षिणी भाग की समुद्र तल से ऊंचाई 700 फुट तक है।

साल्हावास खंड का उत्तर-पश्चिमी भाग बांगर या उच्च भूमि क्षेत्र के अंतर्गत आता है। बांगर मैदानों के प्राचीन जलोढ़ का निर्माण मध्य अथवा उच्च प्रातिनूतन में हुआ है (खुल्लर 2014: 75-76)। इस क्षेत्र में उत्तर-पूर्व से दक्षिण-पश्चिम की ओर ढ़लान है। यह ढ़लान 0.48 मीटर प्रति किलोमीटर की दर से बढ़ती जाती है (डी.डी.एम.पी., झज्जर 2017: 1)। मैदान के उत्तरी भाग की समुद्र तल से ऊंचाई 760 फुट है तथा दक्षिण भाग की समुद्र तल से ऊंचाई 710 फुट तक हो जाती है। इसके दक्षिण भाग की समुद्र तल से ऊँचाई कम होने के कारण कई बार अधिक वर्षा के कारण जल निकासी की समस्या के फलस्वरूप भारी क्षति का सामना करना पड़ता है।

साल्हावास खंड का दक्षिण तथा दक्षिणी-पश्चिमी भाग रेतीला है। भिन्न-भिन्न ऊंचाई वाले उबड़ खाबड़ रेतीले टीले इस क्षेत्र की मुख्य विशेषता है। सामान्यतः समतल भूमि से इन टीलों की ऊंचाई 3 मीटर से 6 मीटर तक है (ढाका 1990-91: 1)। अन्य दो स्थलाकृतियों जिनमें दक्षिण की ओर ढ़लान है यह उन क्षेत्रों से भिन्न है। इस क्षेत्र की औसतन समुद्र तल से ऊंचाई 800 फुट (243 मी.) है तथा कहीं-कहीं पर यह ऊंचाई 905 फुट (276 मी.) तक पहुंच जाती है (डी.डी.एम.पी.,झज्जर 2017: 1)। रेतीले टीलों का निर्माण लंबे समय तक तेज एवं शुष्क हवाओं, आंधी-तूफान एवम् रेत की परतों के जमाव के परिणामस्वरूप हुआ है।

2.3: जलवायु

साल्हावास खंड उष्णकटिबंधीय महाद्वपीय मानसून जलवायु क्षेत्र में स्थित है। इस क्षेत्र में सामान्यत: गर्मियां अधिक गर्म तथा सर्दियों में अधिक सर्दी पड़ती है। मानसून के दौरान क्षेत्र में वर्षा होती है। वर्ष के अधिकतर महीनों में शुष्क हवाएं चलती हैं। गर्मी की ऋतु में तेज हवाएं चलती हैं तथा शरद् ऋतु में घना कोहरा छा जाता है। वर्ष में कुल चार ऋतुएं होती हैं। अप्रैल से जून माह तक गर्मी की ऋतु होती है जो दक्षिणी पश्चिमी मानसून आने तक निरंतर बनी रहती है। सामान्यतः वर्षा ऋतु का आगमन 25 जून से 15 जुलाई के बीच होता है लेकिन वर्षा के बाद कुछ दिनों के लिए गर्मी कम हो जाती है। उसके पश्चात् फिर से तापमान बढ़ने लगता है। अंततः वर्षा ऋतु का पूर्णत: आगमन 20 सितंबर से 15 अक्तूबर के बीच होता है। वर्षा ऋतु के दौरान रातें सुहावनी हो जाती हैं, लेकिन दिन अभी भी गर्म होते है। अक्तूबर से नवंबर माह का समय वर्षा ऋतु तथा शीत ऋतु के बीच का समय होता है। शीत ऋतु नवंबर के अंत से लेकर मार्च माह तक होती है। दिसंबर तथा जनवरी माह में घना कोहरा छा जाता है। पश्चिमी विक्षोभ के कारण शीत ऋतु में चक्रवात का आना सामान्य बात है।

इस क्षेत्र का तापमान गर्मियों में अधिक गर्म तथा सर्दियों में ठंडा होता है। मार्च माह में तापमान तेजी से बढ़ने लगता है। मई और जून वर्ष के सबसे गर्म माह हैं। अप्रैल माह में पश्चिमी गर्म हवाएं चलने लगती हैं जिन्हें लू कहा जाता है और जिससे तापमान में पहले की अपेक्षा वृद्धि होने लगती है। मई और जून माह में तापमान 44.2 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच जाता है तथा अधिकतम उच्चतम तापमान 11 जून 1972 को झज्जर के समीपवर्ती जिला रोहतक में 46.6 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया था। जनवरी माह सबसे अधिक ठंडा होता है। जिसमें दिन का अधिकतम औसत तापमान 21.2 डिग्री सेल्सियस तथा न्यूनतम तापमान 6.4 डिग्री सेल्सियस होता है। शीत ऋतु में पश्चिमी विक्षोभ के फलस्वरुप ठंडी पवनों का आघात होता रहता है जिससे तापमान में गिरावट आ जाती है और न्यूनतम तापमान 2.1 डिग्री सेल्सियस से 3.1 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच जाता है। न्यूनतम तापमान झज्जर के सीमावर्ती जिला रोहतक में 30 दिसंबर 1973 को 0.2 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया है (जनगणना रिपोर्ट, झज्जर 2011: 10)।कभी-कभी रात के समय तापमान हिमांक से भी नीचे पहुंच जाता है और पाला पड़ने लगता है।

इस क्षेत्र में वर्षा का वितरण असमान है। यह आकृतियों की बनावट, पर्वत अथवा पहाड़ी से दूरी तथा थार मरुस्थल से किसी स्थान की दूरी आदि पर निर्भर करती है। सामान्यतः 70 से 80% तक वर्षा मानसून के जुलाई से सितंबर माह के बीच होती है। वर्षा ऋतु के दौरान जून से सितंबर माह के मध्य औसत वार्षिक वर्षा (2005-2009) के मध्य 542.5 मिलीमीटर दर्ज की गई है (जनगणना रिपोर्ट, झज्जर 2011: 10)। दिसंबर से फरवरी माह के मध्य भी वर्षा होती है। अप्रैल से जून माह के मध्य आंधी-तूफान के साथ भारी वर्षा होती है तथा कभी- कभी वर्षा के साथ-साथ ओलावृष्टि भी होती है। वर्ष भर में औसत वार्षिक वर्षा लगभग 29 दिन होती है। झज्जर के सीमावर्ती रोहतक जिले में 30 जून 1981 को 24 घंटे में भारी वर्षा 298 मिलीमीटर दर्ज की गई थी।

तालिका: 2.1 झज्जर की औसत वार्षिक वर्षा

वर्षा	औसत (मि.मी.)
दक्षिण-पश्चिमी मानसून (जून-सितंबर)	502.8
उत्तर-पूर्वी मानसून (अक्तूबर-दिसंबर)	22.9
शीत ऋतु (जनवरी-मार्च)	38.5
ग्रीष्म ऋतु (अप्रैल-मई)	27.7
कुल वार्षिक वर्षा	591.9

स्रोत:(कृषि आपदाप्रबंधन, झज्जर)

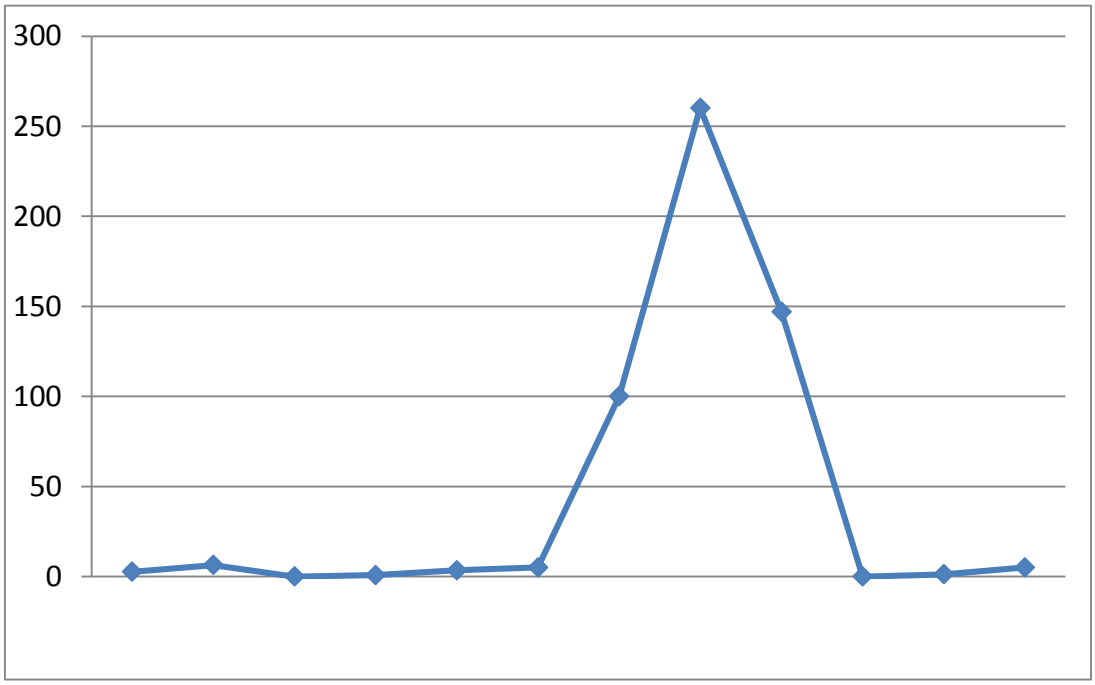

चित्र: 2.2 झज्जर जिले में वार्षिक वर्षा का वितरण

सामान्यता वर्ष भर हल्की हवाएं चलती हैं परंतु गर्मी ऋतु के अंत में तथा मानसून के दौरान हवाएं तेज चलने लगती हैं। मानसून के दौरान आकाश में बादल छा जाते हैं लेकिन वर्ष भर लगभग आकाश साफ या कम बादल दिखाई देते हैं। वर्षा ऋतु के दौरान पूर्वी तथा दक्षिणी-पूर्वी हवाएं चलने लगती हैं जबकि साल भर पश्चिमी तथा उत्तर पश्चिमी हवाएं चलती हैं। वर्ष भर लगभग शुष्क हवाएं चलती हैं। मानसून के दौरान सापेक्षिक आर्द्रता अधिक होती है जबकि गर्मी की ऋतु में आर्द्रता कम होती है। गर्मियों में दोपहर के समय वातावरण में 28% आर्द्रता होती है। अतः मार्च से जून माह के बीच तापमान में वृद्धि एवं तेज हवाएं चलने के कारण आर्द्रता कम होने लगती है।

2.4: नदियां

साल्हावास खंड की दो प्रमुख नदियां साहबी और कृष्णावती हैं। ये दोनों नदियां साल्हावास खंड के दक्षिण पूर्वी भाग से होकर गुजरती हैं। इन नदियों की छोटी बड़ी धाराएं मिलकर बड़ी मात्रा में जल एकत्रित करती हैं तथा पानी नजफगढ़ झील में जा गिरता है। इन नदियों के अतिरिक्त एक नाला भी है जिसे नाला संख्या 8 के नाम से जाना जाता है। यह नाला खंड के उत्तर में कनवा गांव से प्रवेश करता है और भिंडावास झील तक पहुंचने के बाद पानी अन्य नाले के माध्यम से नजफगढ़ झील तक जा पहुंचता है।

साहबी नदी जयपुर से लगभग 70 मील उत्तर में राजस्थान के अलवर जिले में मनोहरपुर और अजीतगढ़ के समीप मेवात की पहाड़ियों से निकलती है। सीकर जिले में सैवार की पहाड़ियों से होती हुई बहुत सारे नालों से पानी एकत्रित कर रेतीले मैदान में बहती है। सोतानाला साहबी की एक प्रमुख सहायक नदी है जो चिपलता से निकलती है और जलालपुर गांव में यह साहबी नदी में मिल जाती है (नेगी और रेड्डी 1983: 59-62)। साहबी के दो अन्य सहायक नाले बानगंगा और अड्डा नाला है। साहबी नदी को दो भागों में बांटा जा सकता है-(1) उत्तरी साहबी नदी (2) दक्षिणी साहबी नदी। उत्तरी साहबी नदी जो राजस्थान के उत्तर-पूर्वी भाग तथा हरियाणा के दक्षिणी जिलों में बहती है। यह 25 वर्ग किलोमीटर की दूरी तय करती है। दक्षिणी साहबी नदी हरियाणा के झज्जर जिले तथा दिल्ली की दक्षिणी-पश्चिमी सीमा में बहती है। यह 24 वर्ग किलोमीटर की दूरी तय करती है। इसकी समुद्र तल से ऊंचाई 222 मीटर है। साहबी नदी अलवर तथा पाटन तक बहते-बहते काफी बड़ी नदी बन जाती है। सैकड़ों नदी नाले इसमें मिल जाते हैं। यह नदी नीमराणा और शाहजहांपुर के पास अलवर को छोड़कर कोटकासिम के ऊपर से बहती हुई रेवाड़ी जिले में प्रवेश करती है। यह खटावली, जटौली, करौला,

लोहारी आदि गांव से होकर झज्जर में प्रवेश करती है। इसकी एक धारा जटौली से उत्तर पश्चिम की ओर बहती हुई साल्हावास खंड के गांव कासनी से होकर गुजरती है। यहीं पर कृष्णावती नदी साहबी में मिलती है। इसके बाद यह नजफगढ़ झील में जा मिलती है। दिल्ली में वजीरपुर बांध के नजदीक यह यमुना नदी में मिल जाती है (अग्रवाल 1984: 160)।

कृष्णावती नदी को कसावती अथवा कंसावती के नाम से भी जाना जाता है। यह नदी राजस्थान के सीकर जिले में तोरावती क्षेत्र में नीम का थाना के 5 मील उत्तर पूर्व की ओर से निकलती है। नारनौल से 25 किलोमीटर दक्षिण में नांगल चौधरी के समीप हरियाणा में प्रवेश करती है। यह नदी उत्तर तथा उत्तर-पश्चिम की ओर बहती हुई नारनौल के 1 किलोमीटर पूर्व में नीमराना की सीमा के साथ-साथ उत्तर-पूर्व की ओर बहने लगती है तथा इसका पश्चिमी भाग रेवाड़ी जिले की सीमा को स्पर्श करता है। कोसली गांव के नीचे से बहते हुए 96 किलोमीटर की दूरी तय कर यह झज्जर जिले में प्रवेश करती है। बसंत ऋतु के दौरान उगने वाली समृद्ध फसलों से इसके नदी तल को आसानी से पहचाना जा सकता है। झज्जर जिले में यह नदी कोसली, गुरियानी (रेवाड़ी) से होती हुई तुम्बाहेरी, छप्पार (साल्हावास खंड) तथा गांव कासनी के समीप साहबी नदी में मिल जाती है।

2.5: मृदा

साल्हावास खंड जलोढ़ मृदा वर्ग के अंतर्गत आता है जो कि सिंधु-गंगा मैदान की प्रमुख मृदा है। इस मृदा का निर्माण नदियों के द्वारा बहा कर लाए गए अवसादों के जमाव के फलस्वरुप हुआ है।इस मृदा का रंग हल्का सलेटी से गहरा सलेटी तक है। मृदा का गठन रेतीली तलछठ चिकनी बलुई मिट्टी है (हुसैन 2015: 6.6) । इस मृदा में नाइट्रोजन की मात्रा कम तथा पोटाश, फास्फोरिक अम्ल तथाक्षार की मात्रा पर्याप्त है। लौह ऑक्साइड एवं चूना की मात्रा अधिक है (खुल्लर 2014: 199-200)। जलोढ़ मृदा को दो भागों में बांटा गया है- खादर मृदा और बांगर मृदा।

खादर मृदा को नवीन जलोढ़ मृदा के नाम से भी जाना जाता है यह मृदा साल्हावास खण्ड के निम्न भूमि क्षेत्र में पाई जाती है जिसका निर्माण प्रत्येक वर्ष बाढ़ के दौरान नदियों द्वारा बहा कर लाए गए जमावों से होता है। यह मृदा खंड के पूर्वी भाग में मिलती है। यह मृदा हल्की भूरी, रेतीली चिकनी,

चिकनी बलुई तथा छार युक्त एवं कैल्शियम कार्बोनेट से युक्त है। सूखे क्षेत्र में इसमें क्षार की मात्रा बढ़ जाती है। वहां पर स्थानीय भाषा में इसे रेह, कालर तथा थूर के नाम से भी जाना जाता है।

बांगर मृदा का निर्माण उच्च प्रातिनूतन काल में जलोढ़ जमावों से हुआ है। यह मृदा साल्हावास के पश्चिम एवं दक्षिणी-पश्चिमी भाग में मिलती है। यह मृदा चिकनी होती है तथा सामान्यत: इसका रंग गहरा काला होता है। इस मृदा की सतह के कुछ मीटर नीचे चूना पत्थर या कंकड़ मिलते हैं। इस मृदा का गठन दोमट मिट्टी से चिकनी दोमट मिट्टी है।इस मृदा में पानी को अवशोषित करने की क्षमता अधिक है। इस मृदा में फास्फोरिक अम्ल, चूना और जैविक कार्बनिक अधिक मात्रा में तथा पोटाश की कमी पाई जाती है (हुसैन 2015: 6.7)।यह मृदा चावल, गन्ना, दालें, जौ, धान, सरसों, बरसम, फल और सब्जियों के लिए उपयुक्त है। यदि उपयुक्त ढंग से सिंचाई की जाए तो प्राचीन जलोढ़ मृदा की उत्पादन क्षमता अधिक है।

मृदा को उसके गठन के आधार पर पांच भागों में बाँटा जा सकता है- (1) रेतीली मिट्टी (टीबा) (2) रेतीली दोमट मिट्टी (भूर) (3) दोमट मिट्टी (रोसली) (4) चिकनी बलुई मिट्टी (करड़ी) (5) चिकनी मिट्टी (डाकर) (जिला गजेटियर रोहतक 1970:71)। साल्हावास खंड की मृदा को उसकी पी.एच्. वेल्यू के आधार पर 3 भागों में बाँटा जा सकता है- (1) सामान्य मृदा (पी.एच्. 7 से 8) (2) खारी मृदा (पी.एच. वेल्यू 8 से 8.5) (3) क्षारीय मृदा (पी.एच.वेल्यू 8.5 से 10)।

2.6: कृषि एवं सिंचाई व्यवस्था

कृषि यहाँ के लोगों के जीवन यापन का प्रमुख साधन है। झज्जर में 2001 की जनगणना के अनुसार कृषि कार्य में लगे मजदूरों की संख्या 51.2% थी जबकि 2011 में यह घटकर 42.9% ही रह गई। राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में स्थित औद्योगिक इकाइयों का इस क्षेत्र में धीरे-धीरे प्रसार हो रहा है खंड का लगभग संपूर्ण क्षेत्र कृषि योग्य है। कृषि-वर्ष प्राय: मध्य जून से आरंभ होता है जिसे दो फसली भागों में बांटा जा सकता है- खरीफ और रबी। रबी की फसलों को स्थानीय भाषा मे साढ़ी और खरीफ की फसल को सावणी के नाम से जाना जाता है। ये दोनों ही प्रकार की फसलें सिंचाई पर निर्भर करती हैं। सावणी अथवा खरीफ की फसल मध्य जून से मध्य अक्टूबर- नवंबर तक ली जाती है। धान, ज्वार, बाजरा, गन्ना आदि प्रमुख खरीफ फसलें हैं। बाजरा और ज्वार की फसलें क्रमशः 27300 तथा

21200 हेक्टेयर क्षेत्र में उगाई जाती हैं। 2008-09 के दौरान धान 33900 तथा गन्ना 1400 हेक्टेयर क्षेत्र में उगाया गया था। अन्य खरीफ फसलें कपास, मक्का, गंवार, मोठ, मूंग आदि हैं। साढ़ी या रबी की फसलें सर्दी के मौसम में बोई जाती हैं जो साधारणत:नवंबर-दिसंबर में बोकर मार्च-अप्रैल में काट ली जाती हैं। गेहूं, चना, सरसों, रबी की प्रमुख फसलें हैं। इसके अतिरिक्त धान, तोरई, अलसी, तिलहन व दालें भी उगाई जाती हैं। 2008-09 में गेहूं, चना क्रमशः 93700 तथा 700हेक्टेयर एवम् सरसों 35300 हेक्टेयर क्षेत्र में उगाई गई थी। जौ भी रबी की फसल है यह 3700 हेक्टेयर क्षेत्र में उगाई गई थी। इसके अतिरिक्त कुछ फसलें ऐसी भी हैं जो दोनों वर्गों के अंतर्गत नहीं आती इन्हें जाईद फसल कहा जाता है तोरई की फसल जाईद सावणी तथा तंबाकू, तरबूज, हरी घास की फसलें जाईद साढ़ी के रूप में ली जाती हैं। अनाज एवं दालें 189100 हेक्टेयर क्षेत्र में उगाई जाती हैं जिनका कुल उत्पादन

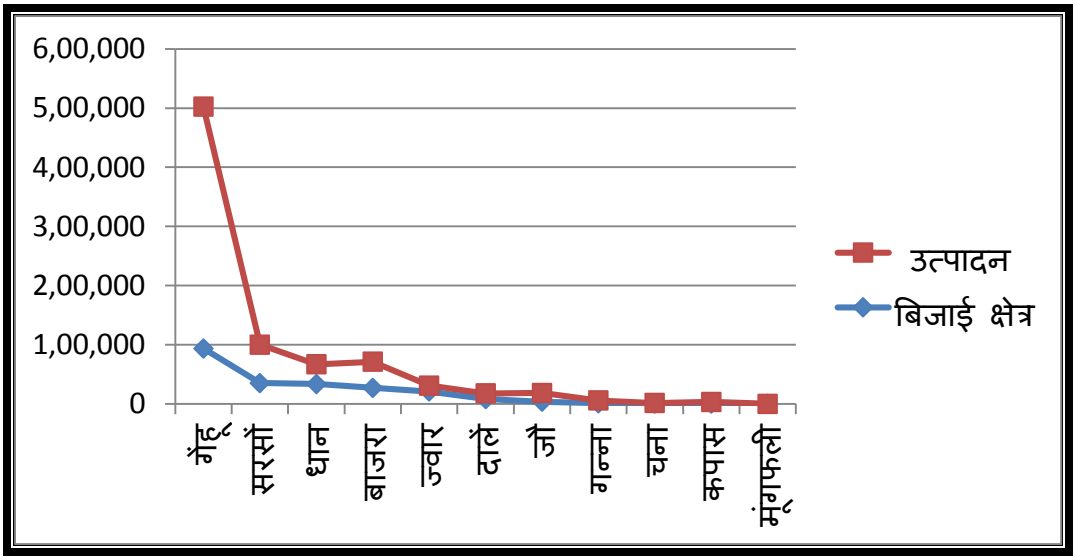

चित्र: 2.3 झज्जर जिले में रबी और खरीफ की फसलें, 2008-09

521,400 टन है। सरसों का उत्पादन 65000 टन है। इसके अतिरिक्त फल एवं सब्जियां 209 हेक्टेयर क्षेत्र में उगाई जाती हैं। एक हेक्टेयर क्षेत्र में आलू एवं 876 हेक्टेयर क्षेत्र में अन्य सब्जियां उगाई जाती हैं।

साल्हावास खंड के कृषि-प्रधान होने के कारण समस्त क्षेत्र में जल सिंचन की आवश्यकता पड़ती है। इस खंड की सिंचाई के मुख्य स्रोत या साधन नहरे एवं कुएं हैं। साल्हावास खंड में वर्षा मौसमी है जिसने इस क्षेत्र में कृत्रिम सिंचाई को आवश्यक बना दिया है। झज्जर जिले में 79000

हेक्टेयर क्षेत्र की सिंचाई नहरों तथा 42000 हेक्टेयर क्षेत्र की सिंचाई कुओं के पानी से की जाती है (जनगणना रिपोर्ट, झज्जर 2011: 16)। कुल बिजाई क्षेत्र से में से 74.02%क्षेत्र की सिंचाई की जाती है। 2009-10 में झज्जर जिले में डीजल पंप सेट तथा बिजली पंप सेट क्रमशः 22,288 तथा 7,024 थे जो रेतीले क्षेत्र में भूमिगत मीठे जल से सिंचाई के लिए उपयुक्त हैं। वर्तमान समय में जिले में पश्चिमी यमुना नहर परियोजना के पंपिंग लिफ्ट सिस्टम भी प्रचलित हैं। साल्हावास खंड में सिंचाई के लिए साल्हावास लिफ्ट चैनल भी बनाया गया है। ज्वाहरलाल नेहरु नहर परियोजना के अंतर्गत खंड में नहरों का जाल बिछाया गया है जिसने सिंचाई को और भी सुलभ बना दिया है। साल्हावास खंड के केवल कुछ रेतीले क्षेत्र को छोड़ कर शेष खंड का पानी खारा है (ढाका 1990-91: 8)। साल्हावास खंड का पश्चिमी एवं दक्षिण-पश्चिमी भाग रेतीला है तथा मीठा पानी होने के कारण यहां कुओं के पानी से सिंचाई की जाती है। इस क्षेत्र में नहरी जल का अभाव है। इस रेतीले क्षेत्र में लोग फव्वारों से खेतों की सिंचाई करते हैं। साल्हावास खंड का वह क्षेत्र जहाँ कुएं एवं नहरी जल उपलब्ध नहीं है वहां सिंचाई के लिए पूर्णत: वर्षा के जल पर निर्भर रहना पड़ता है। पूर्वी क्षेत्र की अपेक्षा पश्चिमी क्षेत्र में भूमिगत जल अधिक गहराई में मिलता है। अधिकांश क्षेत्र में भूमिगत जल 1.3 मीटर से लेकर 20.3 मीटर तक मिलता है (राजेश कुमार 2016: 16)। भूमिगत जल यहां सामान्य से लेकर खारा है जिसकी पी. एच. वैल्यू 7.56 से लेकर 8.9 के मध्य है (खान 2007)। सर्वेक्षण के दौरान यह अनुभव किया गया कि जिन क्षेत्रों का भूमिगत जल ऊपर है वहां पर आजकल बिजली की जगह सौर ऊर्जा के माध्यम से कुएं के पानी से सिंचाई की जा रही है। धान की फसल में अत्यधिक जल की आवश्यकता पड़ती है जिससे लगातार खेतों में पानी के रहने से खंड का कुछ हिस्सा जल मग्न हो गया है।

तालिका: 2.2 झज्जर जिले में सिंचाई के स्रोत

भूमिगत जल के सिंचाई के स्रोत	क्षेत्र
कुएं एवम् नलकूप	64000 हेक्टेयर (640 वर्ग कि.मी.)
तालाब	1045 हेक्टेयर (10.45 वर्ग कि.मी.)
नहरें	60000 हेक्टेयर (600 वर्ग कि.मी.)
अन्य स्रोत	----

कुल सिंचित क्षेत्र	124000 हेक्टेयर (1240 वर्ग कि.मी.)
सकल सिंचित क्षेत्र	197000 हेक्टेयर (1970 वर्ग कि.मी.)

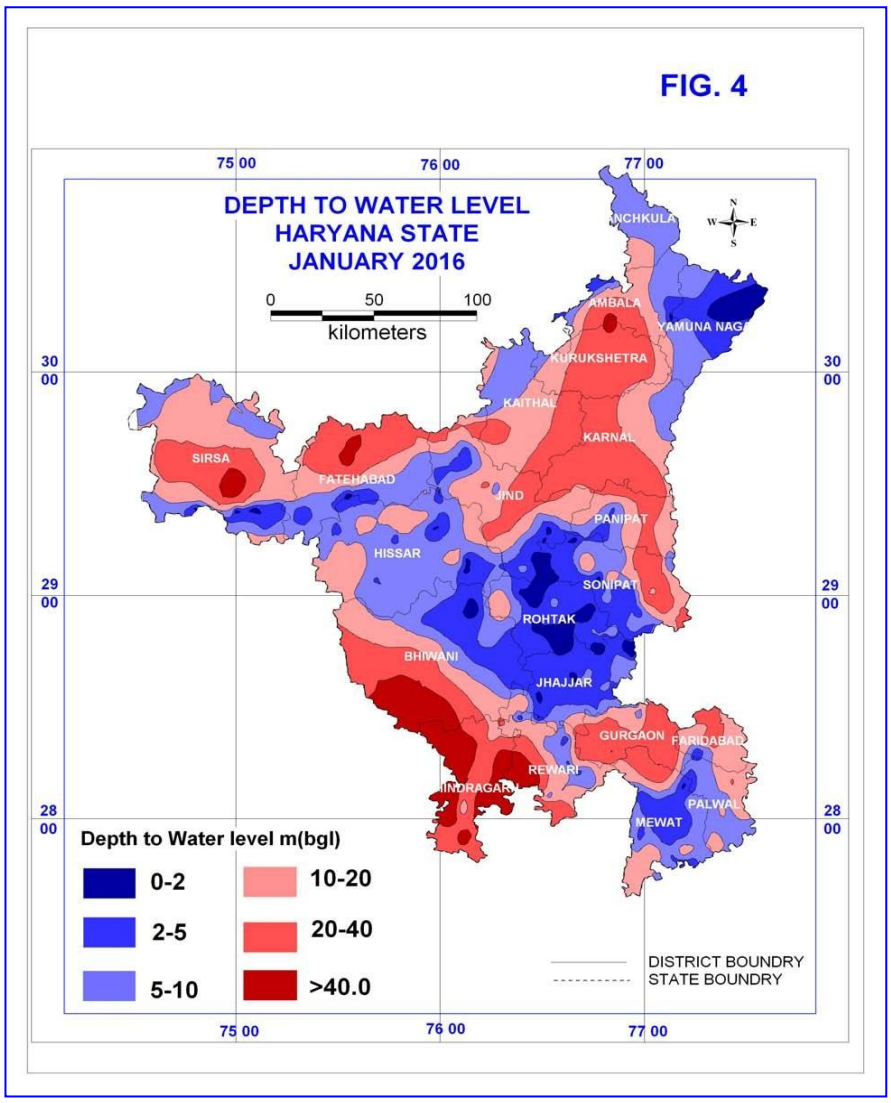

स्रोत: केंद्रीय भूमि जल बोर्ड,जल संसाधन,नदी विकास और गंगा संरक्षण मंत्रालय, 2016)

चित्र: 2.4 हरियाणा राज्य में भूमिगत जल-स्तर

2.7: पशुपालन एवं जीव जंतु

झज्जर जिले में 2007 की पशुधन जनगणना के अनुसार, यह राज्य के कुल पशुधन का 3.8 प्रतिशत है। इस प्रकार यह राज्य में 15वें स्थान पर है। पिछले 1997-2007 के दशक में कुछ पशुधन वर्ग में कमी आई है जैसे- ऊंट (-88.7%), खच्चर (-79.2%), घोड़े और गधे (-71.6), सूअर (-59.1%), बकरी (-35%), भेड़ (1.2%), गाय-बैल (-8.3%)। भैंसों की संख्या में 54.7% वृद्धि हुई है। पिछले दशक से मुर्गी फॉर्म की संख्या(229.1%) भी पहले की अपेक्षा दुगुनी हो गई है। पशुधन की संख्या में गिरावट कृषि कार्य एवं परिवहन व यातायात में कम प्रयोग, चरागाहों की कमी तथा लोगों के जीवन के रहन-सहन में परिवर्तन के फलस्वरुप हुआ है। देसी गायों की संख्या 7,379 तथा संकर नस्ल की गायों की संख्या 4,599 है। भैंसों की संख्या 83,978 है जो राज्य के कुल गाय-बैल, भैंस पशुधन का 4% है और जिले का 34.5% है। मुर्गियों की संख्या 1997 में 0.4 लाख थी और 2007 में यह बढ़कर 1.4 लाख हो गई। 2009-10 में 323 डेयरी अथवा दूध सहकारी संगठनों ने 1820.1 लाख रुपये का दुग्ध उत्पादन किया तथा जिसकी कीमत 1,905.1लाख रुपये थी।

झज्जर जिले में पशुओं के ईलाज हेतु 90 पशु-अस्पताल तथा 53 पशु-औषधालय स्थित हैं (जनगणना रिपोर्ट, झज्जर 2011: 18)। भेड़ों का उपयोग भोजन में मीठ के रूप में, ऊन एवम् खाल का प्रयोग औधोगिक उद्देश्य हेतु तथा खाद का उपयोग कृषि में किया जाता है। झज्जर जिले में कुल 5 ऊन उद्योग केंद्र हैं। इसी प्रकार बकरी का प्रयोग दूध और मांस के लिए किया जाता है। सूअर का प्रयोग केवल मांस के लिए किया जाता है।

जनसंख्या वृद्धि एवं विस्तृत पैमाने पर कृषि ने इस क्षेत्र के जंगली जीव जंतुओं को प्रभावित किया है। पालतु पशुओं में गाय, भैंस, भेड़, बकरी, ऊंट, घोड़ा, खच्चर, गधा, सूअर आदि हैं तथा अनेक स्थानों पर मुर्गी फार्म में मुर्गियां भी पाली जाती हैं। कुत्ते, बिल्लियां भी घर एवं बस्तियों में विचरण करते रहते हैं। इस क्षेत्र में सामान्यतः नीलगाय, बंदर, बिल्ली, हिरण पाए जाते हैं। जहरीले सांपों की विभिन्न प्रजातियां जैसे- कोबरा, करैत, चितकबरा, दुमुही, सटक आदि भी पाई जाती हैं। सांप के अतिरिक्त छिपकली, गिरगिट, बिच्छू, कनखजूरा आदि भी पाए जाते हैं। पानी में रहने वाले जंतुओं में मेंढक, भुज, कछुआ हर जगह इस क्षेत्र में मिलते हैं। पक्षियों में चिड़िया, कबूतर, कौवा, बत्तख, तोता, गुरसल, बाज, बगुला, बुलबुल, कटफोड़ा, तीतर, उल्लू, सोनचिड़ी, डोमिणी, टटीहरी, मोर (जिला गजेटियर रोहतक 1970: 15-17) आदि उल्लेखनीय हैं। इस क्षेत्र में जनसंख्या वृद्धि, वनों

की कटाई और अन्य कारणों से जीव जंतु एवं पशु पक्षियों की संख्या में कमी आई है। कृषि के विस्तार एवं जंगलों की कटाई के कारण जीव जंतु कम हो गए हैं।

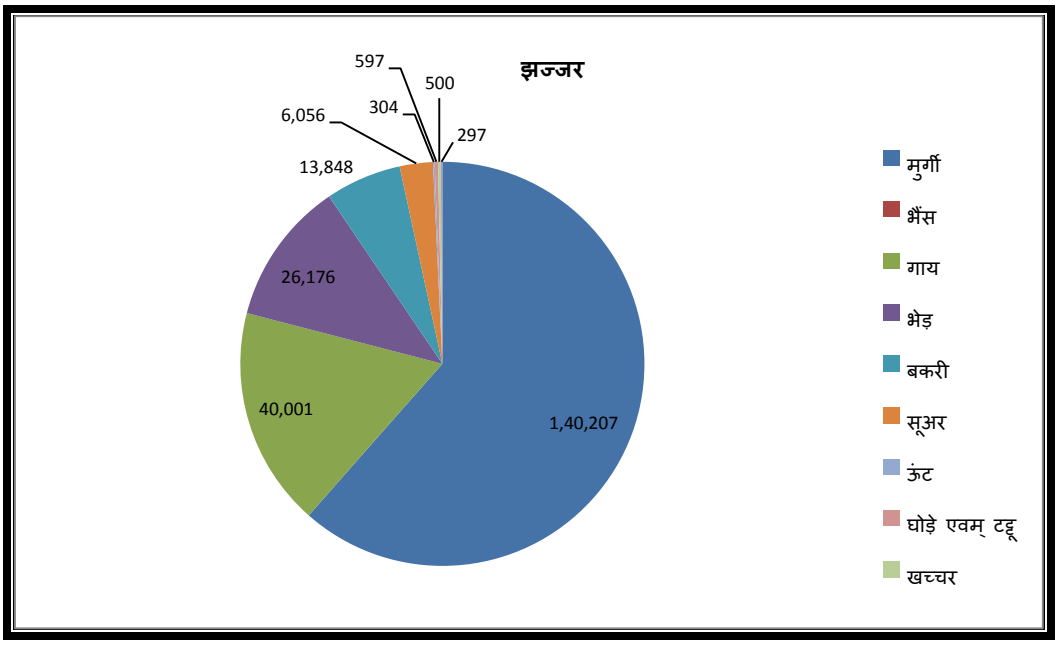

चित्र: 2.5 झज्जर जिले में पशुपालन एवम् मुर्गीपालन का वितरण

2.8: वनस्पति

साल्हावास खंड शुष्क क्षेत्र के अंतर्गत आता है और इसमें मरुद्भूमि प्रकार की वनस्पतियां पाई जाती हैं। विभिन्न प्रकार के पेड़-पौधे, झाड़ियां, औषधियाँ इस खंड के भिन्न-भिन्न भागों में मिलते हैं। इस क्षेत्र में जनसंख्या दबाव तथा विस्तृत पैमाने पर कृषि करने के कारण प्राकृतिक वन बहुत कम रह गए हैं। साल्हावास खंड में शुष्क एवं कंटीले पेड़-पौधे उगाए जाते हैं जिन्हें अधिक पानी की आवश्यकता नहीं होती है। सड़को एवं नहरों के किनारे शीशम, नीम, कीकर, बरगद, बड़ आदि वृक्ष लगाए जाते हैं। इसके अतिरिक्त जांट, जांटी, फिरांस, जाल, सफेदा, कचनार, सीरिस, पीपल, जामुन, शहतूत, झड़बेरी (जनगणना रिपोर्ट, झज्जर 2011: 11) आदि वृक्ष भी लगाए जाते हैं। कीकर एवं शीशम की लकड़ी का प्रयोग कृषि उपकरण बनाने तथा घर एवम् इमारतों के निर्माण में भी किया जाता है। आंक, कंडाई, सरकंडा, खरेंटी, कैर, बबूल आदि इस रेतीले क्षेत्र के मुख्य पौधे हैं। औषधियों के रूप में यहाँ अनेक जड़ी-बूटियां पाई जाती हैं जिनका उपयोग स्वास्थ्य लाभार्थ होता है जैसे- कुरंड, खरेंटी, गिलोय, कंडाई, ककरुंदा, चौलाई, बथुआ, ग्वारपाठा, नागफनी, अश्वगंधा इंद्रायण, शंखावली, रिंगणी, सांटी, सदाबहार, गोखरू, मकोय (जिला गजेटियर, रोहतक 1970: 11) आदि। इस क्षेत्र में पेड़-पौधों व

औषधियों के अतिरिक्त भिन्न-भिन्न प्रकार की घास पाई जातीहैं। जो फसलों के लिए तो हानिकारक है किंतु पशुओं के लिए उत्तम चारा प्रदान करती हैं। इस क्षेत्र में सबसे उत्तम एवं सामान्य रूप से उपलब्ध घास दूब है जो सामान्य बारिश के बाद भी वर्षभर बनी रहती है। इसके अतिरिक्त सामक, डीला, मकड़ा, पाला, सांटी, मोथा, भाखड़ी आदि प्रमुख घासें हैं। मूंज का प्रयोग मजबूत रस्सी बनाने के लिए किया जाता है (जिला गजेटियर, रोहतक 1883-84: 13-15 तथा ढाका 1990-91: 10)

तालिका: 2.3 झज्जर जिले में वन वर्गीकरण

क्रम संख्या	**वनों के प्रकार**	**क्षेत्रफल (वर्ग कि. मी.)**
1.	आरक्षित वन	----
2.	रक्षित वन	38.3
3.	अवर्गीकृत वन	0.5
4.	आईके (1927) .ए.एफ. अनुभाग ,38 के अंतर्गत आने वाले वन	----
5.	एल (4,5) के अनुभाग (1990) ए. पी. के अंतर्गत आने वाले वन	2.1
	कुल वन्य क्षेत्र	40.9

स्रोत: हरियाणा वन विभाग पंचकूला, 2011

अध्याय-3

सर्वेक्षण

पुरातात्विक सर्वेक्षण किसी क्षेत्र विशेष के इतिहास एवं संस्कृति के विषय में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करता है। सर्वेक्षण की अनेक विधियां हैं जिनमें से गांव से गांव सर्वेक्षण एक विधि है। सर्वेक्षण करने से पूर्व यह आवश्यक है कि किसी क्षेत्र के साहित्य और प्रकाशित शोध कार्यों के विषय में जानकारी प्राप्त की जाए। उपर्युक्त जानकारी शोध-प्रारूप को तैयार करने एवं हजारों वर्ष पूर्व बसी प्राचीन संस्कृतियों के विषय में जानने के लिए उपयोगी है। पुरास्थलों से पुरावशेषों को प्राप्त करने तथा अतीत की क्रियाओं को समझने के लिए दो महत्वपूर्ण विधियां हैं जिनमें से सर्वेक्षण एक महत्वपूर्ण विधि है जो प्राचीन पुरास्थलों की मानवीय गतिविधियों का निरीक्षण, रिकॉर्डिंग तथा धरातल से प्राप्त मृदभांड एवम् अन्य सांस्कृतिक सामग्री का संग्रहण करता है। सर्वेक्षण के माध्यम से प्राचीन पुरास्थलों से प्राप्त सांस्कृतिक सामग्री का विश्लेषण कर सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक पहलुओं पर प्रकाश डाला जाता है। सांस्कृतिक पुरावशेष न केवल पुरातत्व के अस्तित्व की जानकारी देते हैं बल्कि सांस्कृतिक क्रम पर भी प्रकाश डालते हैं। पुरातात्विक सर्वेक्षण एक ऐसी प्रक्रिया है जो प्राचीन संस्कृतियों के बारे में सजीव चित्रण प्रस्तुत करती है। सर्वेक्षण से प्राप्त पुरातात्विक सामग्री के आधार परविभिन्न संस्कृतियों या समाजों के भिन्न-भिन्न पक्षों जैसे सांस्कृतिक रीति-रिवाजों, बस्ती अधिवास योजना, जीविकोपार्जन व्यवस्था, सांस्कृतिक विकास, पर्यावरणीय दशाओं का अध्ययन किया जाता है जो विभिन्न संस्कृतियों के मध्य सम्बंध एवम् परिवर्तन को जानने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। पुरातात्विक सर्वेक्षण का मुख्य ध्येय मानव व्यवहार एवम् सांस्कृतिक सामग्री के मध्य सम्बंध को जानना है।

इस लधु शोध के अंतर्गत झज्जर जिले के साल्हावास खंड का सर्वेक्षण किया गया। इस सर्वेक्षण का मुख्य उद्देश्य इस क्षेत्र में स्थित पुरातात्विक पुरास्थलों के संदर्भ में प्राथमिक आंकड़े और पुरावशेष प्राप्त करना रहा और साथ ही पुरावशेषों का व्यवस्थित तरीके से अध्ययन भी किया गया। सर्वेक्षण के परिणाम स्वरुप 48 पुरास्थल प्रतिवेदित किए गए हैं। 48 पुरास्थलों में से 02 पुरास्थल बहु-सांस्कृतिक कालीन हैं जिनमें से ढ़ाकला-3 पुरास्थल आरंभिक हड़प्पाकाल, उत्तर हड़प्पाकाल तथा पूर्व मध्यकाल से संबंधित है तथा कासनी-1 पुरास्थल उत्तर हड़प्पाकाल एवं पूर्व मध्यकाल से संबंधित है। एक पुरास्थल ढ़ाकला-3 आरंभिक हड़प्पाकालीन है तथा 5 पुरास्थल उत्तर हड़प्पाकालीन संस्कृति

से संबंधित हैं। कुल 45 पुरास्थल पूर्व मध्यकालीन संस्कृति से संबंधित हैं। सर्वेक्षण में नए पुरातात्विक पुरास्थल न्यौला, मुन्ढ़ेरा-4, मुंढ़ेरा-5 खोजे गए हैं। कुछ पुरास्थल जो शोधकर्ताओं द्वारा पूर्व में प्रतिवेदित किए गए थे, उनका सांस्कृतिक क्रम वर्तमान शोध से मेल नहीं खाता जैसे-भूरावास-1, बिठला, छप्पार-2, ढ़ाकला-1, ढ़ाकला-3, कनवा, कासनी-1, कासनी-2, खुड्डन-2, कोहंद्रवाली-1, कोहंद्रवाली-2, कुंजिया, समासपुर-माजरा-1, तुम्बाहेड़ी।

साल्हावास खंड के पुरातात्विक पुरास्थलों का सांस्कृतिक क्रम इस प्रकार है:

क्रम	सांस्कृतिक क्रम	संख्या
1.	आरंभिक हड़प्पाकाल	01
2.	उत्तर हड़प्पाकाल	05
3.	पूर्व मध्यकाल	45

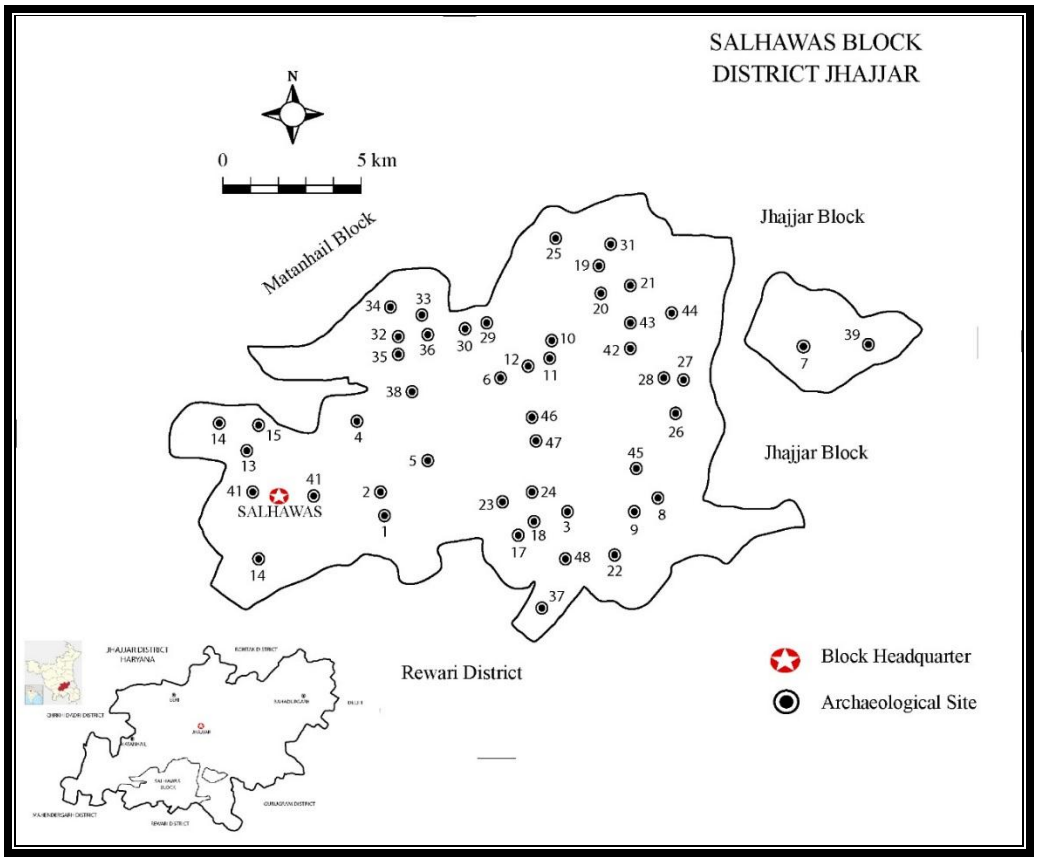

चित्र: 3.1 साल्हावास खंड के पुरास्थल

1. अंबोली-1

अवस्थिति: (28°26'42" उ. 76°29'40"पू.)

समुद्र तल से ऊँचाई: 196 मी.

समीपवर्ती क्षेत्र: रेतीला क्षेत्र

अंबोली गांव साल्हावास से लगभग 3 किलोमीटर पूर्व में साल्हावास-धरौली सड़क मार्ग पर स्थित है। इस गांव में दो प्राचीन पुरास्थल हैं जो इसके भू-राजस्व अधिकार क्षेत्र के अंतर्गत आते हैं।

अंबोली पुरास्थल गांव के दक्षिण में लगभग 100 मीटर की दूरी पर स्थित है। यह पुरास्थल श्री शुधन सिंह के पुत्र श्री रामनिवास के खेत में स्थित है। यह पुरास्थल लगभग 6 एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ है तथा लगभग 1 मीटर ऊंचा है। यहां के स्थानीय लोग इस पुरास्थल को *कालिया ब्राह्मण* के नाम से जानते हैं। संपूर्ण पुरास्थल पर कृषि कार्य किया जाता है। कृषि कार्य हेतु खेत को समतल बनाया गया है जिससे पुरास्थल अस्त-व्यस्त हो गया है। इस पुरास्थल के सांस्कृतिक अवशेष पूर्व मध्यकाल से संबंधित हैं (ढाका 1990-91: 14)। वर्तमान सर्वेक्षण के दौरान भी यहाँ पर पूर्व मध्यकालीन सांस्कृतिक अवशेष मिले हैं। इस पुरास्थल से अन्य सांस्कृतिक पुरावशेषों में पकी मिट्टी से निर्मित एक अज्ञात मृण्मूर्ति मिली है।

2. अंबोली-2

अवस्थिति: (28°27'07"उ. 76°29'56"पू.)

समुद्र तल से ऊँचाई: 213.90 मी.

समीपवर्ती क्षेत्र: रेतीला क्षेत्र

यह पुरास्थल हीरा सिंह के पुत्र श्री प्रदीप कुमार एवं कुलदीप कुमार के खेत में स्थित है। यह पुरास्थल लगभग 8 एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ है तथा 2 मीटर ऊंचा है। यहां के स्थानीय लोग इसे *खेड़ा* के नाम से जानते हैं। संपूर्ण पुरास्थल पर कृषि की जाती है। कृषि हेतु पुरास्थल को समतल बनाया गया है जिससे पुरास्थल अस्त-व्यस्त हो गया है। इस पुरास्थल के सांस्कृतिक अवशेष पूर्व मध्यकाल से संबंधित प्रतिवेदित हैं (राजेश कुमार 2016: 37)। वर्तमान सर्वेक्षण के दौरान भी पूर्व मध्यकालीन सांस्कृतिक अवशेष ही मिले हैं।

3. बाबेपुर

अवस्थिति: (28°26'29" उ. 76°33'46" पू.)

समुद्र तल से ऊँचाई: 220 मी.

समीपवर्ती क्षेत्र: रेतीला क्षेत्र

बाबेपुर गांव झज्जर से लगभग 20 किलोमीटर दक्षिण-पश्चिम में झज्जर-कोसली सड़क मार्ग पर स्थित है। यह गांव साल्हावास से लगभग 11 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। इस गांव में एक पुरास्थल है जो इसके भू-राजस्व अधिकार क्षेत्र के अंतर्गत आता है।

बाबेपुर पुरास्थल गांव से लगभग 1.5 किलोमीटर दक्षिण-पश्चिम में रेतीले टीले पर स्थित है। यह पुरास्थल श्री भरते सिंह के पुत्र श्री सतवीर सिंह के खेत में स्थित है। यह पुरास्थल 10 एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ है तथा आसपास के क्षेत्र से लगभग 1 मीटर ऊंचा है। यहां के स्थानीय लोग इसे *चमरा* के नाम से जानते हैं। पुरास्थल के पास चमरा देवी का मंदिर भी बना हुआ है। संपूर्ण पुरास्थल पर कृषि की जाती है। कृषि हेतु खेत को समतल बनाने के लिए खेत से मिट्टी उठाई गई है जिससे पुरास्थल अस्त-व्यस्त हो गया है। कटे हुए अनुभाग में लगभग 1 मीटर तक सांस्कृतिक जमाव दिखाई देता है। इस पुरास्थल के सांस्कृतिक अवशेष पूर्व मध्यकाल से संबंधित हैं (राजेश कुमार 2016: 40)। वर्तमान सर्वेक्षण के दौरान भी पूर्व मध्यकालीन सांस्कृतिक अवशेष मिले हैं। सर्वेक्षण से मृदभांडों के अतिरिक्त बालुका पत्थर पर निर्मित एक बाँट (बटखरा) मिला है।

4. भूरावास

अवस्थिति: (28°28'16 उ. 76°29'38"पू.)

समुद्र तल से ऊँचाई: 202.90 मी.

समीपवर्ती क्षेत्र: रेतीला क्षेत्र

भूरावास गांव झज्जर से लगभग24 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। यह गांव साल्हावास से लगभग 2.5 किलोमीटर उत्तर पूर्व में स्थित है। इस गांव में एक प्राचीन पुरास्थल है जो इसके भू-राजस्व क्षेत्र के अंतर्गत आता है।

भूरावास पुरास्थल गांव से लगभग 200 मीटर दक्षिण-पूर्व में स्थित है। यह पुरास्थल श्री चन्दगी सिंह के पुत्र श्री महेंद्र सिंह के खेत में स्थित है। यह पुरास्थल लगभग 5 एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ है तथा लगभग 1 मीटर ऊंचा है। यहां के स्थानीय लोग इस पुरास्थल को *दोहबट* के नाम से जानते हैं। संपूर्ण पुरास्थल पर कृषि की जाती है। संपूर्ण पुरास्थल को कृषि हेतु समतल बनाया गया है जिससे पुरास्थल पूर्णत अस्त-व्यस्त हो गया है तथा इस पुरास्थल पर मकान भी बने हुए हैं। इस पुरास्थल के सांस्कृतिक अवशेष उत्तर हड़प्पाकाल एवं पूर्व मध्यकाल से संबंधित हैं (राजेश कुमार 2016: 50)। वर्तमान सर्वेक्षण के दौरान भी केवल पूर्व मध्यकालीन सांस्कृतिक अवशेष ही मिले हैं।

5. बिठला

अवस्थिति: (28°27'44" उ. 76°31'34" पू.)

समुद्र तल से ऊँचाई: 223.114 मी.

समीपवर्ती क्षेत्र: जलोढ़ मैदान

बिठला गांव झज्जर से लगभग 23 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। यह गांव साल्हावास से लगभग 6 किलोमीटर पूर्व में स्थित है। अंबोली से बिठला के लिए सड़क मार्ग निकलता है।

इस गांव में एक प्राचीन पुरास्थल है जो इसके भू-राजस्व अधिकार क्षेत्र के अंतर्गत आता है। बिठला पुरास्थल गांव से लगभग 50 मीटर दक्षिण-पूर्व दिशा में स्थित है। यह पुरास्थल श्री हरनाम सिंह के पुत्र श्री रामकरण के खेतों में स्थित है। यह पुरास्थल लगभग 3 एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ है। यहां के स्थानीय लोग इसे *कुरड़ा-की-बात* के नाम से जानते हैं। संपूर्ण पुरास्थल पर कृषि की जाती है। इस पुरास्थल के सांस्कृतिक अवशेष उत्तर हड़प्पाकाल से संबंधित हैं (राजेश कुमार 2016: 50)। वर्तमान सर्वेक्षण के दौरान केवल पूर्व मध्यकालीन सांस्कृतिक अवशेष ही प्रकाश में आए हैं।

6. चांदोल

अवस्थिति: (28°29'22" उ. 76°32'28" पू.)

समुद्र तल से ऊँचाई: 227.99 मी.

समीपवर्ती क्षेत्र: जलोढ़ मैदान

चांदोल गांव झज्जर से लगभग 20 किलोमीटर दक्षिण-पश्चिम में स्थित है। झज्जर-कोसली सड़क मार्ग से ढ़ाकला के लिए मार्ग निकलता है, जिसके माध्यम से चांदोल पहुंचा जा सकता है। यह गांव साल्हावास से लगभग 12 किलोमीटर दक्षिण-पश्चिम में स्थित है। इस गांव में एक प्राचीन पुरास्थल है जो इसके भू-राजस्व क्षेत्र के अंतर्गत आता है।

पुरास्थल चांदोल गांव से लगभग 300 मीटर दक्षिण-पश्चिम में स्थित है। यह पुरास्थल श्री बस्ती के पुत्र श्री अमर सिंह के खेतों में नहर के पास स्थित है। यह पुरास्थल लगभग 5 एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ है। यहां के स्थानीय लोग इसे *खेड़ा* के नाम से जानते हैं। संपूर्ण पुरास्थल पर कृषि की जाती है। कृषि कार्यों के कारण पुरास्थल अस्त-व्यस्त है। इस पुरास्थल के सांस्कृतिक अवशेष पूर्व मध्यकाल से संबंधित हैं (राजेश कुमार 2016: 54)। वर्तमान सर्वेक्षण के दौरान भी पूर्व मध्यकालीन सांस्कृतिक अवशेष मिले हैं।

7. चांदपुर

अवस्थिति: (28°29'23" उ. 76°39'27" पू.)

समुद्र तल से ऊँचाई: 220.98 मी.

समीपवर्ती क्षेत्र: रेतीला क्षेत्र

चांदपुर गांव झज्जर से लगभग14 किलोमीटर दक्षिण में झज्जर-रेवाड़ी सड़क मार्ग पर स्थित है। यह गांव साल्हावास से लगभग 27 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। इस गांव में एक प्राचीन पुरास्थल है जो इसके भू-राजस्व क्षेत्र के अंतर्गत आता है।

पुरास्थल चांदपुर गांव से लगभग 200 मीटर पूर्व में सरकारी स्कूल के नजदीक स्थित है। पुरास्थल के क्षेत्र को हरियाणा सरकार के ग्रामीण विकास विभाग ने गरीबी रेखा से नीचे आने वाले परिवारों को आवास हेतु आवंटित कर दिया है। यह पुरास्थल लगभग 15 एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ है तथा 3-4 मीटर तक ऊंचा है। पुरास्थल का आंशिक भाग पंचायती जमीन के अंतर्गत आता है तथा शेष को समतल बनाकर कृषि की जाती है। कृषि कार्यों के कारण पुरास्थल को समतल बना लिया गया है। पुरास्थल के अनुभाग में लगभग 1 मीटर नीचे तक सांस्कृतिक अवशेष देखे जा सकते हैं। इस पुरास्थल के सांस्कृतिक अवशेष पूर्व मध्यकाल से संबंधित हैं (ढ़ाका 1990-91: 15-16)। वर्तमान

सर्वेक्षण के दौरान भी पूर्व मध्यकालीन सांस्कृतिक अवशेष मिले हैं। इस पुरास्थल से मृदभांडों के अतिरिक्त अन्य सांस्कृतिक पुरावशेषों में पकी मिट्टी से निर्मित हॉपस्कोच मिला है।

8. छप्पार-1

अवस्थिति: (28°27'13" उ. 76°35'23" पू.)

समुद्र तल से ऊँचाई: 223.418 मी.

समीपवर्ती क्षेत्र: जलोढ़ मैदान

छप्पार गांव झज्जर से लगभग 23 किलोमीटर दक्षिण-पश्चिम में स्थित है। झज्जर-कोसली सड़क मार्ग से सुबाना के लिए मार्ग निकलता है जो छप्पार गांव तक पहुंचाता है। यह गांव साल्हावास से लगभग 17 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। इस गांव में दो प्राचीन पुरास्थल हैं जो इसके भू-राजस्व क्षेत्र के अंतर्गत आते हैं।

पुरास्थल छप्पार गांव से लगभग 1.5 किलोमीटर उत्तर पूर्व दिशा में स्थित है। यह पुरास्थल श्री सूबे नंबरदार के पुत्र श्रीपल्ली के खेतों में स्थित है। यह पुरास्थल लगभग 4 एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ है। यहां के स्थानीय लोग इसे *खेड़ा* के नाम से जानते हैं। संपूर्ण पुरास्थल को समतल कर इस पर खेती की जाती है। पुरास्थल की दशा बुरी है। इस पुरास्थल के सांस्कृतिक अवशेष पूर्व मध्यकाल से संबंधित हैं (राजेश कुमार 2016: 55)। वर्तमान सर्वेक्षण के दौरान भी पूर्व मध्यकालीन सांस्कृतिक अवशेष मिले हैं।

9. छप्पार-2

अवस्थिति: (28°26'27" उ. 76°34'38" पू.)

समुद्र तल से ऊँचाई: 223.99 मी.

समीपवर्ती क्षेत्र: रेतीला क्षेत्र

छप्पार-2 पुरास्थल गांव से लगभग 2 किलोमीटर पश्चिम में स्थित है। यह पुरास्थल जैतपुर से सरोला को जाने वाली सड़क मार्ग के नजदीक स्थित है। यह पुरास्थल गतरो देवी के पुत्र श्री अतर सिंह के खेत में नहर के समीप स्थित है। यह पुरास्थल लगभग 5एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ है। यहां के स्थानीय लोग इसे *खेड़ा* के नाम से जानते हैं। इस पुरास्थल के सांस्कृतिक अवशेष उत्तर हड़प्पाकाल से संबंधित हैं

(राजेश कुमार 2016: 55-56)। वर्तमान सर्वेक्षण से भी पूर्व मध्यकालीन सांस्कृतिक अवशेष ही मिले हैं।

10. ढ़ाकला-1

अवस्थिति: (28°30'29" उ. 76°32'18" पू.)

समुद्र तल से ऊँचाई: 220.066 मी.

समीपवर्ती क्षेत्र: रेतीला क्षेत्र

ढ़ाकला गांव झज्जर से लगभग 17 किलोमीटर दक्षिण-पश्चिम में स्थित है। झज्जर-कोसली सड़क मार्ग से लगभग 1 किलोमीटर उत्तर में सुबाना से ढ़ाकला के लिए सड़क मार्ग निकलता है। यह गांव साल्हावास से लगभग 10 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। इस गांव में 3 प्राचीन पुरास्थल हैं जो इसके भू-राजस्व अधिकार क्षेत्र के अंतर्गत आते हैं।

ढ़ाकला-1 पुरास्थल गांव से लगभग 2.5 किलोमीटर उत्तर में स्थित है। यह श्री रघुवीर सिंह के पुत्र श्री मूलचंद के खेत में स्थित है। यहां के स्थानीय लोग इसे *खेड़ा* के नाम से जानते हैं। यह पुरास्थल लगभग 5 एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ है तथा आसपास के क्षेत्र की अपेक्षा 1 मीटर ऊंचा है। पुरास्थल को समतल बनाकर इस पर कृषि की जाती है तथा कृषि के कारण पुरास्थल आंशिक रूप से अस्त-व्यस्त है। इस पुरास्थल के सांस्कृतिक अवशेष पूर्व मध्यकाल से संबंधित हैं (राजेश कुमार 2016: 63-64)। परंतु वर्तमान सर्वेक्षण के दौरान केवल उत्तर हड़प्पाकालीन सांस्कृतिक अवशेष प्राप्त हुए हैं। इस पुरास्थल से मृदभांडों के अतिरिक्त अन्य सांस्कृतिक पुरावशेषो में बालुका पत्थर पर निर्मित सिल-बट्टा तथा पकी मिट्टी की चूड़ियाँ मिली हैं।

11. ढ़ाकला-2

अवस्थिति: (28°30'25" उ. 76°33'40" पू.)

समुद्र तल से ऊँचाई: 221 मी.

समीपवर्ती क्षेत्र: रेतीला क्षेत्र

ढ़ाकला-2 पुरास्थल एक ऊंचे टीले के रूप में स्थित है जो गांव से लगभग 2 किलोमीटर उत्तर में स्थित है। यह पुरास्थल श्री गोपी पंडित के पुत्र श्री मुरारी के खेत में स्थित है। यह पुरास्थल लगभग 5 एकड़

क्षेत्र में फैला हुआ है तथा आसपास के क्षेत्र से लगभग 2 मीटर ऊंचा है। यहां के स्थानीय लोग इस पुरास्थल को *सुरखपुर खेड़ा* के नाम से जानते हैं। संपूर्ण पुरास्थल पर कृषि की जाती है तथा कृषि कार्यों के कारण पुरास्थल अस्त-व्यस्त हो गया है। कटे हुए अनुभाग में लगभग 0.50 मीटर तक सांस्कृतिक अवशेष देखे जा सकते हैं। इस पुरास्थल के सांस्कृतिक अवशेष पूर्व मध्यकाल से संबंधित हैं (राजेश कुमार 2016: 64)। वर्तमान सर्वेक्षण के दौरान भी इस पुरास्थल से पूर्व मध्यकालीन सांस्कृतिक अवशेष मिले हैं।

12. ढ़ाकला-3

अवस्थिति: (28°28'35" उ. 76°32'35" पू.)

समुद्र तल से ऊँचाई: 221.086 मी.

समीपवर्ती क्षेत्र: रेतीला क्षेत्र

ढ़ाकला-3 पुरास्थल गांव से लगभग 1.5 किलोमीटर पश्चिम में स्थित है। यह पुरास्थल ढ़ाकला-बिठला सड़क मार्ग के बायीं तरफ स्थित है। यह पुरास्थल श्री रघुवीर सिंह के पुत्र श्री राजपाल के खेत में स्थित है। यह पुरास्थल लगभग 7 एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ है तथा आस पास के क्षेत्र की अपेक्षा लगभग 1.5 मीटर ऊंचा है। यहां के स्थानीय लोग इसे *खेड़ा* के नाम से जानते हैं। पुरास्थल को समतल बनाकर इस पर खेती की जाती है। यह पुरास्थल आंशिक रूप से अस्त-व्यस्त है। इस पुरास्थल के सांस्कृतिक अवशेष गणेश्वर (राजस्थान) के गैरिक मृदभांड संस्कृति से मेल खाते हैं तथा यहां पर पूर्व मध्यकाल सांस्कृतिक अवशेष भी मिले हैं (ढाका 1990-91: 16)। वर्तमान सर्वेक्षण के दौरान आरंभिक हड़प्पाकालीन, उत्तर हड़प्पाकालीन एवं पूर्व मध्यकालीन सांस्कृतिक अवशेष प्रकाश में आए हैं। इस पुरास्थल से मृदभांडों के अतिरिक्त अन्य सांस्कृतिक पुरावशेषों में पकी मिट्टी से निर्मित चूड़ियाँ तथा कांचली मिट्टी की चूड़ियाँ भी मिली हैं।

13. ढ़ाना

अवस्थिति: (28°27'52" उ. 76°27'12" पू.)

समुद्र तल से ऊँचाई: 224.94 मी.

समीपवर्ती क्षेत्र: रेतीला क्षेत्र

ढ़ाना गांव झज्जर से लगभग 36 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। यह गांव साल्हावास से लगभग 1 किलोमीटर उत्तर में स्थित है। इस गांव में एक प्राचीन पुरास्थल है जो इसके भू-राजस्व अधिकार क्षेत्र के अंतर्गत आता है।

ढ़ाना पुरास्थल गांव से लगभग 1 किलोमीटर पश्चिम में स्थित है। यह पुरास्थल साल्हावास से ढ़ाना को जाने वाली सड़क मार्ग के समीप स्थित है। यह पुरास्थल श्री मीर सिंह के पुत्र पूर्व सरपंच श्री विजय सिंह के खेत में स्थित है। यह पुरास्थल लगभग 4 एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ है। यहां के स्थानीय लोग इसे *खेड़ा* के नाम से जानते हैं। संपूर्ण पुरास्थल पर कृषि की जाती है तथा कृषि कार्यों के कारण पुरास्थल लगभग अस्त-व्यस्त हो गया है। इस पुरास्थल के सांस्कृतिक अवशेष पूर्व मध्यकाल से संबंधित हैं (ढाका 1990-91: 16-17)। वर्तमान सर्वेक्षण के दौरान भी इस पुरास्थल से पूर्व मध्यकालीन सांस्कृतिक अवशेष मिले हैं।

14. धनिया

अवस्थिति: (28°25'43" उ. 76°27'13" पू.)

समुद्र तल से ऊँचाई: 236 मी.

समीपवर्ती क्षेत्र: रेतीला क्षेत्र

धनिया गांव झज्जर से लगभग 31 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। यह गांव साल्हावास से लगभग 4 किलोमीटर दक्षिण-पश्चिम में स्थित है। इस गांव में एक प्राचीन पुरास्थल है जो इसके भू-राजस्व अधिकार क्षेत्र के अंतर्गत आता है।

यह पुरास्थल गांव से लगभग 1 किलोमीटर दक्षिण-पश्चिम में स्थित है। यह पुरास्थल श्री भगवान सिंह के पुत्र श्री गोपी नंबरदार के खेत में स्थित है। यह पुरास्थल लगभग 5 एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ है तथा 2 मीटर तक ऊंचा है। यहां के स्थानीय लोग इसे *खेड़ा* के नाम से जानते हैं। संपूर्ण पुरास्थल पर कृषि की जाती है तथा जिसके कारण पुरास्थल अस्त-व्यस्त हो गया है। इस पुरास्थल के सांस्कृतिक अवशेष पूर्व मध्यकाल से संबंधित हैं (ढाका 1990-91: 17)। वर्तमान सर्वेक्षण के दौरान भी इस पुरास्थल से पूर्व मध्यकालीन सांस्कृतिक अवशेष मिले हैं।

15. धनीरवास-1

अवस्थिति: (28°27'41" उ. 76°27'59" पू.)

समुद्र तल से ऊँचाई: 209.90मी.

समीपवर्ती क्षेत्र: रेतीला क्षेत्र

धनीरवास गांव झज्जर से लगभग 36 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। यह गांव साल्हावास से लगभग 1.5 किलोमीटर उत्तर पश्चिम में स्थित है। साल्हावास गांव से धनिरवास के लिए सड़क मार्ग निकलता है। इस गांव में दो प्राचीन पुरास्थल हैं जो इसके भू-राजस्व अधिकार क्षेत्र के अंतर्गत आते हैं।

पुरास्थल धनीरवास-1 गांव से लगभग 800 मीटर दक्षिण-पूर्व में साल्हावास-मातनहेल सड़क मार्ग पर स्थित है। यह पुरास्थल श्री नंदा सिंह के पुत्र श्री करतार के खेत में स्थित है। यह पुरास्थल लगभग 10 एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ है तथा लगभग 4 मीटर ऊंचा है। यहां के स्थानीय लोग इस पुरास्थल को *खेड़ा* के नाम से जानते हैं। पुरास्थल के अधिकतर क्षेत्र पर कृषि की जाती है तथा शेष भाग पर सीमेंट सेरामिक फैक्ट्री बनी हुई है। जिससे पुरास्थल आंशिक रूप से अस्त-व्यस्त हो गया है। इस पुरास्थल के सांस्कृतिक अवशेष पूर्व मध्यकाल से संबंधित हैं (राजेश कुमार 2016: 66)। वर्तमान सर्वेक्षण के दौरान भी इस पुरास्थल से पूर्व मध्यकालीन सांस्कृतिक अवशेष मिले हैं।

16. धनीरवास-2

अवस्थिति: (28°28'04" उ. 76°26'45" पू.)

समुद्र तल से ऊँचाई: 213.30 मी.

समीपवर्ती क्षेत्र: रेतीला क्षेत्र

पुरास्थल धनीरवास-2 गांव से लगभग 1.5 किलोमीटर पश्चिम में स्थित है। यह पुरास्थल पूर्व सरपंच श्री स्वरूप सिंह के खेत में स्थित है। यह पुरास्थल लगभग 8 एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ है तथा लगभग 1 मीटर ऊंचा है। यहां के स्थानीय लोग इस पुरास्थल को *खेड़ा* के नाम से जानते हैं। पुरास्थल को समतल बनाकर इस पर कृषि की जाती है तथा कृषि कार्यों के कारण पुरास्थल अस्त-व्यस्त है। इस पुरास्थल के सांस्कृतिक अवशेष पूर्व मध्यकाल से संबंधित हैं (ढाका 1990-91: 17)। वर्तमान सर्वेक्षण के दौरान भी इस पुरास्थल से पूर्व मध्यकालीन सांस्कृतिक अवशेष मिले हैं।

17. धरौली-1

अवस्थिति: (28°25'34" उ. 76°30'57" पू.)

समुद्र तल से ऊँचाई: 227.99 मी.

समीपवर्ती क्षेत्र: रेतीला क्षेत्र

धरौली गांव झज्जर से लगभग 25 किलोमीटर दक्षिण-पश्चिम में झज्जर-कोसली सड़क मार्ग पर स्थित है। इस गांव में दो प्राचीन पुरास्थल हैं जो इसके भू-राजस्व अधिकार क्षेत्र के अंतर्गत आते हैं। पुरास्थल धरौली-1 गांव से लगभग 200 मीटर पश्चिम में स्थित है। इस पुरास्थल का आंशिक भाग पंचायती भूमि तथा शेष श्री निहाल सिंह के पुत्र श्री धनराज सिंह के खेत में स्थित है। यह पुरास्थल लगभग 6 एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ है तथा 1 मीटर तक ऊंचा है। यहां के स्थानीय लोग इस पुरास्थल को *खेड़ा* के नाम से जानते हैं। संपूर्ण पुरास्थल पर कृषि की जाती है तथा कृषि कार्यों के कारण पुरास्थल लगभग अस्त-व्यस्त हो गया है। इस पुरास्थल के सांस्कृतिक अवशेष पूर्व मध्यकाल से संबंधित हैं (राजेश कुमार 2016: 70)। वर्तमान सर्वेक्षण के दौरान भी इस पुरास्थल से पूर्व मध्यकालीन सांस्कृतिक अवशेष मिले हैं।

18. धरौली-2

अवस्थिति: (28°26'05" उ. 76°31'17" पू.)

समुद्र तल से ऊँचाई: 229 मी.

समीपवर्ती क्षेत्र: रेतीला क्षेत्र

पुरास्थल धरौली-2 गांव से लगभग 500 मीटर उत्तर में स्थित है। यह पुरास्थल रेतीले टीले पर स्थित है। यह पुरास्थल श्री मनफूल सिंह के पुत्र श्री ईश्वर सिंह के खेत में स्थित है। यह पुरास्थल लगभग 7 एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ है तथा 2 मीटर तक ऊंचा है। यहां के स्थानीय लोग इसे *खेड़ा* के नाम से जानते हैं। संपूर्ण पुरास्थल पर कृषि की जाती है तथा धान की खेती हेतु खेत की मिट्टी को उठा कर समतल बनाया गया है जिससे पुरास्थल अस्त-व्यस्त हो गया है। कटे हुए अनुभाग में लगभग 1.50 मीटर तक मृदभांड तथा अन्य सांस्कृतिक अवशेष दिखाई देते हैं। सांस्कृतिक अवशेषों की दृष्टि से पुरास्थल अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। यहां से प्राप्त सांस्कृतिक अवशेष पूर्व मध्यकाल से संबंधित हैं (राजेश कुमार 2016: 70)। वर्तमान सर्वेक्षण के दौरान भी इस पुरास्थल से पूर्व मध्यकालीन सांस्कृतिक अवशेष मिले हैं।

19. फतेहपुरी

अवस्थिति: (28°31'08" उ. 76°35'08" पू.)

समुद्र तल से ऊँचाई: 213.96 मी.

समीपवर्ती क्षेत्र: रेतीला क्षेत्र

फतेहपुरी गांव झज्जर से लगभग 12 किलोमीटर दक्षिण में झज्जर-कोसली सड़क मार्ग पर स्थित है। कासनी व ढ़ाकला से फतेहपुरी के लिए सड़क मार्ग निकलता है। यह गांव साल्हावास से लगभग 21 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। इस गांव में एक प्राचीन पुरास्थल हैं जो इसके भू-राजस्व अधिकार क्षेत्र के अंतर्गत आते हैं।

फतेहपुरी पुरास्थल गांव से लगभग 700 मीटर दक्षिण में स्थित है। पुरास्थल के लिए कासनी व ढ़ाकला दोनों गांव से सड़क मार्ग निकलता है। यह पुरास्थल श्री करण सिंह के पुत्र श्री बलवान सिंह के खेत में स्थित है। यह पुरास्थल लगभग 5 एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ है तथा 1 मीटर से भी कम ऊंचा है। यहां के स्थानीय लोग इसे *दादा भैया वाला खेड़ा* के नाम से जानते हैं। यहां पर दादा भैया का मंदिर भी बनाया गया है। संपूर्ण पुरास्थल को कृषि हेतु समतल बनाया गया है जिससे पुरास्थल अस्त-व्यस्त हो गया है। इस पुरास्थल के सांस्कृतिक अवशेष पूर्व मध्यकाल की संस्कृति से संबंधित हैं (राजेश कुमार 2016: 75)। वर्तमान सर्वेक्षण के दौरान भी इस पुरास्थल से पूर्व मध्यकालीन सांस्कृतिक अवशेष मिले हैं।

20. कासनी-1

अवस्थिति: (28°30'29" उ. 76°35'00" पू.)

समुद्र तल से ऊँचाई: 225.540 मी.

समीपवर्ती क्षेत्र: जलोढ़ मैदान

कासनी गांव झज्जर से लगभग 11 किलोमीटर की दूरी पर झज्जर-कोसली सड़क मार्ग पर स्थित है। यह गांव साल्हावास से लगभग 17 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। इस गांव में दो प्राचीन पुरास्थल हैं जो इसके भू-राजस्व अधिकार क्षेत्र के अंतर्गत आते हैं।

कासनी-1 पुरास्थल गांव से लगभग 200 मीटर उत्तर-पश्चिम में स्थित है। यह पुरास्थल कासनी से कनवा जाने वाली सड़क मार्ग पर स्थित है। यह पुरास्थल श्री सुमेर सिंह के पुत्र श्री जितेंद्र सिंह के खेत में स्थित है। यह पुरास्थल लगभग 4 एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ है तथा 1.5 मीटर तक ऊंचा है। यहां के स्थानीय लोग इसे *खेड़ा* के नाम से जानते हैं। धान की खेती हेतु मिट्टी उठाने तथा नहर निर्माण के कारण पुरास्थल लगभग अस्त-व्यस्त हो गया है। लगभग 1.5 मीटर तक की मिट्टी उठाई गई है। संपूर्ण पुरास्थल पर कृषि की जाती है तथा इसके अतिरिक्त इस पर मकान भी बने हुए हैं जिससे पुरास्थल लगभग अस्त-व्यस्त हो गया है। इस पुरास्थल के सांस्कृतिक अवशेष गणेश्वर (राजस्थान) की गैरिक मृदभांड परम्परा से समानता रखते हैं तथा पूर्व मध्यकालीन सांस्कृतिक अवशेष भी मिले हैं (ढाका 1990-91: 18-19)। जबकि वर्तमान सर्वेक्षण के दौरान उत्तर हड़प्पाकालीन एवं पूर्व मध्यकालीन संस्कृति से संबंधित सांस्कृतिक अवशेष भी मिले हैं।

21. कासनी-2

अवस्थिति: (28°31'24" उ. 76°36'01" पू.)

समुद्र तल से ऊँचाई: 225.857 मी.

समीपवर्ती क्षेत्र: रेतीला क्षेत्र

कासनी-2 पुरास्थल गांव से लगभग 2 किलोमीटर उत्तर पूर्व में झज्जर-कोसली सड़क मार्ग के पास फतेहपुरी मोड़ पर स्थित है। इस पुरास्थल के पास हनुमान मंदिर भी बना हुआ है। यह पुरास्थल श्री राम सिंह के पुत्र श्री मामचंद सिंह के खेत में स्थित है। यह पुरास्थल लगभग 4 एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ है। यहां के स्थानीय लोग इसे *खेड़ा* के नाम से जानते हैं। संपूर्ण पुरास्थल पर कृषि की जाती है तथा कृषि हेतु खेत को समतल बनाया गया है जिससे पुरास्थल अस्त-व्यस्त हो गया है। इस पुरास्थल के सांस्कृतिक अवशेष उत्तर हड़प्पा काल से संबंधित हैं (राजेश कुमार 2016: 99)। वर्तमान सर्वेक्षण के दौरान इस पुरास्थल से पूर्व मध्यकालीन सांस्कृतिक अवशेष ही मिले हैं। सर्वेक्षण के दौरान इस पुरास्थल से मृदभांडों के अतिरिक्त अन्य कोई सांस्कृतिक पुरावशेष नहीं मिले हैं। एक अन्य पुरास्थल कासनी-2 गांव से लगभग 150 मीटर दक्षिण-पश्चिम में स्थित है (ढाका 1990-91: 19) जो उत्तर हड़प्पाकालीन एवं पूर्व मध्यकालीन संस्कृति से संबंधित हैं परंतु वर्तमान समय में बस्तियां बस जाने के कारण कोई सांस्कृतिक अवशेष नहीं मिले हैं।

22. जैतपुर

अवस्थिति: (28°25'43" उ. 76°34'25" पू.)

समुद्र तल से ऊँचाई: 225.304 मी.

समीपवर्ती क्षेत्र: रेतीला क्षेत्र

जैतपुर गांव झज्जर से लगभग 31 किलोमीटर दक्षिण-पश्चिम में स्थित है। झज्जर-कोसली सड़क मार्ग के दाईं तरफ सुबाना से जैतपुर के लिए मार्ग निकलता है। यह गांव साल्हावास से लगभग 16 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। इस गांव में एक पुरास्थल है जो इसके भू-राजस्व अधिकार क्षेत्र के अंतर्गत आता है।

जैतपुर का पुरास्थल गांव से लगभग 300 मीटर दक्षिण-पूर्व में रेतीले टीले पर स्थित है। यह जैतपुर न्यौला सड़क मार्ग पर स्थित है। यह पंचायती भूमि में स्थित है। यह पुरास्थल लगभग 10 एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ है तथा 2 मीटर तक ऊंचा है। यहां के स्थानीय लोग इसे *दादा भैयावाला खेड़ा* के नाम से जानते हैं। रेतीले टीले को हटाकर खेत को समतल बनाया जा रहा है जिससे पुरास्थल अस्त-व्यस्त हो गया है। संपूर्ण पुरास्थल पर कृषि की जाती है। इस पुरास्थल के सांस्कृतिक अवशेष पूर्व मध्यकाल से संबंधित हैं (राजेश कुमार 2016: 85)। वर्तमान सर्वेक्षण में यह अवलोकन किया गया कि इस पुरास्थल पर हड्डियां बहुत अधिक मात्रा में मिलती हैं। इस पुरास्थल से वर्तमान सर्वेक्षण के दौरान पूर्व मध्यकालीन मृदभांडों के अतिरिक्त अन्य सांस्कृतिक पुरावशेषों में बालुका पत्थर पर निर्मित बांट तथा पकी मिट्टी से निर्मित हॉपस्कोच भी मिले हैं।

23. जटवाड़ा-1

अवस्थिति: (28°26'25" उ. 76°31'03" पू.)

समुद्र तल से ऊँचाई: 227.257 मी.

समीपवर्ती क्षेत्र: रेतीला क्षेत्र

जटवाड़ा गांव झज्जर से लगभग 21 किलोमीटर दक्षिण-पश्चिम में झज्जर-कोसली सड़क मार्ग पर स्थित है। यह गांव साल्हावास से लगभग 8 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। इस गांव में दो प्राचीन पुरास्थल हैं जो इसके भू-राजस्व अधिकार क्षेत्र के अंतर्गत आते हैं।

जाटवाड़ा-1 पुरास्थल गांव से लगभग 2.5 किलोमीटर दक्षिण-पश्चिम में स्थित है। यह पुरास्थल श्री नंद राम के पुत्र श्री भरते व मीर सिंह के खेत में स्थित है। यह पुरास्थल लगभग 8 एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ है तथा 2 मीटर तक ऊँचा है। यहां के स्थानीय लोग इसे *खेड़ा* के नाम से जानते हैं। संपूर्ण पुरास्थल पर कृषि की जाती है तथा कृषि कार्यों के कारण पुरास्थल अस्त-व्यस्त है। इस पुरास्थल के सांस्कृतिक अवशेष पूर्व मध्यकाल से संबंधित हैं (राजेश कुमार 2016: 88-89)। वर्तमान सर्वेक्षण के दौरान भी इस पुरास्थल से पूर्व मध्यकालीन सांस्कृतिक अवशेष मिले हैं।

24. जटवाड़ा-2

अवस्थिति: (28°27'05" उ. 76°32'49" पू.)

समुद्र तल से ऊँचाई: 225 मी.

समीपवर्ती क्षेत्र: जलोढ़ मैदान

जटवाड़ा-2 पुरास्थल गांव से लगभग 200 मीटर उत्तर-पूर्व में स्थित है। यह पुरास्थल श्री उमेद सिंह के पुत्र श्री सतपाल सिंह तथा श्री होशियार सिंह के पुत्र पूर्व सरपंच श्री रविंद्र सिंह के खेत में स्थित है। यह पुरास्थल नहर के पास स्थित है। यह पुरास्थल लगभग 3 एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ है। यहां के स्थानीय लोग इसे *खेड़ा* के नाम से जानते हैं। संपूर्ण पुरास्थल पर कृषि की जाती है। कृषि कार्य एवं नहर बनने के कारण पुरास्थल अस्त-व्यस्त हो गया है। इस पुरास्थल के सांस्कृतिक अवशेष पूर्व मध्यकाल से संबंधित हैं (राजेश कुमार 2016: 89)। वर्तमान सर्वेक्षण के दौरान भी इस पुरास्थल से पूर्व मध्यकालीन सांस्कृतिक अवशेष मिले हैं।

25. कनवा

अवस्थिति: (28°31'34" उ. 76°33'51" पू.)

समुद्र तल से ऊँचाई: 220.066 मी.

समीपवर्ती क्षेत्र: जलोढ़ मैदान

कनवा गांव झज्जर से लगभग 14 किलोमीटर दक्षिण में स्थित है। यह झज्जर-कोसली सड़क मार्ग से कासनी गांव से पहले दाईं ओर से कासनी-कनवा सड़क मार्ग स्थित है। यह गांव साल्हावास से लगभग

18 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। इस गांव में एक प्राचीन पुरास्थल है जो इसके भू-राजस्व अधिकार क्षेत्र के अंतर्गत आता है।

कनवा पुरास्थल गांव से लगभग 200 मीटर उत्तर पश्चिम में स्थित है। यह दाह संस्कार मैदान के समीप स्थित है। यह पुरास्थल लगभग 3 एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ है। इस पुरास्थल को स्थानीय लोग *रैया वाला खेत* के नाम से जानते हैं। संपूर्ण पुरास्थल पर कृषि की जाती है तथा कृषि कार्यों के कारण पुरास्थल अत्यंत अस्त-व्यस्त हो गया है। इस पुरास्थल के सांस्कृतिक अवशेष उत्तर हड़प्पाकाल एवं पूर्व मध्यकाल से संबंधित हैं (राजेश कुमार 2016: 98)। परंतु वर्तमान सर्वेक्षण के दौरान केवल पूर्व मध्यकालीन सांस्कृतिक अवशेष ही मिले हैं।

26. खुड्डन-1

अवस्थिति: (28°28'32" उ. 76°36'17" पू.)

समुद्र तल से ऊँचाई: 220.98 मी.

समीपवर्ती क्षेत्र: रेतीला क्षेत्र

खुड्डन गांव झज्जर से लगभग 24 किलोमीटर दक्षिण में स्थित है। इस गांव में रेवाड़ी रोड़ से गांव मछरौली तथा झज्जर-कोसली सड़क मार्ग से गांव सुबाना से पहुंचा जा सकता है। यह गांव साल्हावास से लगभग 18 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। इस गांव में तीन पुरास्थल हैं जो इसके भू-राजस्व अधिकार क्षेत्र के अंतर्गत आते हैं।

खुड्डन-1 पुरास्थल गांव से लगभग 1.5 किलोमीटर उत्तर पश्चिम में समासपुर माजरा सड़क मार्ग के दायीं ओर स्थित है। यह पुरास्थल श्री जैना के पुत्र श्री होशियार सिंह तथा श्री दयानंद के खेतों में स्थित है। यह पुरास्थल लगभग 8 एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ है तथा 1 मीटर ऊंचा है। यहां के स्थानीय लोग इसे *खेड़ा* के नाम से जानते हैं। संपूर्ण पुरास्थल पर कृषि की जाती है तथा कृषि कार्यों के कारण यह पुरास्थल अस्त-व्यस्त है। इस पुरास्थल के सांस्कृतिक अवशेष पूर्व मध्यकाल से संबंधित हैं (राजेश कुमार 2016: 103-104)। वर्तमान सर्वेक्षण के दौरान भी इस पुरास्थल से पूर्व मध्यकालीन सांस्कृतिक अवशेष मिले हैं।

27. खुड्डन-2

अवस्थिति: (28°29'23" उ. 76°36'52" पू.)

समुद्र तल से ऊँचाई: 220.108 मी.

समीपवर्ती क्षेत्र: रेतीला क्षेत्र

खुड्डन-2 पुरास्थल गांव से लगभग 2.7 किलोमीटर उत्तर में स्थित है। यह पुरास्थल रेतीले टीले पर स्थित है। यह पुरास्थल लगभग 20 एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ है तथा आसपास के क्षेत्र से लगभग 2 मीटर तक ऊँचा है। यहां के स्थानीय लोग इसे *जलालाबाद* के नाम से जानते हैं। इस पुरास्थल के सांस्कृतिक अवशेष उत्तर हड़प्पा कालीन एवं आरंभिक ऐतिहासिक काल तथा पूर्व मध्यकाल से संबंधित हैं (राजेश कुमार 2016: 104) परंतु वर्तमान सर्वेक्षण के दौरान केवल पूर्व मध्यकालीन सांस्कृतिक अवशेष ही मिले हैं। सर्वेक्षण के दौरान इस पुरास्थल से मृदभांडों के अतिरिक्त अन्य सांस्कृतिक पुरावशेषों में पत्थर के दो लोढ़े मिले हैं।

28. खुड्डन-3

अवस्थिति: (28°28'21" उ. 76°35'20" पू.)

समुद्र तल से ऊँचाई: 220 मी.

समीपवर्ती क्षेत्र: रेतीला क्षेत्र

खुड्डन-3 पुरास्थल गांव से लगभग 2.5 किलोमीटर उत्तर पश्चिम में ढ़ाकला जाने वाले सड़क मार्ग के बायीं तरफ स्थित है। यह पुरास्थल खिलाड़ी बजरंग पुनिया के खेत में स्थित है। यह पुरास्थल लगभग 10 एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ है तथा आस-पास के क्षेत्र की अपेक्षा 2 मीटर तक ऊँचा है। यहां के स्थानीय लोग इसे *ईशरहेड़ा* के नाम से जानते हैं। यह पुरास्थल रेतीले टीले पर स्थित है। सम्पूर्ण पुरास्थल पर कृषि की जाती है तथा पुरास्थल को कृषि हेतु समतल बनाया गया है जिसके कारण पुरास्थल अस्त-व्यस्त हो गया है। इस पुरास्थल के सांस्कृतिक अवशेष पूर्व मध्यकाल से संबंधित हैं (सिलकराम 1972: 43)। सर्वेक्षण के दौरान इस पुरास्थल से पूर्व मध्यकालीन मृदभांडों के अतिरिक्त बालुका पत्थर पर निर्मित बांट मिले हैं।

29. कोहंद्रावली-1

अवस्थिति: (28°30'40" उ. 76°32'28" पू.)

समुद्र तल से ऊँचाई: 218.10 मी.

समीपवर्ती क्षेत्र: रेतीला क्षेत्र

कोहंद्रावाली गांव झज्जर से लगभग 20 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। यह गांव साल्हावास से लगभग 8 किलोमीटर उत्तर पूर्व में स्थित है। इस गांव में दो पुरास्थल हैं जो इसके भू- राजस्व अधिकार क्षेत्र के अंतर्गत आते हैं।

कोहंद्रावली-1 पुरास्थल गांव से लगभग 1.5 किलोमीटर उत्तर-पूर्व में स्थित है। यह पुरास्थल नावदा गांव को जाने वाले सड़क मार्ग के दायीं तरफ स्थित है। यह पुरास्थल ब्रह्मदत्त सिसिया के खेत में स्थित है। यह पुरास्थल लगभग 5 एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ है तथा 0.50 मीटर तक ऊंचा है। यहां के स्थानीय लोग इसे *खेड़ा* के नाम से जानते हैं। संपूर्ण पुरास्थल को कृषि हेतु समतल बना लिया गया है। इस पुरास्थल के सांस्कृतिक अवशेष उत्तर हड़प्पाकाल से संबंधित हैं (राजेश कुमार 2016: 106)। परंतु वर्तमान सर्वेक्षण से पूर्व मध्यकालीन सांस्कृतिक अवशेष मिले हैं।

30. कोहंद्रावली-2

अवस्थिति: (28°30'35" उ. 76°32'05" पू.)

समुद्र तल से ऊँचाई: 216.103 मी.

समीपवर्ती क्षेत्र: जलोढ़ मैदान

कोहंद्रावली-2 पुरास्थल गांव से लगभग 800 मीटर उत्तर-पूर्व में स्थित है। इसका आंशिक भाग पंचायती बनी तथा शेष श्री राजराम के पुत्र श्री रामनिवास के खेत में स्थित है। यह पुरास्थल लगभग 4 एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ है। यहां के स्थानीय लोग इसे *बाबा समाधि वाला खेड़ा* के नाम से जानते हैं। इस पुरास्थल को कृषि हेतु समतल बना लिया गया है जिससे पुरास्थल बुरी तरह से अस्त व्यस्त हो गया है। इस पुरास्थल के सांस्कृतिक अवशेष उत्तर हड़प्पाकाल से संबंधित हैं (राजेश कुमार 2016: 106) परंतु वर्तमान सर्वेक्षण में पूर्व मध्यकालीन सांस्कृतिक अवशेष ही प्राप्त हुए हैं।

31. कुंजिया

अवस्थिति: (28°32'17" उ. 76°34'38" पू.)

समुद्र तल से ऊँचाई: 220.132 मी.

समीपवर्ती क्षेत्र: रेतीला क्षेत्र

कुंजिया गांव झज्जर से लगभग 12 किलोमीटर दक्षिण-पश्चिम में स्थित है। रैया गांव के बायीं ओर से कुंजिया के लिए सड़क मार्ग निकलता है तथा भिंडावास पक्षी विहार के अंदर से भी एक मार्ग गांव कुंजिया की ओर जाता है। यह गांव साल्हावास से लगभग 23 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। इस गांव में एक प्राचीन पुरास्थल है जो इसके भू-राजस्व अधिकार क्षेत्र के अंतर्गत आता है।

कुंजिया पुरास्थल गांव से लगभग 500 मीटर दक्षिण- पश्चिम में एक ऊंचे रेतीले टीले पर स्थित है। यह पुरास्थल श्री मंगल नंबरदार के पुत्र श्री ओमपाल सिंह के खेत में स्थित है। यह पुरास्थल लगभग 6 एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ है तथा 3 मीटर तक ऊँचा है। यहां के स्थानीय लोग इसे *खेड़ा* के नाम से जानते हैं। संपूर्ण पुरास्थल पर कृषि की जाती है। इस पुरास्थल के सांस्कृतिक अवशेष उत्तर हड़प्पाकाल से संबंधित हैं (राजेश कुमार 2016: 106-107)। परंतु वर्तमान सर्वेक्षण में पूर्व मध्यकालीन सांस्कृतिक अवशेष ही मिले हैं। इस पुरास्थल से मृदभांडों के अतिरिक्त अन्य सांस्कृतिक पुरावशेषों में पकी मिट्टी से निर्मित हॉपस्कोच मिला है।

32. मुंढ़ेरा-1

अवस्थिति: (28°30'04" उ. 76°30'18" पू.)

समुद्र तल से ऊँचाई: 220.98 मी.

समीपवर्ती क्षेत्र: रेतीला क्षेत्र

मुंढ़ेरा गांव झज्जर से लगभग 22 किलोमीटर दक्षिण में स्थित है। यह अकेहड़ी-मदनपुर गांव के बायीं ओर मातनहेल कोसली सड़क मार्ग पर स्थित है। नीलाहेड़ी-लड़ायन सड़क मार्ग से भी यहां पहुंचा जा सकता है। यह गांव साल्हावास से लगभग 9 किलोमीटर दक्षिण पूर्व में स्थित है। इस गांव में पांच प्राचीन पुरास्थल हैं जो इसके भू-राजस्व अधिकार क्षेत्र के अंतर्गत आते हैं।

मुंढ़ेरा-1 पुरास्थल गांव से लगभग 1 किलोमीटर दक्षिण में स्थित है। यह पुरास्थल श्री मनोहर सिंह के पुत्र श्री धरमबीर सिंह तथा गूगन सिंह के पुत्र श्री मक्खन मास्टर के खेत में स्थित है। यह पुरास्थल लगभग 4 एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ है। इस गांव के स्थानीय लोग इसे *हेलेलो खेड़ा* के नाम से जानते हैं। कृषि हेतु संपूर्ण पुरास्थल को समतल बनाया गया है जिससे पुरास्थल पूर्णत अस्त-व्यस्त हो गया है। इस पुरास्थल के सांस्कृतिक अवशेष पूर्व मध्यकाल से संबंधित हैं (राजेश कुमार 2016: 117)। वर्तमान सर्वेक्षण के दौरान भी इस पुरास्थल से पूर्व मध्यकालीन सांस्कृतिक अवशेष मिले हैं।

33. मुंढ़ेरा-2

अवस्थिति: (28°30'38" उ. 76°30'50" पू.)

समुद्र तल से ऊँचाई: 220.05 मी.

समीपवर्ती क्षेत्र: जलोढ़ मैदान

मुंढ़ेरा-2 पुरास्थल गांव से लगभग 100 मीटर पूर्व में कोहंद्रावाली को जाने वाले सड़क मार्ग के बायीं ओर स्थित है। यह पुरास्थल श्री चंदगी के पुत्र श्री रामू के खेत में स्थित है। यह पुरास्थल लगभग 4 एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ है। यहां के स्थानीय लोग इसे *दूधिया वाला खेड़ा* के नाम से जानते हैं। संपूर्ण पुरास्थल पर कृषि की जाती है जिसके कारण पुरास्थल अस्त-व्यस्त हो गया है। इस पुरास्थल के सांस्कृतिक अवशेष पूर्व मध्यकाल से संबंधित हैं (ढाका 1990-91: 21)। वर्तमान सर्वेक्षण के दौरान भी इस पुरास्थल से पूर्व मध्यकालीन सांस्कृतिक अवशेष मिले हैं।

34. मुंढ़ेरा-3

अवस्थिति: (28°31'29" उ. 76°31'13" पू.)

समुद्र तल से ऊँचाई: 221.103 मी.

समीपवर्ती क्षेत्र: रेतीला क्षेत्र

मुंढ़ेरा-3 पुरास्थल गांव से लगभग 1.5 किलोमीटर उत्तर-पश्चिम में स्थित है यह चढ़वाना को जाने वाले सड़क मार्ग के समीप स्थित है। यह पुरास्थल श्री जुगलाल सिंह के पुत्र श्री राजेंद्र सिंह के खेत में स्थित है। यह पुरास्थल लगभग 4 एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ है तथा आसपास के क्षेत्र की अपेक्षा 1 मीटर ऊंचा है। यहां के स्थानीय लोग इसे *अगेथल* के नाम से जानते हैं। संपूर्ण पुरास्थल पर कृषि की जाती है। पुरास्थल को कृषि हेतु समतल बनाया गया है जिसके कारण पुरास्थल अस्त-व्यस्त हो गया है। इस पुरास्थल के सांस्कृतिक अवशेष उत्तर हड़प्पाकाल से संबंधित हैं (राजेश कुमार 2016: 117-118)। वर्तमान सर्वेक्षण के दौरान इस पुरास्थल से उत्तर हड़प्पाकालीन सांस्कृतिक अवशेष मिले हैं।

35. मुंढ़ेरा-4

अवस्थिति: (28°30'04"उ. 76°30'18" पू.)

समुद्र तल से ऊँचाई: 221.041 मी.

समीपवर्ती क्षेत्र: रेतीला क्षेत्र

मुंढ़ेरा-4 पुरास्थल गांव से लगभग 1.2 किलोमीटर दक्षिण में नीलाहेड़ी-लड़ायन सड़क मार्ग के दायीं तरफ स्थित है। यह पुरास्थल श्री बलदेव सिंह के पुत्र श्री रामफल के खेत में स्थित है। यह पुरास्थल लगभग 3 एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ है तथा आसपास के क्षेत्र की अपेक्षा यह लगभग 1 मीटर ऊंचा है। यहां के स्थानीय लोग इस पुरास्थल को *खेड़ा* के नाम से जानते हैं। संपूर्ण पुरास्थल पर कृषि की जाती है जिसके कारण पुरास्थल अस्त-व्यस्त हो गया है। इस पुरास्थल पर पूर्व मध्यकालीन सांस्कृतिक अवशेष मिले हैं।

36. मुंढ़ेरा-5

अवस्थिति: (28°30'02" उ. 76°30'.52" पू.)

समुद्र तल से ऊँचाई: 221.305 मी.

समीपवर्ती क्षेत्र: रेतीला क्षेत्र

मुंढ़ेरा-5 पुरास्थल गांव से लगभग 1 किलोमीटर दक्षिण पूर्व में स्थित है। यह पुरास्थल श्री चंद्र सिंह के पुत्र श्री निवेह सिंह के खेत में स्थित है। यह पुरास्थल लगभग 6 एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ है तथा आसपास के क्षेत्र की अपेक्षा 1 मीटर तक ऊँचा है। नीलाहेड़ी-लड़ायन सड़क-मार्ग से इस पुरास्थल पर पहुंचा जा सकता है। यहां के स्थानीय लोग इसे *खेड़ा* के नाम से जानते हैं। संपूर्ण पुरास्थल पर कृषि की जाती है तथा कृषि हेतु खेत को समतल बनाया गया है जिससे पुरास्थल अस्त-व्यस्त हो गया है। इस पुरास्थल पर पूर्व मध्यकालीन सांस्कृतिक अवशेष मिले हैं। सर्वेक्षण के दौरान इस पुरास्थल से मृदभांडों के अतिरिक्त सांस्कृतिक पुरावशेषों में बहुमूल्य पत्थर जैस्पर का एक महीन टुकड़ा मिला है।

37. न्यौला

अवस्थिति: (28°28'51"उ. 76°35'33" पू.)

समुद्र तल से ऊँचाई: 223 मी.

समीपवर्ती क्षेत्र: जलोढ़ मैदान

न्यौला गांव झज्जर से लगभग 25 किलोमीटर दक्षिण-पश्चिम में स्थित है। झज्जर-कोसली सड़क मार्ग के दायीं ओर सुबाना गांव से न्यौला के लिए सड़क मार्ग निकलता है। यह जैतपुर गांव से लगभग 2

किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। इस गांव में एक प्राचीन पुरास्थल है जो इसके भू-राजस्व अधिकार क्षेत्र के अंतर्गत आता है।

न्यौला पुरास्थल गांव से लगभग 600 मीटर दक्षिण-पश्चिम में स्थित है। यह पुरास्थल श्री राजकरण के पुत्र श्री रामनिवास के खेत में स्थित है। यह पुरास्थल लगभग 4 एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ है। यहां के स्थानीय लोग इसे *खेड़ा* के नाम से जानते हैं। संपूर्ण पुरास्थल पर कृषि की जाती है तथा कृषि कार्यों के कारण पुरास्थल अत्यंत अस्त-व्यस्त हो गया है। धान की खेती हेतु खेत से मिट्टी उठाई गई है जिसके कारण पुरास्थल की दशा अत्यंत बुरी है। इस पुरास्थल पर पूर्व मध्यकालीन सांस्कृतिक अवशेष मिले हैं। इस पुरास्थल से मृदभांडों के अतिरिक्त अन्य सांस्कृतिक पुरावशेषों में पकी मिट्टी से निर्मित हॉपस्कोच मिला है।

38. नीलाहेड़ी

अवस्थिति: (28°29'47" उ. 76°30'05" पू.)

समुद्र तल से ऊँचाई: 220.37 मी.

समीपवर्ती क्षेत्र: जलोढ़ मैदान

नीलाहेड़ी गांव झज्जर से लगभग 23 किलोमीटर दक्षिण-पश्चिम में झज्जर-कोसली सड़क मार्ग के दायीं ओर स्थित है। ढ़ाकला-चांदोल सड़क मार्ग से नीलाहेड़ी पहुंचा जा सकता है। यह साल्हावास से लगभग 6.5 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। इस गांव में एक प्राचीन पुरास्थल है जो इसके भू-राजस्व अधिकार क्षेत्र के अंतर्गत आता है।

नीलाहेड़ी पुरास्थल गांव से लगभग 500 मीटर उत्तर में नीलाहेड़ी- मुंढ़ेरा सड़क मार्ग पर स्थित है। यह पुरास्थल श्री नाथूराम के पुत्र श्री रामकरण के खेत में स्थित है। यह पुरास्थल लगभग 7 एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ है। पुरास्थल चिकनी मिट्टी से युक्त है। संपूर्ण पुरास्थल पर कृषि की जाती है तथा कृषि कार्यों के कारण पुरास्थल अस्त-व्यस्त हो गया है। यहां के स्थानीय लोग इसे *खेड़ा* के नाम से जानते हैं। इस पुरास्थल के सांस्कृतिक अवशेष पूर्व मध्यकाल से संबंधित हैं (राजेश कुमार 2016: 119)। वर्तमान सर्वेक्षण के दौरान भी इस पुरास्थल से पूर्व मध्यकालीन सांस्कृतिक अवशेष मिले हैं। इस पुरास्थल से सर्वेक्षण के दौरान मृदभांडों के अतिरिक्त अन्य सांस्कृतिक पुरावशेषों में पकी मिट्टी से निर्मित बैल की टूटी हुई मृण्मूर्ति मिली है।

39. पटासनी

अवस्थिति: (28°29'54" उ. 76°40'21" पू.)

समुद्र तल से ऊँचाई: 220.174 मी.

समीपवर्ती क्षेत्र: रेतीला क्षेत्र

पटासनी गांव झज्जर से लगभग 18 किलोमीटर दक्षिण में झज्जर-रेवाड़ी सड़क मार्ग पर स्थित है। दादनपुर गांव के बाईं ओर से रास्ता पटासनी के लिए निकलता है। यह साल्हावास से लगभग 30 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। इस गांव में एक प्राचीन पुरास्थल है जो इसके भू-राजस्व अधिकार क्षेत्र के अंतर्गत आता है।

पटासनी पुरास्थल गांव से लगभग 1 किलोमीटर दक्षिण-पश्चिम में स्थित है। यह पुरास्थल श्री गणपत सिंह के पुत्र पूर्व सरपंच श्री गजराज के खेत में स्थित है। यह पुरास्थल लगभग 6 एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ है तथा आसपास के क्षेत्र की अपेक्षा 3 मीटर तक ऊँचा है। यहां के स्थानीय लोग इसे *खेड़ा* के नाम से जानते हैं। संपूर्ण पुरास्थल पर कृषि की जाती है तथा कृषि हेतु खेत को समतल बनाया जा रहा है जिससे पुरास्थल अस्त-व्यस्त हो गया है। इस पुरास्थल के सांस्कृतिक अवशेष उत्तर हड़प्पाकाल से संबंधित हैं (राजेश कुमार 2016: 126)। वर्तमान सर्वेक्षण से भी इस पुरास्थल से उत्तर हड़प्पाकालीन सांस्कृतिक अवशेष मिले हैं। सर्वेक्षण के दौरान इस पुरास्थल से मृदभांडों के अतिरिक्त अन्य सांस्कृतिक पुरावशेषों में बालुका पत्थर पर निर्मित उत्तर हड़प्पाकालीन बांट और लोढ़े मिले हैं।

40. साल्हावास-1

अवस्थिति: (28°27'30" उ. 76°27'28" पू.)

समुद्र तल से ऊँचाई: 210 मी.

समीपवर्ती क्षेत्र: रेतीला क्षेत्र

साल्हावास गांव झज्जर से लगभग 35 किलोमीटर दक्षिण-पश्चिम में स्थित है। झज्जर साल्हावास सड़क मार्ग से यहां पहुंचा जा सकता है। इस गांव में दो प्राचीन पुरास्थल हैं जो इसके भू-राजस्व अधिकार क्षेत्र के अंतर्गत आते हैं।

साल्हावास-1 पुरास्थल गांव से लगभग 1 किलोमीटर पश्चिम में स्थित है। यह पुरास्थल श्री रणजीत सिंह के पुत्र श्री राम कंवर के खेत में स्थित है। यह पुरास्थल लगभग 4 एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ है तथा लगभग 1 मीटर तक ऊंचा है। इस गांव के स्थानीय लोग इसे *खेड़ा* के नाम से जानते हैं। संपूर्ण पुरास्थल पर कृषि की जाती है तथा कृषि हेतु खेत को समतल बनाया गया है जिससे पुरास्थल अस्त-व्यस्त हो गया है। इस पुरास्थल के सांस्कृतिक अवशेष पूर्व मध्यकाल से संबंधित हैं (ढाका 1990-91: 21)। वर्तमान सर्वेक्षण से भी इस पुरास्थल से पूर्व मध्यकालीन सांस्कृतिक अवशेष मिले हैं। सर्वेक्षण के दौरान इस पुरास्थल से मृदभांडों के अतिरिक्त बालुका पत्थर पर निर्मित बांट मिला है।

41. साल्हावास-2

अवस्थिति: (28°27'13"उ. 76°28'48"पू.)

समुद्र तल से ऊँचाई: 200 मी.

समीपवर्ती क्षेत्र: रेतीला क्षेत्र

साल्हावास पुरास्थल-2 गांव से लगभग 1 किलोमीटर पूर्व में स्थित है। यह पुरास्थल श्री उमराव सिंह के पुत्र श्री हवा सिंह तथा मीर सिंह के खेत में स्थित है। यह पुरास्थल लगभग 5 एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ है। यहां के स्थानीय लोग इसे *खेड़ा* के नाम से जानते हैं। संपूर्ण पुरास्थल को कृषि हेतु समतल बनाया गया है जिससे पुरास्थल अस्त-व्यस्त हो गया है। पुरास्थल की दशा अत्यंत बुरी है। इस पुरास्थल के सांस्कृतिक अवशेष पूर्व मध्यकाल से संबंधित हैं (राजेश कुमार 2016: 129)। वर्तमान सर्वेक्षण के दौरान भी इस पुरास्थल से पूर्व मध्यकालीन सांस्कृतिक अवशेष मिले हैं।

42. समासपुर माजरा-1

अवस्थिति: (28°29'20"उ. 76°35'17" पू.)

समुद्र तल से ऊँचाई: 217.018 मी.

समीपवर्ती क्षेत्र: रेतीला क्षेत्र

समासपुर माजरा गांव झज्जर से लगभग 16 किलोमीटर दक्षिण में स्थित है। झज्जर-कोसली सड़क मार्ग के बायीं ओर से कासनी गांव से समासपुर माजरा के लिए सड़क मार्ग निकलता है। यह

साल्हावास से लगभग 16 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। इस गांव में तीन पुरास्थल हैं जो इसके भू-राजस्व अधिकार क्षेत्र के अंतर्गत आते हैं।

समासपुर माजरा-1 पुरास्थल गांव से लगभग 1.2 किलोमीटर उत्तर-पश्चिम में स्थित है। यह पुरास्थल श्री मांगे सिंह के पुत्र श्री करणे तथा श्री हीरालाल के पुत्र श्री भगत सिंह के खेत में स्थित है। यह पुरास्थल लगभग8 एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ है। यहां के स्थानीय लोग इसे *खेड़ा* के नाम से जानते हैं। संपूर्ण पुरास्थल को कृषि हेतु समतल बनाया गया है जिससे पुरास्थल अस्त-व्यस्त हो गया है। इस पुरास्थल के सांस्कृतिक अवशेष उत्तर हड़प्पाकाल से संबंधित हैं (राजेश कुमार 2016: 130)। परंतु वर्तमान सर्वेक्षण के दौरान पूर्व मध्यकालीन सांस्कृतिक अवशेष मिले हैं।

43. समासपुर माजरा-2

अवस्थिति: (28°29'30"उ. 76°34'52"पू.)

समुद्र तल से ऊँचाई: 219.302 मी.

समीपवर्ती क्षेत्र: जलोढ़ मैदान

समासपुर माजरा-2 पुरास्थल गांव से लगभग 2 किलोमीटर उत्तर पश्चिम में स्थित है। यह पुरास्थल श्री दूल्ले राम के पुत्र श्री बख्तावर सिंह के खेत में स्थित है। यह पुरास्थल लगभग 5 एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ है। यहां के स्थानीय लोग इसे *खेड़ा* के नाम से जानते हैं। संपूर्ण पुरास्थल को समतल कर कृषि की जाती है तथा जिसके कारण पुरास्थल अस्त-व्यस्त हो गया है। इस पुरास्थल के सांस्कृतिक अवशेष पूर्व मध्यकाल से संबंधित हैं (ढाका 1990-91: 21-22)। वर्तमान सर्वेक्षण के दौरान भी इस पुरास्थल से पूर्व मध्यकालीन सांस्कृतिक अवशेष मिले हैं।

44. समासपुर माजरा-3

अवस्थिति: (28°30'19"उ. 76°35'52"पू.)

समुद्र तल से ऊँचाई: 221.829 मी.

समीपवर्ती क्षेत्र: रेतीला क्षेत्र

समासपुर माजरा-3 पुरास्थल गांव से लगभग 2.7 किलोमीटर उत्तर में स्थित है यह पुरास्थल श्री प्रभु के पुत्र श्री जगमाल सिंह के खेत में स्थित है। यह पुरास्थल लगभग 7 एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ है तथा

आस-पास के क्षेत्र से लगभग 3 मीटर तक ऊँचा है। यहां के स्थानीय लोग इसे *किराड़ी शहर* अथवा *खेड़ा* के नाम से जानते हैं। संपूर्ण पुरास्थल पर कृषि की जाती है तथा कृषि हेतु पुरास्थल को समतल बनाया गया है जिससे पुरास्थल अस्त-व्यस्त हो गया है। इस पुरास्थल के सांस्कृतिक अवशेष पूर्व मध्यकाल से संबंधित हैं (राजेश कुमार 2016: 131)। वर्तमान सर्वेक्षण से भी इस पुरास्थल से पूर्व मध्यकालीन सांस्कृतिक अवशेष मिले हैं। सर्वेक्षण के दौरान इस पुरास्थल से मृदभांडों के अतिरिक्त बालुका पत्थर पर निर्मित गेंद, पकी मिट्टी का सुपाड़ी आकार का मनका मिला है।

45. सरोला

अवस्थिति: (28°27'36"उ. 76°35'31"पू.)

समुद्र तल से ऊँचाई: 220.98 मी.

समीपवर्ती क्षेत्र: जलोढ़ मैदान

सरोला गांव झज्जर से लगभग 19 किलोमीटर दक्षिण में स्थित है। झज्जर-कोसली सड़क मार्ग से सुबाना के दायीं ओर से सरोला के लिए सड़क मार्ग निकलता है। इस गांव में एक प्राचीन पुरास्थल है जो इसके भू-राजस्व अधिकार क्षेत्र के अंतर्गत आता है।

सरोला पुरास्थल गांव से लगभग 200 मीटर दक्षिण-पश्चिम में स्थित है। यह पुरास्थल श्री रामप्रसाद के पुत्र श्री रोशन सिंह तथा श्री सरदारा के पुत्र श्री धनीराम के खेत में स्थित है। यह पुरास्थल लगभग 3 एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ है। यहां के स्थानीय लोग इसे *खेड़ा* के नाम से जानते हैं। कृषि हेतु संपूर्ण खेत को समतल बनाया गया है तथा कृषि कार्यों के कारण पुरास्थल पूर्णत अस्त-व्यस्त हो गया है। इस पुरास्थल के सांस्कृतिक अवशेष पूर्व मध्यकाल से संबंधित हैं (राजेश कुमार 2016: 131)। वर्तमान सर्वेक्षण के दौरान भी इस पुरास्थल से पूर्व मध्यकालीन सांस्कृतिक अवशेष मिले हैं।

46. सुबाना-1

अवस्थिति: (28°28'20"उ. 76°33'54"पू.)

समुद्र तल से ऊँचाई: 223.138 मी.

समीपवर्ती क्षेत्र: जलोढ़ मैदान

सुबाना गांव झज्जर से लगभग 17 किलोमीटर दक्षिण-पश्चिम में झज्जर-कोसली सड़क मार्ग पर स्थित है। यह साल्हावास से लगभग 12 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। इस गांव में दोप्राचीन पुरास्थल हैं जो इसके भू-राजस्व अधिकार क्षेत्र के अंतर्गत आते हैं।

सुबाना-1 पुरास्थल गांव से लगभग 200 मीटर उत्तर-पश्चिम में स्थित है। यह पुरास्थल श्री मांगेराम के पुत्र श्री दीवान सिंह के खेत में स्थित है। यह पुरास्थल लगभग 7 एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ है। यहां के स्थानीय लोग इसे *खेड़ा* के नाम से जानते हैं। पुरास्थल को कृषि हेतु समतल बना लिया गया है किंतु धान की खेती करने के कारण तथा नहर के पानी की अधिकता के कारण यह पुरास्थल लगभग जलमग्न हो गया है। पुरास्थल की दशा अत्यंत बुरी है। इस पुरास्थल के सांस्कृतिक अवशेष पूर्व मध्यकाल से संबंधित हैं (ढाका 1990-91: 22)। वर्तमान सर्वेक्षण के दौरान भी इस पुरास्थल से पूर्व मध्यकालीन सांस्कृतिक अवशेष मिले हैं।

47. सुबाना-2

अवस्थिति: (28°27'34" उ. 76°33'60"पू.)

समुद्र तल से ऊँचाई: 223.114 मी.

समीपवर्ती क्षेत्र: जलोढ़ मैदान

सुबाना-2 पुरास्थल गांव से लगभग 600 मीटर दक्षिण में नहर के पास स्थित है। यह पुरास्थल श्री रिशाल सिंह के खेत में स्थित है। यह पुरास्थल लगभग 5 एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ है। यहां के स्थानीय लोग इसे *मोजामपुर खेड़ा* के नाम से जानते हैं। पुरास्थल को कृषि हेतु समतल बना लिया गया है। नहर के पानी की अधिकता के कारण यह पुरास्थल लगभग जलमग्न हो गया है। पुरास्थल की दशा अत्यंत बुरी है। इस पुरास्थल के सांस्कृतिक अवशेष पूर्व मध्यकाल से संबंधित हैं (ढाका 1990-91: 22-23)। वर्तमान सर्वेक्षण के दौरान भी इस पुरास्थल से पूर्व मध्यकालीन सांस्कृतिक अवशेष मिले हैं।

48. तुम्बाहेड़ी

अवस्थिति: (28°25'06" उ. 76°32'48"पू.)

समुद्र तल से ऊँचाई: 224.028 मी.

समीपवर्ती क्षेत्र: रेतीला क्षेत्र

तुम्बाहेड़ी गांव कोसली से लगभग 6 किलोमीटर उत्तर-पूर्व में स्थित है। झज्जर कोसली सड़क मार्ग से गांव धरौली से तुम्बाहेड़ी के लिए मार्ग निकलता है। इस गांव में एक प्राचीन पुरास्थल है जो इसके भू-राजस्व क्षेत्र के अंतर्गत आता है।

तुम्बाहेड़ी पुरास्थल गांव से लगभग 500 मीटर उत्तर-पूर्व में रेतीले टीले पर स्थित है। यह पुरास्थल श्री गुमानी पंडित के पुत्र श्री बलवान सिंह के खेत में स्थित है। यह पुरास्थल लगभग 10 एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ है तथा आसपास के क्षेत्र से 3 मीटर तक ऊँचा है। यहां के स्थानीय लोग इसे *खेड़ा* के नाम से जानते हैं। संपूर्ण पुरास्थल पर कृषि की जाती है तथा कृषि हेतु पुरास्थल को समतल बनाया गया है जिससे पुरास्थल अस्त-व्यस्त हो गया है। कटे हुए अनुभाग में लगभग 2 मीटर नीचे तक सांस्कृतिक अवशेष दिखाई देते हैं। इस पुरास्थल के सांस्कृतिक अवशेष पूर्व मध्यकाल से संबंधित हैं (राजेश कुमार 2016: 139)। वर्तमान सर्वेक्षण के दौरान भी इस पुरास्थल से पूर्व मध्यकालीन सांस्कृतिक अवशेष मिले हैं।

अध्याय-4

आवास-योजना

आवास योजना मानवीय गतिविधियों, भू-दृश्य तथा पर्यावरण के बीच अंत:क्रिया का अध्ययन करता है। आवास योजना न केवल आवासीय वितरण का अध्ययन करती है अपितु यह प्राचीन संस्कृतियों की सामाजिक, आर्थिक एवं धार्मिक पक्षों का भी अध्ययन करती है। यह लोगों के प्रवास, जनसंख्या वृद्धि एवम् कमी, वातावरणीय दशाएं और तकनीकी परिवर्तनों को समझने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। प्रस्तुत अध्याय में साल्हावास खंड की आरंभिक हड़प्पाकालीन, उत्तर हड़प्पाकालीन एवं पूर्व मध्यकालीन आवास योजना का अध्ययन किया गया है।

4.1:आवास योजना

आवास योजना का अध्ययन पुरातात्विक शोध में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। एल.एच.मॉर्गन प्रथम शोधकर्ता था जिसने उत्तरी अमेरिका के प्रागैतिहासिक कालीन लोगों के सामाजिक ढांचे को समझने के लिए आवास योजना का अध्ययन किया। अन्य नृतत्वशास्त्री स्टीवर्ड (1937) ने नृवंश विज्ञान की समरूपता, तकनीकी कारक एवं सामाजिक संगठन के आधार पर आवास योजना का अध्ययन किया। जी.आर.विली (1953) ने आवास योजना के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने पुरातत्व में क्षेत्रीय स्वरूप की अवधारणा को लागू किया। विली की व्याख्या प्रागैतिहासिक कालीन वीरू वैली के कालक्रम, आवास योजना तथा सांस्कृतिक संगठन पर आधारित थी। उन्होंने आवास योजना के विषय में कहा है कि आवास योजना वह है जिसमें मानव भू-दृश्य पर किस प्रकार जीवन निर्वाह करता है। यह उल्लेख करता है कि मानव रहन-सहन की व्यवस्था प्रकृति के साथ सामंजस्य रखते हुए किस प्रकार करता है तथा सामुदायिक जीवन व्यतीत करने हेतु किस प्रकार वह अन्य बहुद्देशीय इमारतों का निर्माण करता है। विली के अनुसार किसी पुरातात्विक संस्कृति की आवास योजना प्राकृतिक वातावरण, बस्ती निर्माण की तकनीकी स्तर, विभिन्न संस्कृतियों के पारस्परिक सामाजिक विचार-विमर्श, तथा शासकीय नियंत्रण पर निर्भर करती है (विली 1953: 1)।

वोग्ट (1956: 174-75) ने आवास योजना के अध्ययन के लिए स्थानीय वर्ग पर बल दिया है जैसे व्यक्तिगत घरों के प्रकार, व्यक्तिगत घर का स्वरूप, व्यक्तिगत घरों का अन्य सामुदायिक समूह अथवा गांव के अन्य घरों के साथ समरूपता अथवा संबद्धता, स्थानीय व्यक्तिगत घरों का अन्य स्थानीय स्थापत्य विशेषताओं के साथ संबंध, संपूर्ण गांव की सामुदायिक योजना का स्थानीय

विशेषताओं के साथ संबंध ताकि बड़े पैमाने पर एक समान विशेषताएं बड़े पैमाने परदृष्टिगोचर हो सके। आवास योजना के अध्ययन हेतु वोग्ट ने तीन प्रकार के अध्ययन पर बल दिया है- प्रथम मानव के निवास स्थान के साथ-साथ भौगोलिक विशेषताओं जैसे स्थलाकृति, मृदा, वनस्पति प्रकार, वर्षा क्षेत्र का अध्ययन करना। दूसरा यह है कि वहां के सामाजिक ढांचे के विषय में जानना ताकि मानवीय सामाजिक एवम् राजनीतिक संगठन तथा सांस्कृतिक रीति-रिवाजों, अनुष्ठानों के विषय में जानकारी प्राप्त हो सके। तीसरा किसी पुरास्थल से प्राप्त अवशेषों के आधार पर समय के साथ किसी संस्कृति में आए परिवर्तनों का अध्ययन करना (वोग्ट 1956: 175)।

सैंडर (1956: 116-26) ने मानवीय आवास योजना के वितरण को कृषि व्यवस्था, स्थानीय विशेषताओं एवं पारस्परिक क्षेत्रीय विचार-विमर्श (पारस्परिक आदान-प्रदान) के परिप्रेक्ष्य में परिभाषित किया है। उन्होंने सामुदायिक आवास योजना तथा क्षेत्रीय आवास योजना के स्वरूप में अंतर स्पष्ट किया है। उन्होंने सामुदायिक आवास योजना के अंतर्गत समुदायोंके व्यष्टि प्रकरण अध्ययन, जनसंख्या वितरण, गलियों एवम् गृह विन्यास प्रकार, सामुदायिक संस्थाओं, सामुदायिक स्थानों एवम् संगठनों और सामूहिक जनसंख्या घनत्व का अध्ययन किया जा सकता है। उनके अनुसार क्षेत्रीय आवास योजना के अंतर्गत सामुदायिक आकार, दो समूहों अथवा संस्कृतियों के बीच दूरी, जनसंख्या घनत्व और दो समूहों के बीच प्रतीकात्मक संबंध का अध्ययन किया जाता है।

के.सी. चांग (1958: 299-306) ने आवास योजना और सामूहिक योजना का वर्णन किया है उन्होंने आवास योजना को परिभाषित करते हुए कहा है कि मानवीय आवास भू दृश्य पर भौगोलिक एवं पर्यावरण दशाओं को ध्यान में रखते हुए बसते हैं। उन्होंने सामूहिक योजना को परिभाषित करते हुए कहा है कि किसी स्थल के निवासी विभिन्न ढांचों अथवा स्थापत्य शैली का अनुकरण समूह के रूप में करें और समूह संयुक्त रूप से उस शैली का अनुकरण करें। चांग ने आवास की समय एवम् स्थान के साथ सम्बद्धता, परस्पर सांस्कृतिक अध्ययन, आवास का वितरण और नृवंश विज्ञान संबंधी मॉडल आदि आवास योजना के अध्ययन संबंधित संकल्पना प्रकाश में लाए।

ट्रिगर (1965) ने आवास योजना के अध्ययन हेतु दो दृष्टिकोण बताएं हैं- पारिस्थितिकी तथा समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण। पारिस्थितिकी संबंधी दृष्टिकोण के अनुसार मानव का भू-दृश्य, वातावरण तथा तकनीकी आवास के साथ अध्ययन किया जाता है और समाजशास्त्रीय आवासीय दृष्टिकोण समाज, राजनीति तथा धार्मिक संगठन पर आधारित होता है। उन्होंने आवास योजना को तीन वर्गों में

विभाजित किया हैं- 1. व्यक्तिगत आवास 2. सामूहिक योजना 3. क्षेत्रीय योजना। व्यक्तिगत गृह (आवास), जीवन-निर्वाह व्यवस्था, आवास बनाने हेतु सामग्री, तकनीकी ज्ञान और जलवायु आदि पर निर्भर करती है। सामूहिक योजना किसी एक विशिष्ट समूह द्वारा निर्मित ढांचा या आवास होता है। सामूहिक योजना समूह अथवा समुदाय के आकार एवं उसके स्थायित्व पर मुख्यतः निर्भर करती है। इसके अतिरिक्त पर्यावरणीय दशाओं, जीवन निर्वाह व्यवस्था तथा तकनीकी शैली भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। क्षेत्रीय योजना प्राकृतिक संसाधनों तथा आर्थिक कारकों की उपलब्धता जनसंख्या के वितरण को सुनिश्चित करती है।

अधिकतर आवास योजना संबंधी अध्ययन उपर्युक्त सिद्धांतों पर ही आधारित हैं। विश्व के भिन्न-भिन्न स्थानों पर आवास संबंधित महत्वपूर्ण शोध कार्य भी किए गए हैं जिनमें चांग (1958), ट्रिगर (1965), एडम (1965) और जॉन्स (1961) आदि सम्मिलित हैं। भारत में भी बहुत से शोधकर्ताओं ने आवास योजना संबंधी अध्ययन किया है जिसमें पश्चिमी भारत में धवलीकर और, मध्य भारत में धवलीकर, सौराष्ट्र में पोस्शेल, हुण्णसगी नदी घाटी में पद्दैया, गंगा-यमुना दोआब में बी.बी.लाल, मध्य ताप्ती नदी घाटी में शिंदे, पूर्वी भारत में रे, दक्षिणी गोदावरी नदी घाटी में मूर्ति, पेन्नार नदी घाटी में वेंकटसुभैया, हरियाणा के सोनीपत जिले में ठाकरान, कश्मीर क्षेत्र में शाली आदि शामिल हैं।

इस अध्याय में हरियाणा के झज्जर जिले में साल्हावास खंड की आरंभिक हड़प्पाकालीन, उत्तर हड़प्पाकालीन एवं पूर्व मध्यकालीन आवास योजना का अध्ययन किया गया है। वर्तमान अध्ययन ट्रिगर द्वारा बताए गए तीसरे वर्ग क्षेत्रीय आवास योजना पर मुख्यत: आधारित है। आवास योजना के अध्ययन में कुछ कठिनाइयों का सामना भी करना पड़ा क्योंकि कुछ पुरास्थल कृषि कार्य एवं आधुनिक बस्तियों के बस जाने के कारण अस्त-व्यस्त एवम् कुछ पुरास्थल नष्ट भी हो गए हैं। जिससे उनके बारे में जानकारी एकत्रित करने में कठिनाइयां हुई। कुछ पुरास्थल बहु-सांस्कृतिक क्रम को प्रदर्शित करते हैं। अतः इस कारण प्राचीन आवासों का यथार्थ क्षेत्रफल का पता लगा पाना अत्यंत कठिन है। विभिन्न संस्कृतियों के आकार एवं उनका वितरण मुख्यतः मृदभांड व अन्य सांस्कृतिक सामग्री पर आधारित है। केवल सर्वेक्षण के आधार पर किसी पुरास्थल का सांस्कृतिक क्रम, यथार्थ आकार एवं किसी विशिष्ट सांस्कृतिक काल का यथार्थ आकार बता पाना अत्यंत मुश्किल कार्य है। यद्यपि एकत्रित आंकड़ों व जानकारी के आधार पर आवास योजना को समझने का प्रयास किया गया

है।

4.1.1: आवास योजना का वितरण

सर्वेक्षण के दौरान साल्हावास खंड की कुल 48 पुरास्थलों का दौरा किया। साल्हावास खंड में सर्वप्रथम निवास करने वाली संस्कृति आरंभिक हड़प्पाकालीन संस्कृति थी। इन संस्कृतियों की आवास योजना मुख्यतः बाढ़ निर्मित उपजाऊ मैदान, अनुकूल वातावरण दशाएं, नदी प्रवाह तंत्र, प्राकृतिक संसाधनों अथवा खनिजों की उपलब्धता आंतरिक एवं बाह्य व्यापारिक मार्ग पर निर्भर करती है। ये सभी कारक आवास योजना के उदय एवं विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। आरंभिक हड़प्पाकालीन, उत्तर हड़प्पाकालीन एवं पूर्व मध्यकालीन संस्कृतियों की आवास योजना उपजाऊ एवं कृषि योग्य भूमि में स्थित थी। इस क्षेत्र में अनुकूल परिस्थितियाँ होने के कारण आरंभिक हड़प्पा संस्कृति के प्रमाण मिले हैं। यह क्षेत्र उपजाऊ भूमि तथा सिंचाई के लिए जल की उपलब्धता से युक्त था। इस क्षेत्र के दक्षिण एवं उत्तर पूर्व में स्थित अरावली की पहाड़ियों में खनिज तत्व मौजूद थे।

तालिका: 4.1 साल्हावास खंड में सांस्कृतिक क्रम

सांस्कृतिक काल	पुरास्थल
आरंभिक हड़प्पाकाल	01
उत्तर हड़प्पाकाल	05
पूर्व मध्यकाल	45

4.1.1.1: क्षेत्रफल के आधार पर आवासीय वितरण

साल्हावास खंड में केवल एक आरंभिक हड़प्पाकालीन पुरास्थल है। यह पुरास्थल रेतीले क्षेत्र में स्थित हैं। यह पुरास्थल बहु-सांस्कृतिक है। ढ़ाकला-3 पुरास्थल आरंभिक हड़प्पाकाल, उत्तर हड़प्पाकाल तथा पूर्व मध्यकालीन संस्कृति वाला पुरास्थल है। इस पुरास्थल के बहु-सांस्कृतिक होने के कारण इसकी आरंभिक हड़प्पा संस्कृति के यथार्थ आकार को जान पाना अत्यंत कठिन है। ढ़ाकला-3 पुरास्थल का अनुमानित आकार 3 हेक्टेयर है।

तालिका: 4.2 आरंभिक हड़प्पाकालीन संस्कृति के आवासीय आंकड़े

(अनुमानित आवासीय आंकड़े)

कुल पुरास्थल	01
ज्ञात आकार के पुरास्थल	00
ज्ञात आकार के पुरास्थलों का क्षेत्र	00 हेक्टेयर
अज्ञात आकार के पुरास्थल	01
अज्ञात आकार के पुरास्थलों का अनुमानित क्षेत्र	03 हेक्टेयर
पुरास्थल का औसत आकार	03 हेक्टेयर
कुल पुरास्थलों का अनुमानित क्षेत्र	03 हेक्टेयर

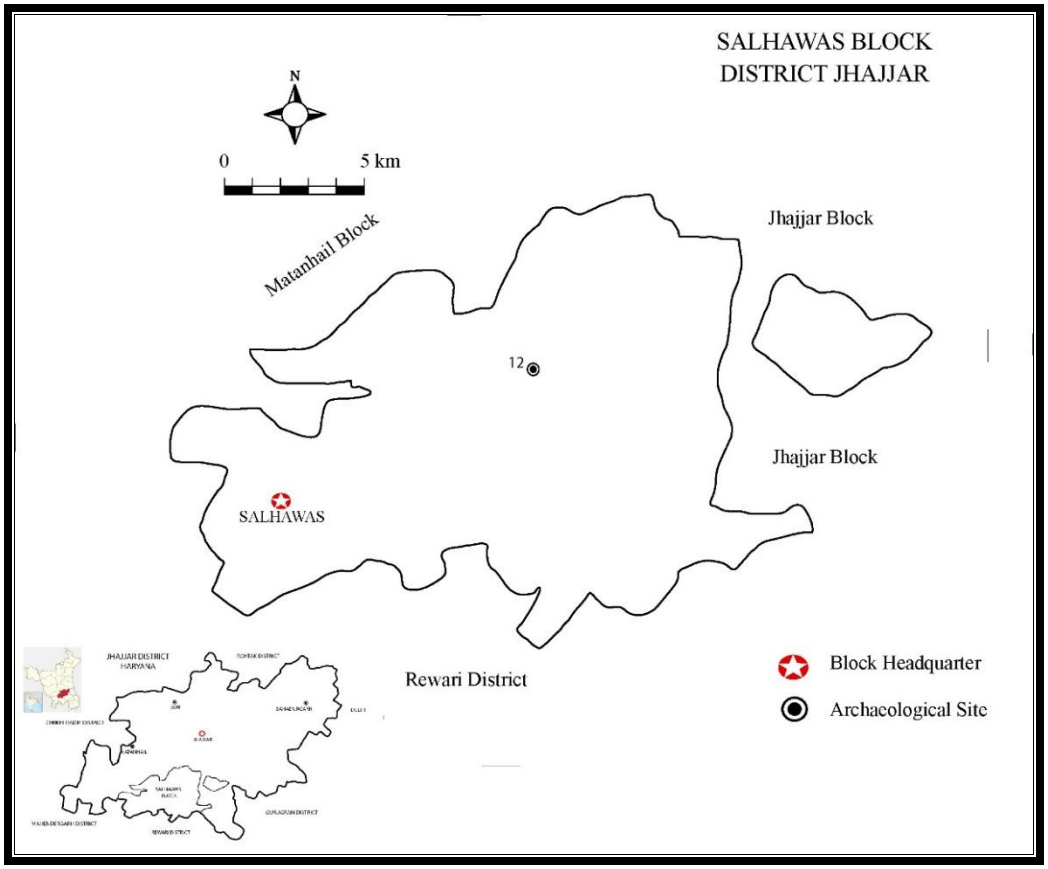

चित्र: 4.1 साल्हावास खंड के आरंभिक हड़प्पाकालीन पुरास्थल

साल्हावास खंड में कुल 5 उत्तर हड़प्पा कालीन पुरास्थल हैं जिनमें से तीन पुरास्थल (ढ़ाकला-1, मुंढ़ेरा-3, पटासनी) **एकाकी संस्कृति** से संबंधित हैं। इन तीनों पुरास्थलों पर केवल उत्तर हड़प्पाकालीन सांस्कृतिक अवशेष फैले हुए हैं जबकि अन्य दो पुरास्थल बहु-सांस्कृतिक कालीन हैं। इनमें से कासनी-1 पुरास्थल पर उत्तर हड़प्पाकालीन एवम् पूर्व मध्यकालीन तथा ढ़ाकला-3 पुरास्थल पर आरंभिक हड़प्पाकाल, उत्तर हड़प्पाकाल और पूर्व मध्यकालीन संस्कृतियों के सांस्कृतिक अवशेष मिले हैं। अतः बहु सांस्कृतिक क्रम के कारण यह पता लगाना अत्यंत कठिन है कि उत्तर हड़प्पाकालीन संस्कृति का यथार्थ आकार कितना था। दो उत्तर हड़प्पाकालीन पुरास्थलों का यथार्थ आकार 6 हेक्टेयर क्षेत्र है। इससे प्रमाणित होता है कि उत्तर हड़प्पाकालीन लोग छोटे-छोटे गांव में निवास करते थे। इन पुरास्थलों का अनुमानित आकार 10.5 हेक्टेयर है तथा प्रत्येक आवास का औसत आकार 2.1 हेक्टेयर है।

तालिका: 4.3 उत्तर हड़प्पाकालीन संस्कृति के आवासीय आंकड़े

(अनुमानित आवासीय आंकड़े)

कुल पुरास्थल	05
ज्ञात आकार के पुरास्थल	03
ज्ञात आकार के पुरास्थलों का क्षेत्र	06 हेक्टेयर
अज्ञात आकार के पुरास्थल	02
अज्ञात आकार के पुरास्थलों का अनुमानित क्षेत्र	4.5 हेक्टेयर
पुरास्थल का औसत आकार	2.1 हेक्टेयर
कुल पुरास्थलों का अनुमानित क्षेत्र	10.5 हेक्टेयर

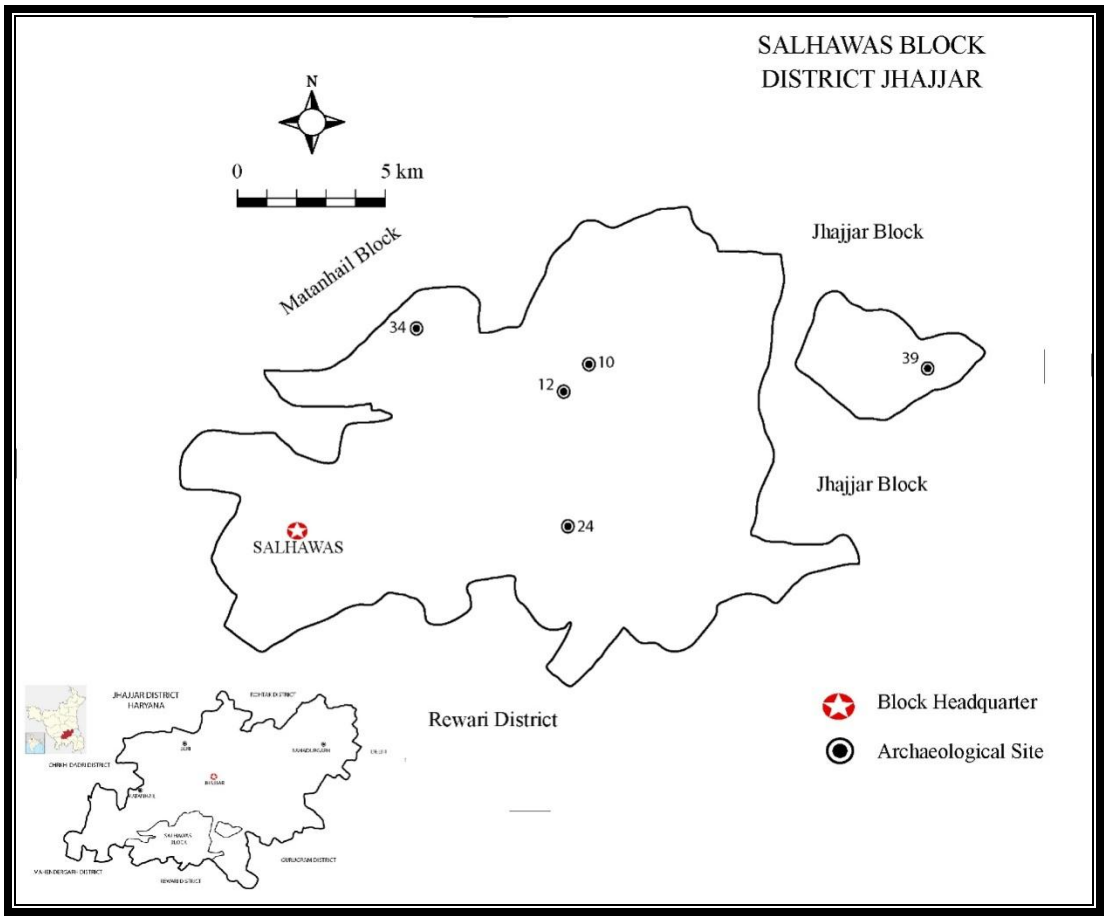

चित्र: 4.2 साल्हावास खंड के उत्तर हड़प्पाकालीन पुरास्थल

साल्हावास खंड में पूर्व मध्यकालीन संस्कृति से संबंधित 45 पुरास्थल हैं। इस काल के दौरान लगभग सभी आवास ग्रामीण स्वरूप के हैं। ये पुरास्थल छोटे आकार के हैं केवल दो पुरास्थल बहु सांस्कृतिक हैं जो लगभग 4.5 हेक्टेयर क्षेत्र में फैले हुए हैं। प्रत्येक पुरास्थल का औसत आवासीय क्षेत्र 2.5 हेक्टेयर है। इन पुरास्थलों का अनुमानित आवासीय क्षेत्र और ज्ञात पुरास्थलों का आकार 112.5 हेक्टेयर है। पूर्व मध्यकालीन संस्कृति के आवासीय आंकड़े नीचे दिए गए हैं:

तालिका: 4.4 पूर्व मध्यकालीन संस्कृति के आवासीय आंकड़े

(अनुमानित आवासीय आंकड़े)

कुल पुरास्थल	45
ज्ञात आकार के पुरास्थल	45
ज्ञात आकार के पुरास्थलों का क्षेत्र	112.5 हेक्टेयर
अज्ञात आकार के पुरास्थल	00
अज्ञात आकार के पुरास्थलों का अनुमानित क्षेत्र	00 हेक्टेयर
पुरास्थल का औसत आकार	2.5 हेक्टेयर
कुल पुरास्थलों का अनुमानित क्षेत्र	112.5 हेक्टेयर

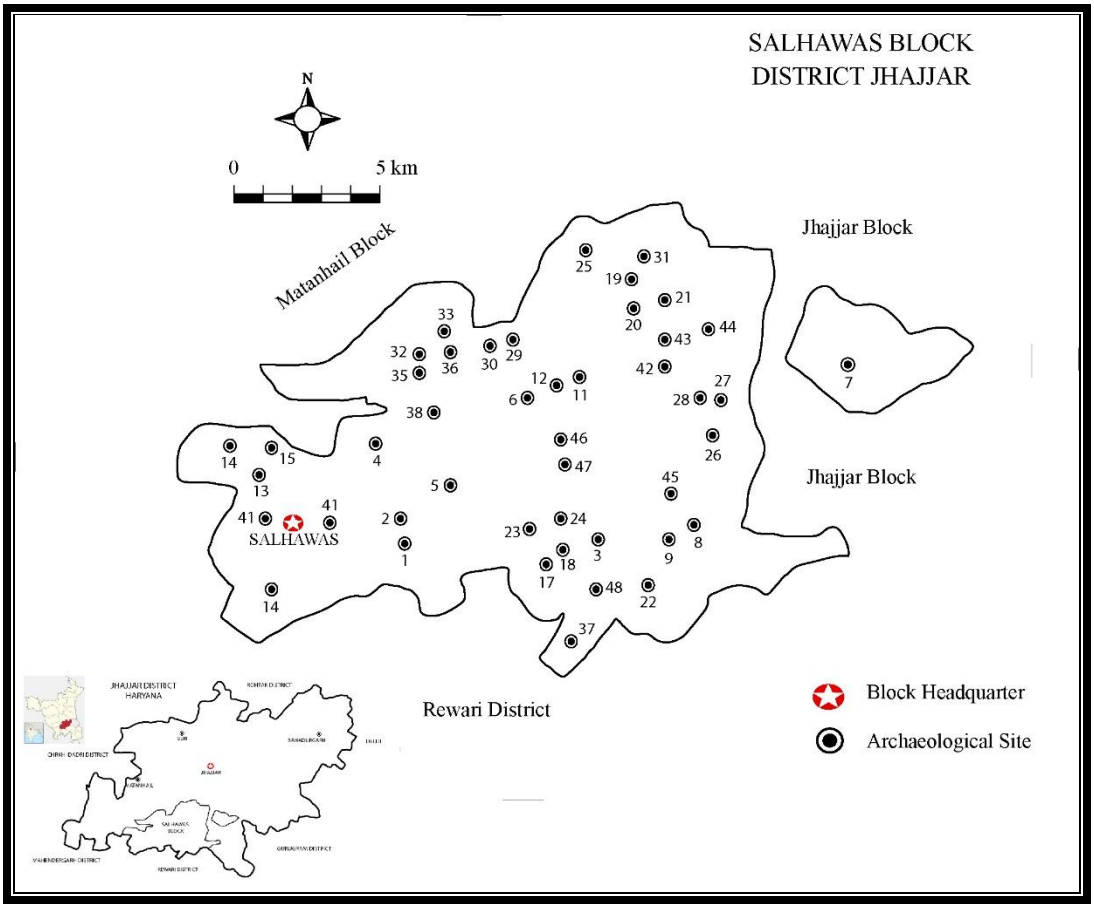

चित्र: 4.3 साल्हावास खंड के पूर्व मध्यकालीन पुरास्थल

4.1.1.2.: मृदा क्षेत्र के आधार पर आवासीय वितरण

साल्हावास खंड की आरंभिक हड़प्पाकालीन, उत्तर हड़प्पाकालीन एवं पूर्व मध्यकालीन संस्कृतियों के लोग रेतीले क्षेत्र में निवास करते थे। इन संस्कृतियों के 71% आवास रेतीले क्षेत्र में स्थित है। आरंभिक एवं उत्तर हड़प्पाकालीन आवास थार मरुस्थल की उत्तर दिशा सीमा में स्थित हैं। कोई भी आरंभिक एवं उत्तर हड़प्पाकालीन आवास पूर्ण रूप से थार मरुस्थल में स्थित नहीं हैं। केवल 29% आवास जलोढ़ मैदान में स्थित हैं।

साल्हावास खंड के आरंभिक हड़प्पाकालीन पुरास्थल ढ़ाकला-3 रेतीले क्षेत्र में स्थित हैं। साल्हावास खंड के उत्तर हड़प्पाकालीन आवास रेतीले क्षेत्र में स्थित हैं। सर्वेक्षण में यह पाया गया कि कुल 5 पुरास्थल में से (उतर हड़प्पाकालीन आवास) 4 पुरास्थल (80%) रेतीले क्षेत्र में स्थित हैं जो लगभग 9 हेक्टेयर क्षेत्र में फैले हुए हैं। रेतीले क्षेत्र में फैले हुए आवासों का औसत क्षेत्र 8.4 हेक्टेयर है। पूर्व मध्यकालीन संस्कृति के 31 पुरास्थल रेतीले क्षेत्र में स्थित हैं। जो लगभग 89 हेक्टेयर (9%) क्षेत्र में फैले हुए हैं। पूर्व मध्यकालीन संस्कृति के पुरास्थलों का औसत आवास क्षेत्र 77.5 हेक्टेयर (69%) है।

तीनों संस्कृतियों की तुलनात्मक अध्ययन से पता चलता है कि आरंभिक हड़प्पाकाल के पुरास्थल रेतीले क्षेत्र में स्थित थे जबकि उत्तर हड़प्पाकाल में 80% आवास रेतीले क्षेत्र में स्थित थे। जो पूर्व मध्यकाल में इन आवासों की संख्या घटकर 69% हो गई। अत: आरंभिक हड़प्पाकाल से लेकर पूर्व मध्यकाल में रेतीले क्षेत्र में आवासों की संख्या में गिरावट देखी जा सकती है। इसके अतिरिक्त उत्तर हड़प्पाकाल की अपेक्षा पूर्व मध्यकाल में रेतीले क्षेत्र में स्थित आवासों के कुल क्षेत्र में भी कमी परिलक्षित हुई है।

तालिका: 4.5 आवासों का रेतीले क्षेत्र में वितरण

सांस्कृतिक काल	आवासों की संख्या	आवासों का कुल क्षेत्र	औसत आकार	औसत क्षेत्र
आरंभिक हड़प्पाकाल	1 (100%)	3 हेक्टेयर (100%)	3	3 हेक्टेयर (100%)
उत्तर हड़प्पाकाल	4 (80%)	9 हेक्टेयर (86%)	2.1	8.4 हेक्टेयर (80%)
पूर्व मध्यकाल	31(69%)	89 हेक्टेयर (79%)	2.5	77.5 हेक्टेयर (69%)

इस सर्वेक्षण से यह ज्ञात हुआ कि आरंभिक हड़प्पाकाल से संबंधित कोई भी पुरास्थल जलोढ़ मैदान में स्थित नहीं है। उत्तर हड़प्पाकालीन केवल एक पुरास्थल (कासनी-1) जलोढ़ मैदान में स्थित है। उत्तर हड़प्पाकालीन यह आवास-स्थल लगभग 1.5 हेक्टेयर क्षेत्र (14%) में फैला हुआ है तथा इस आवास का औसत आकार 2.1 हेक्टेयर है तथा औसत क्षेत्र 2.1 हेक्टेयर (20%) है। पूर्व मध्यकालीन 14 आवास स्थल जलोढ़क मैदान में स्थित हैं। ये आवास कुल 23.5 हेक्टेयर क्षेत्र (21%) में फैले हुए हैं। जलोढ़ मैदान में स्थित पूर्व मध्यकालीन आवासों का औसत आकार 2.5 हेक्टेयर है तथा इन आवासों का औसत आकार 35 हेक्टेयर क्षेत्र (31%)है।

उपर्युक्त तीनों संस्कृतियों के तुलनात्मक अध्ययन से स्पष्ट है कि पूर्व मध्यकाल में जलोढ़ मैदान में स्थित आवासों की संख्या में वृद्धि हुई तथा आवासों के कुल क्षेत्र, औसत आकार एवं आवासों के क्षेत्र में भी वृद्धि परिलक्षित होती है। आरंभिक हड़प्पाकाल में जलोढ़ मैदान में स्थित आवासों की संख्या शून्य थी जबकि उत्तर हड़प्पाकाल में आवासों की संख्या एक थी और मध्यकाल के समय यह बढ़कर 14 हो गई थी। इसी प्रकार उत्तर हड़प्पाकाल के दौरान आवास का कुल क्षेत्र 1.5 हेक्टेयर था जबकि पूर्व मध्यकाल में यह बढ़कर 23.5 हेक्टेयर हो गया। उत्तर हड़प्पाकाल के दौरान आवास का औसत आकार 2.1 हेक्टेयर था जबकि पूर्व मध्यकाल में यह बढ़कर 35 हेक्टेयर हो गया।

तालिका: 4.6 आवासों का जलोढ़ मैदान में वितरण

सांस्कृतिक काल	आवासों की संख्या	आवासों का कुल क्षेत्र	औसत आकार	औसत क्षेत्र
आरंभिक हड़प्पाकाल	00	00 हेक्टेयर	00	00हेक्टेयर
उत्तर हड़प्पाकाल	1 (20%)	1.5 हेक्टेयर (14%)	2.1	2.1 हेक्टेयर (20%)
पूर्व मध्यकाल	14 (31%)	23.5 हेक्टेयर (21%)	2.5	35 हेक्टेयर (69%)

4.1.1.3: पुरास्थल के स्वरूप के आधार पर आवास का वितरण

पुरास्थलों के आकार के आधार पर उनका स्वरूप निर्धारण किया गया है। पुरास्थल कई प्रकार के होते हैं जैसे- कार्यशाला, शवाधान,आवासीय पुरास्थल, कैंप प्रकार के पुरास्थल आदि। पुरास्थलों के आकार के आधार पर उन्हें नगर, कस्बा, बड़े गांव, छोटे गांव आदि की श्रेणी में बांटा गया है। साल्हावास खंड में बड़े कस्बों के अतिरिक्त कुछ बड़े गांव भी अस्तित्व में आए। ये कस्बे एवं बड़े गांव वस्तुओं का निर्माण कर क्षेत्रीय केंद्र की भूमिका निभाते थे।

साल्हावास खंड में आरंभिक हड़प्पाकाल का एक पुरास्थल है जो लगभग 3 हेक्टेयर क्षेत्र में फैला हुआ है। यह पुरास्थल छोटे गांव की श्रेणी में आता है। उत्तर हड़प्पाकाल के दौरान कुल 5 पुरास्थल थे। ये पांच आवास ऐसे हैं जिनका आकार 5 हेक्टेयर क्षेत्र से कम है। इनमें से ढ़ाकला-3 और कासनी-1 ऐसे आवास स्थल हैं जो बहु सांस्कृतिक हैं। सर्वेक्षण के दौरान इन आवासों से बड़ी संख्या में पूर्व मध्यकालीन सांस्कृतिक अवशेष मिले हैं जबकि उत्तर हड़प्पाकाल के सांस्कृतिक अवशेष सीमित संख्या में ही मिले हैं। इन पुरास्थलों का आकार 5 हेक्टेयर क्षेत्र से भी कम है। यह संभव है कि उत्तर हड़प्पा काल के समय इनका आकार पूर्व मध्यकाल की तुलना में और भी कम है। तीन पुरास्थल ढ़ाकला-1, मुंढ़ेरा-3 और पटासनी केवल उत्तर हड़प्पाकालीन हैं जिनका आकार 5 हेक्टेयर क्षेत्र से भी कम है। इससे स्पष्ट है कि ये आवास छोटे गांव के रूप में बसे हुए थे।

पूर्व मध्यकाल के कुल 45 पुरास्थल हैं जिनमें से चांदपुर 6 हेक्टेयर और खुड्डन-2 पुरास्थल 8 हेक्टेयर क्षेत्र में फैले हुए हैं। इन दोनों आवासों का आकार 5 हेक्टेयर क्षेत्र से अधिक है। अतः ये आवास बड़े गांव के रूप में बसे हुए थे। 43 पुरास्थलों का आकार 5 हेक्टेयर क्षेत्र से भी कम है। ये आवास छोटे गांव के रूप में बसे हुए थे। साल्हावास खंड में पूर्व मध्यकाल में केवल 4.44% बड़े गांव एवं 95.55% छोटे गांव अस्तित्व में थे।

तालिका: 4.7 आवासों के स्वरूप का वितरण

सांस्कृतिक काल	**नगर (25-50 हेक्टेयर)**	**कस्बा (10-25 हेक्टेयर)**	**बड़े गांव (5-9.9 हेक्टेयर)**	**छोटे गांव (0-4.99 हेक्टेयर)**
आरंभिक हड़प्पाकाल	00	00	00	01 (100%)
उत्तर हड़प्पाकाल	00	00	00	05 (100%)
पूर्व मध्यकाल	00	00	02 (4.44 %)	45 (95.55%)

4.1.1.4: जनसंख्या के आधार पर आवासीय वितरण

जनसंख्या ज्ञात करने के लिए समय-समय पर भिन्न-भिन्न शोधकर्ताओं (वेलोस 1960, एडम 1965) ने विविध पद्धतियां अपनाई हैं। शोधकर्ताओं द्वारा किए गए अध्ययनों से स्पष्ट है कि किसी आवास की जनसंख्या मुख्यतः आवास क्षेत्र, मानवीय शारीरिक अवशेषों, नृवंश विज्ञान के अध्ययन, पारिस्थितिकी एवं जनसंख्या संबंधी दशाओं, मानव द्वारा प्रयुक्त मृदभांड एवं अन्य सांस्कृतिक अवशेषों, भोज्य सामग्री के अवशेषों आदि पर निर्भर करती है। अध्ययन क्षेत्र की जनसंख्या भी आवास क्षेत्र के आकार पर निर्भर करती है। हरियाणा में 1971 में 59.40 लोग प्रति वर्ग हेक्टेयर में निवास करते थे (स्टैटिसटिकल एब्स्ट्रेक्ट ऑफ हरियाणा 1971-72)। हड़प्पाकालीन एवं पूर्व मध्यकाल की जनसंख्या को ज्ञात करने के लिए इसी आंकलन का प्रयोग किया गया है।

साल्हावास खंड में आरंभिक हड़प्पाकाल से संबंधित एक पुरास्थल ढ़ाकला-3 है। आरंभिक हड़प्पाकाल के दौरान इस पुरास्थल पर आवासित अनुमानित जनसंख्या 178.2 थी। यह पुरास्थल

रेतीले क्षेत्र में स्थित हैं। इस पुरास्थल की औसत जनसंख्या 178.2 थी। उत्तर हड़प्पाकाल में कुल अनुमानित जनसंख्या 623.7 थी। उत्तर हड़प्पाकालीन कुल 5 पुरास्थल हैं तथा उनकी कुल अनुमानित जनसंख्या 623.7 में से 534.6 (86%) लोग रेतीले क्षेत्र तथा 89.1 (14%) लोग जलोढ़ मैदान में निवास करते थे। प्रत्येक पुरास्थल की औसत जनसंख्या 124.74 थी। इस क्षेत्र में पूर्व मध्यकालीन 45 पुरास्थलों पर 6682.5 लोग बसे हुए थे। कुल अनुमानित जनसंख्या में से 5286.6 (89%) लोग रेतीले क्षेत्र में तथा 1395.9 (21%) लोग जलोढ़ मैदान में निवास करते थे। प्रत्येक पुरास्थल की औसत जनसंख्या 148.5 थी।

तालिका: 4.8 आवासों की जनसंख्या का वितरण

सांस्कृतिक काल	**कुल जनसंख्या**	**जलोढ़ मैदान में जनसंख्या**	**रेतीले क्षेत्र में जनसंख्या**	**आवास औसत जनसंख्या**
आरंभिक हड़प्पाकाल	178.2	00	100%	178.2
उत्तर हड़प्पाकाल	623.7	89.1 (14%)	534.6 (86%)	124.74
पूर्व मध्यकाल	6682.5	1395.9 (21%)	5286.6 (89%)	148.5

पर्सन (1971) और ब्लेंटेन (1972) ने मैक्सिको की घाटी में आवास योजना को जनसंख्या आधारित व्यवस्था पर वर्गीकृत किया था। भारत में माखनलाल (1982) ने इसी व्यवस्था को कुछ परिवर्तनों के साथ गंगा-यमुना दोआब में, शिंदे (1984) ने मध्य ताप्ती-घाटी में तथा परमार ने हरियाणा के भिवानी जिले में (2012) प्रयुक्त किया था। इन सभी शोधकर्ताओं के अध्ययन ने जनसंख्या आधारित आवास योजना के भिन्न-भिन्न वर्गों पर प्रकाश डाला। हालांकि अध्ययन क्षेत्र में पिछली पद्धतियों को कुछ परिवर्तनों के साथ अपनाया गया क्योंकि यह अर्ध शुष्क वाला क्षेत्र है जिसमें मौसमी नदियां एवं रेतीले टीले भी विद्यमान हैं। इन सभी कारकों के कारण इस क्षेत्र में बड़े आवास नहीं बन

पाए। ये जलवायु की दशाएं बड़े आवासों के लिए उपयुक्त वातावरण एवं पारिस्थितिकी नहीं प्रदान कर सके जिसके परिणामस्वरूप बड़े आवास अस्तित्व में नहीं आए। इसलिए इस अध्ययन क्षेत्र को ध्यान में रखते हुए जनसंख्या को जानने हेतु वर्गीकरण किया गया है। आवासों को चार वर्गों में विभाजित किया गया है। क्षेत्रीय केंद्र इस श्रेणी के अंतर्गत उन आवासों को सम्मिलित किया गया है जिनकी जनसंख्या 500 से अधिक है। उप-क्षेत्रीय केंद्र इस श्रेणी में उन आवासों को सम्मिलित किया गया है जिनके प्रत्येक आवास की जनसंख्या 250 से 500 के मध्य है। गांव के अंतर्गत वो आवासों आते हैं जिनके प्रत्येक आवास की जनसंख्या 100 से 250 के मध्य है। झोपड़ियां या छोटे गांव के अंतर्गत उन आवासों को सम्मिलित किया जाता है जिसमें प्रत्येक आवास की जनसंख्या 100 से कम है।

आरंभिक हड़प्पाकाल के समय ढ़ाकला-3 आवास की जनसंख्या 100 से 250 के मध्य थी। इसलिए दोनों ही आवास गांव की श्रेणी के अंतर्गत रखे गए हैं। उत्तर हड़प्पाकाल में कासनी-1 और मुंढ़ेरा-3 के आवास की जनसंख्या 100 से कम थी। अतः ये आवास स्थल छोटे गांव की श्रेणी में आते हैं। जबकि ढ़ाकला-3 और पटासनी आदि की जनसंख्या 100 से 250 के मध्य होने के कारण ये गांव की श्रेणी में आते हैं। पूर्व मध्यकालीन संस्कृति के समय 14 आवासों की जनसंख्या 100 से कम है इसलिए उन आवासों को छोटे गांव की श्रेणी में रखा गया है। 29 आवास ऐसे हैं जिनकी प्रत्येक की जनसंख्या 100 से 250 के मध्य है जिन्हें बड़े गांव की श्रेणी के अंतर्गत सम्मिलित किया गया है तथा दो आवास ऐसे भी हैं जिनकी जनसंख्या (बाबेपुर और खुड्डन-2) 250 से 500 के मध्य हैं जो क्षेत्रीय केंद्र की श्रेणी में आते हैं।

तालिका: 4.9 जनसंख्या आधारित आवास योजना का वितरण

सांस्कृतिक काल	**क्षेत्रीय केंद्र (500 से अधिक)**	**उप-क्षेत्रीय केंद्र (250-500)**	**गांव (100-250)**	**छोटे गांव (100 से कम)**
आरंभिक हड़प्पाकाल	00	00	01	00
उत्तर हड़प्पाकाल	00	00	03	02
पूर्व मध्यकाल	00	02	29	14

अध्याय-5

सांस्कृतिक सामग्री

सांस्कृतिक सामग्री मानवीय अतीत के सामाजिक एवं आर्थिक पक्ष के पुनर्निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। सभी प्रकार की सांस्कृतिक सामग्री मानवीय समाज के दैनिक क्रियाकलापों को उजागर करने में सहायक हैं तथा यह निर्माताओं की कार्य कुशलता पर भी प्रकाश डालती है। अलग-अलग प्रकार के पुरावशेष मानवीय समाज में आए परिवर्तनों का प्रतिनिधित्व करते हैं एवं उनमें समानता को भी उजागर करते हैं। ये पुरावशेष संस्कृति के विभिन्न चरणों के उदय, विकास एवं पतन को समझने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। सांस्कृतिक पुरावशेष किसी संस्कृति विशेष के स्वरूप को जानने के लिए महत्वपूर्ण स्रोत हैं। प्रागैतिहासिक एवं आद्य एतिहासिक काल के सामाजिक जीवन, जीवन निर्वाह व्यवस्था, आर्थिक व्यवस्था आदि के विषय में जानकारी प्राप्त करने के लिए पूर्णत सांस्कृतिक सामग्री पर निर्भर रहना पड़ता है। सांस्कृतिक सामग्री किसी संस्कृति विशेष में होने वाले परिवर्तनों को समझने के लिए उस स्थल के पर्यावरण, कच्ची सामग्री की उपलब्धता, तकनीकी पर भी प्रकाश डालती है। अत: सांस्कृतिक पुरावशेष प्राचीन संस्कृति के विश्वसनीय स्रोत हैं जो पुरातात्विक शोध में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वर्तमान सर्वेक्षण से मृदभांड एवं अन्य पुरावशेष प्राप्त हुए हैं। मृदभांड किसी प्राचीन संस्कृति अथवा सभ्यता के सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक तथा आर्थिक पक्षों पर प्रकाश डालते हैं। ये प्रागैतिहासिक एवं आद्य एतिहासिक काल के पुनर्निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। मृदभांडों के माध्यम से पुरातत्ववेता प्राचीन संस्कृति के विभिन्न रहस्यों को उजागर करता है। सर्वेक्षण के दौरान पुरास्थलों से बड़ी मात्रा में मृदभांड एकत्रित किए हैं जिन्होंने शोधकर्ता को विभिन्न सांस्कृतिक कालों के निर्धारण में सहायता की। साल्हावास खंड में मुख्यतः आरंभिक हड़प्पाकाल, उत्तर हड़प्पाकाल तथा पूर्व मध्यकालीन मृदभांड प्राप्त हुए हैं। सर्वेक्षण में मिले मृदभांड इस क्षेत्र के मृदभांडों की विशेषताएं एवं सांस्कृतिक क्रम को उचित परिप्रेक्ष्य में दर्शाते हैं। वर्तमान अध्ययन मुख्यतः आद्य एतिहासिक काल एवं पूर्व मध्यकाल के मृदभांडों के ऊपर आधारित है। सर्वेक्षण में मिले मृदभांडों के आधार पर प्रत्येक सांस्कृतिक काल के विभिन्न चरणों के मृदभांडों की विशेषताओं पर प्रकाश डाला गया है। सर्वेक्षण में मिले मृदभांडों के सांस्कृतिक क्रमानुसार उनके रेखाचित्र भी दर्शाए गए हैं। सर्वेक्षण के दौरान एकत्रित मृदभांडों का उत्खनित पुरास्थलों बादली और लोहट के साथ तुलनात्मक अध्ययन भी किया गया है।

5.1.1: आरंभिक हड़प्पाकालीन मृदभांड-परंपरा

आरंभिक हड़प्पाकालीन मृदभांड परंपरा को दो चरणों में विभाजित किया गया है- पूर्वी हाकड़ा मृदभांड परंपरा और सोथी-सीसवाल मृदभांड परंपरा। पूर्वी हाकड़ा मृदभांड परंपरा सरस्वती-दृषद्वती नदी की प्रथम मृदभांड परंपरा है और इसका विकसित रूप सोथी-सीसवाल मृदभांड परंपरा में देखा जा सकता है।

इस सर्वेक्षण के दौरान साल्हावास खंड से पूर्वी हाकड़ा मृदभांड परंपरा के कुछ मृदभांड मिले हैं जिनमें से चिपकवाँ अलंकरण वाले मृदभांड (Mud Appliqué Ware), रिजर्व प्रलेप वाले मृदभांड (Reserved Slipped Ware) तथा हैंडल (Handle) भी मिले हैं। ये मृदभांड ढ़ाकला-3 पुरास्थल से प्राप्त हुए हैं| संभवतः हाकड़ा मृदभांड परंपरा भी इस क्षेत्र में प्रचलित रही होगी।

झज्जर जिले में आरंभिक हड़प्पाकाल की सोथी-सीसवाल संस्कृति के सांस्कृतिक अवशेष बहादुरगढ़ खंड, झज्जर खंड और बेरी खंड से प्रतिवेदित हैं। उपर्युक्त वर्णित खंडों से कालीबंगा-1 गढ़न की ए. बी. सी. डी. और एफ. गढ़न (Fabric) के मृदभांड मिले हैं जिनमें से बड़े संग्रह पात्र, तसले, कटोरे, खुरदुरे मटके आदि प्रमुख हैं। इन मृदभांडों की बारी, गर्दन और ऊपरी भाग पर काले रंग की आड़ी-तिरछी रेखाएँ, लंबवत रेखाएं, एक-दूसरे को आपस में काटती हुई रेखाओं से युक्त चित्रण मिलते हैं| इसके अतिरिक्त अंदर की तरफ कुरेद कर बनाए गए अलंकरण (Incised Decoration) युक्त मृदभांड भी मिले हैं। मृदभांडों के मुख्य आकार-प्रकार में कटोरे, तसले, घड़े आदि हैं जिनकी बारी, गर्दन और ऊपरी हिस्से पर क्षैतिज एवं लंबवत रेखाएं, आड़ी- तिरछी रेखाएं जीव-जंतुओं के चित्रण अभिप्राय मिलते हैं।

बादली के उत्खनन से संग्रह पात्र, हत्थे, कप, कटोरे, साधार तश्तरियाँ आदि मिले हैं इन मृदभांडों की सतह पर चित्रण अभिप्राय एवं उत्कीर्ण अलंकरण भी मिलते हैं। चित्रण अभिप्रायों में मुख्यतः समानांतर रेखाएं, क्षैतिज एवं लंबवत रेखाएं, आड़ी-तिरछी रेखाएं, सादे मृदभांड पर काली चौड़ी पट्टियाँ तथा लाल रंग का प्रलेप भी मिलता है। इसके अतिरिक्त मृदभांडों की बाहरी सतह पर पकाने के बाद कुछ मृदभांडों के ऊपर हड़प्पा लिपि के चिन्ह् मिले हैं जिनमें से ज्यादातर रेखाएं हैं (ठाकरान और अमर सिंह 2008: 168)। बादली के उत्खनन से इस काल में बहुरंगी प्रकार के मृदभांड मिले हैं। सर्वेक्षण के दौरान साल्हावास खंड में सोथी-सीसवाल मृदभांड परंपरा के मृदभांड बहुत ही सीमित

मात्रा में मिले हैं। संपूर्ण खंड में एक ही पुरास्थल हैं जिसमें सोथी-सीसवाल संस्कृति के मृदभांड मिले हैं। ये मृदभांड अच्छी तरह से पके हुए, मध्यम से पतली गढ़न से युक्त हैं। कालीबंगा-1 ए से डी प्रकार की गढ़न के मृदभांड इस क्षेत्र में मिले हैं। इसके अतिरिक्त रिजर्व प्रलेप (Reserved Slip Ware) प्रकार के मृदभांड भी मिले हैं तथा समानांतर खान्चेदार (Parallel Grooved Ware) या हल्के कंघे की तरह के उकेरे गए मृदभांड भी मिले हैं। यहां से सोथी-सीसवाल के प्रमुख पात्र प्रकारों थालियाँ, संग्रह पात्र, गोलाकार घड़े आदि मिले हैं।

रेखाचित्र: 5.1

1. स्रोत: ढ़ाकला-3, व्यास: 20 से.मी., बाह्य रंग: लाल, गढ़न: मध्यम, अनुभाग: लाल रंग, मोटाई: 0.8 से.मी.

2 .स्रोत: ढ़ाकला-3, व्यास: 15 से.मी., बाह्य रंग: लाल, गढ़न: मध्यम, अनुभाग: लाल रंग, मोटाई: 0.8 से.मी.

3 .स्रोत: ढ़ाकला-3, व्यास: 4 से.मी., बाह्य रंग: लाल, गढ़न: मध्यम, अनुभाग: लाल रंग, मोटाई: 0.7 से.मी.

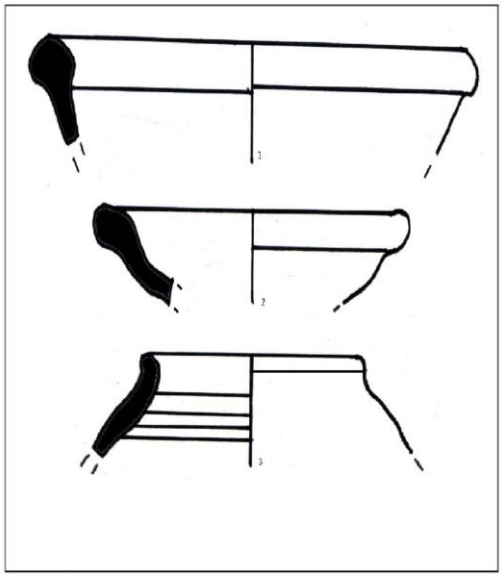

रेखाचित्र: 5.1 आरंभिक हड़प्पाकालीन मृदभांड

5.1.2: विकसित हड़प्पाकालीन मृदभांड परंपरा

विकसित हड़प्पाकालीन मृदभांड परम्परा में विशिष्ट एवं उत्कृष्ट मृदभांड दृष्टिगोचर होते हैं। इस काल में कुछ नए आकार प्रकार के मृदभांड प्रचलन में आए जो हड़प्पा सभ्यता की संपूर्ण सीमा में प्राप्त होते हैं। ये मृदभांड अच्छी तरह से गुंथी हुई मिट्टी से, उचित तापक्रम पर पके हुए तथा तेज गति के चाक पर निर्मित हैं जिन पर सामान्यतः काले रंग से चित्रण अभिप्राय संजोए गए हैं तथा इन मृदभांडो पर लाल रंग का प्रलेप भी किया गया है। इन मृदभांडो को छूने मात्र से धातु जैसे ध्वनि निकलती है। झज्जर में विकसित हड़प्पाकालीन पुरास्थल बहादुरगढ़ खंड (कटारिया 1989-90), झज्जर खंड (राहड़ 1991-92) से प्रतिवेदित हैं। बहादुरगढ़ खंड के जासौर खेड़ी-5 और लुकसार-1 पुरास्थल से छिद्रित जार के टुकड़े मिले हैं। इस खंड के दावला, मेहराना, सुरहा पुरास्थलों से छिद्रित जार, साधार-तश्तरियाँ, छिद्रित जार, बाहर की ओर झुकी बारी वाले मृदभांड (Collared Rim) आदि आकार-प्रकार के मृदभांड मिले हैं। ये मृदभांड मध्यम गढ़न के हैं तथा चाक पर निर्मित हैं। संग्रह पात्र और साधार-तश्तारियाँ काले रंग की क्षैतिज पट्टियों से चित्रित हैं। अमदल शाहपुर पुरास्थल से छिद्रित जार, तश्तरियाँ, साधार-तश्तरियाँ, बड़े संग्रह पात्र, चषक, मटके, बड़े संग्रह पात्र, मटके आदि मिले हैं। इसके अतिरिक्त पुरावशेषों में त्रिभुजाकार एवं गोलाकार मिट्टी से निर्मित केक तथा चूड़ियों के टुकड़े मिले हैं (जय नारायण 1990-91)।

बादली के उत्खनन से विकसित हड़प्पाकाल के विशिष्ट मृदभांड मिले हैं जिनमें साधार-तश्तरियाँ, छिद्रित जार और चषक आदि प्रमुख हैं (ठाकरान और अमर सिंह 2009-10: 210)। विकसित हड़प्पा काल में द्विरंगी प्रकार के मृदभांड मिले हैं। ये मृदभांड मोटे, अच्छी तरह से पके हुए और चित्रित अलंकरण से युक्त हैं। इन मृदभांडों के चित्रण में मुख्यतः प्राकृतिक एवं ज्यामितीय चित्रण मिले हैं। मृदभांडों के ऊपर लाल रंग का प्रलेप किया गया है तत्पश्चात् उन पर गहरे काले रंग का चित्रण भी किया गया है।

इस सर्वेक्षण के दौरान साल्हावास खंड में आरंभिक एवं उत्तर हड़प्पाकालीन मृदभांड-परम्परा के साक्ष्य ढ़ाकला-3 पुरास्थल से मिले हैं। इस पुरास्थल के ग्रामीण स्वरूप के कारण यहाँ से विकसित हड़प्पाकालीन मृदभांड-परम्परा के विषय में स्पष्ट रूप से कुछ कहा नहीं जा सकता क्योंकि यहाँ स्थित पुरास्थल ग्रामीण स्वरूप के हैं। अत: यह बता पाना अत्यंत कठिन है की यहाँ विकसित हड़प्पाकाल

था अथवा नहीं। विकसित हड़प्पाकाल में सोथी-सीसवाल मृदभांड परंपरा करीब 60% से 70% तक मिलती है लेकिन पुरास्थल के ग्रामीण स्वरूप होने के कारण इनकी संख्या और अधिक बढ़ जाती है। इस सर्वेक्षण के दौरान विकसित हड़प्पाकाल के विशिष्ट मृदभांड नहीं मिले हैं। ढ़ाकला-3 पुरास्थल पर आरंभिक हड़प्पाकाल और उत्तर हड़प्पाकाल के साक्ष्य मिलने के कारण संभवतः यहाँ लोग विकसित हड़प्पाकाल में भी रहे होंगे लेकिन उनका स्वरूप पूरी तरह से ग्रामीण रहा होगा।

5.1.3: उत्तर हड़प्पाकालीन मृदभांड-परंपरा

उत्तर हड़प्पा काल के सांस्कृतिक अवशेष बहादुरगढ़ खंड (कटारिया 1989-90), बेरी खंड (कादियान 1987-88), झज्जर खंड (राहड़ 1991-92), बादली क्षेत्र (अशोक कुमार 1990-91) और साल्हावास खंड (ढाका 1990-91) से प्रतिवेदित हैं। उत्तर हड़प्पाकालीन मृदभांड लाल रंग के मध्यम से मोटी गढ़न के हैं। ये मृदभांड चाक पर निर्मित हैं और उनके ऊपर लाल रंग का प्रलेप किया गया है। ये मृदभांड अच्छी तरह से गुंथी मिट्टी से निर्मित हैं और पके हुए हैं। इस काल के मृदभांड मध्यम से मोटी गढ़न के हैं। मृदभांड के मुख्य आकार-प्रकार में लटकती हुई बारी वाली साधारण तश्तरियाँ, लंबी गर्दन वाले घड़े, कोलर वाली बारी के जार, कटोरे, तसले और छोटे आकार के घड़े शामिल हैं। ये मृदभांड काले रंग की क्षैतिज की रेखाओं, लहरदार रेखाओं, लंबवत रेखाओं, बिंदुओं, वनस्पति एवं फूल पत्तियों, जीव-जंतुओं के चित्रण से युक्त हैं। कुछ मृदभांड बाहर की तरफ उत्कीर्ण अलंकरण से युक्त हैं जिनमें उकेरी हुई लहरदार रेखाएं, क्षैतिज रेखाएं, क्षैतिज रेखाओं को काटती हुई तिरछी रेखाएं लंबवत रेखाएं आदि प्रमुख हैं। कुछ मृदभांडों का निचला हिस्सा उंगलियों से खुरदरा बनाया गया है। उत्तर हड़प्पाकाल के मृद्भांडो में लाल रंग के मृद्भांडो की प्रधानता है तथा ये वजन में भी भारी हैं। कुरेद कर बनाए गए अलंकरण (Outer Incised Decoration), डोरी छाप और खांचेदार अलंकरण भी पाए जाते हैं।

सर्वेक्षण के दौरान पांच पुरास्थलों से उत्तर हड़प्पाकालीन मृदभांड मिले हैं (ढ़ाकला-1, ढ़ाकला-3, कासनी-1, मुंढ़ेरा-3, पटासनी)। इन पुरास्थलों से रुक्ष लाल रंग के मृदभांड, उत्कीर्ण अलंकरण से युक्त मृदभांड, लाल सतह पर काले रंग से चित्रण युक्त मृदभांड प्राप्त हुए हैं। ये मृदभांड मध्यम से मोटी गढ़न के हैं तथा कम पके हुए हैं। रुक्ष लाल रंग के मृदभांड बड़ी संख्या में मिले हैं जिनमें मुख्य प्रकार थालियां, संग्रह पात्र, कटोरे, तसले, घड़े आदि हैं। बाहरी उत्कीर्ण अलंकरण युक्त मृदभांड (Outer Incised Decoration) उत्तर हड़प्पाकाल की मुख्य विशेषता है। सामान्यत: ये उत्कीर्ण अलंकरण मृदभांड के ऊपरी हिस्से पर मिलते हैं। उत्कीर्ण अलंकरण से युक्त मृदभांडो पर क्षैतिज रेखाएं, लंबवत

रेखाएं, आड़ी-तिरछी रेखाएं तथा चटाई की छाप वाले अलंकरण (मुंढ़ेरा-3) प्रमुख हैं। काले रंग से चित्रित मृदभांड भी मिले हैं जिनमें रुक्ष लाल रंग का प्रलेपन और काले रंग के चित्रण भी मिलते हैं। इस काल में अलग-अलग आकार प्रकार के मृदभांड मिलते हैं जिनमें थालियां, साधार तश्तरियां, कटोरे, घड़े, संग्रह पात्र, तसले, हत्थे लगे हुए घड़े आदि मृदभांड बाहर की ओर लटकती हुई बारी (Drooping Rim), उभरी हुई बारी (Flaring Rim), समतल एवं ऊँची बारी (Flat Topped Rim), कॉलर की तरह लटकती हुई बारी (Collared Rim), वक्रनुमा बारी (Beaded Rim) वाले मृदभांड मिलते हैं।

रेखाचित्र: 5.2

1. स्रोत: पटासनी, व्यास: 12 से.मी., बाह्य रंग: रुक्ष लाल, गढ़न: मध्यम, अनुभाग: लाल रंग, मोटाई: 0.8 से.मी.

2. स्रोत: ढ़ाकला-3, व्यास: 20 से.मी., बाह्य रंग: लाल, गढ़न: मध्यम, अनुभाग: लाल रंग, मोटाई: 1.5 से.मी.

3. स्रोत: ढ़ाकला-3, व्यास: 16 से.मी., बाह्य रंग: रुक्ष लाल, गढ़न: मध्यम, अनुभाग: लाल रंग, मोटाई: 1.1 से.मी.

4. स्रोत: ढ़ाकला-3, व्यास: 17 से.मी., बाह्य रंग: लाल, गढ़न: मध्यम, अनुभाग: लाल रंग, मोटाई: 1 से.मी.

5. स्रोत: ढ़ाकला-1, व्यास: 7 से.मी., बाह्य रंग: रुक्ष लाल, गढ़न: मध्यम, अनुभाग: लाल रंग, मोटाई: 0.4 से.मी.

6. स्रोत: पटासनी, व्यास: 13 से.मी., बाह्य रंग: रुक्ष लाल, गढ़न: मध्यम, अनुभाग: लाल रंग, मोटाई: 1.0 से.मी.

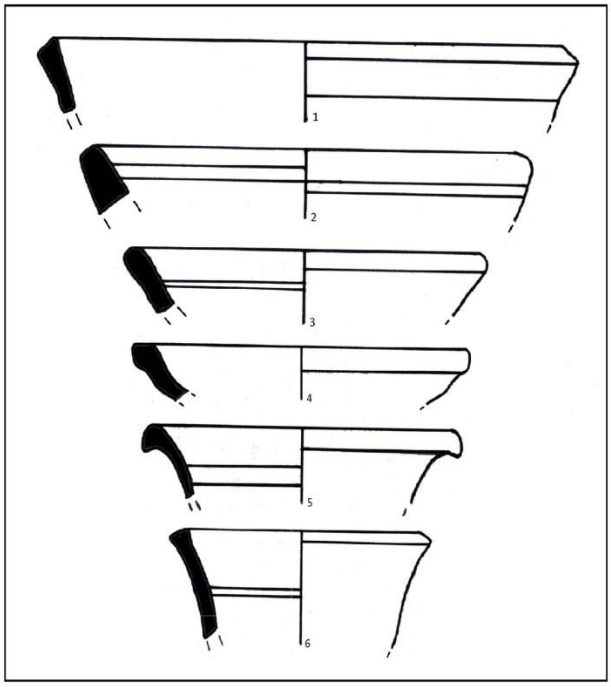

रेखाचित्र: 5.2 उत्तर हड़प्पाकालीन मृदभांड

5.1.4: पूर्व मध्यकालीन मृदभांड-परंपरा

पूर्व मध्यकाल के सांस्कृतिक अवशेष बहादुरगढ़ (कटारिया 1989-90), बेरी (कादियान 1987-88), झज्जर (राहड़ 1991-92), बादली (अशोक कुमार 1990-91), साल्हावास खंड (ढाका 1990-91) से प्रतिवेदित हैं। सर्वेक्षण के दौरान साल्हावास खंड के पूर्व मध्यकालीन मृदभांडों में अधिकतर लाल रंग के मृदभांड मिले हैं। ये मृदभांड अच्छी तरह से गुंथी हुई मिट्टी से बने हुए हैं तथा तेज गति के चाक पर निर्मित हैं। ये मृदभांड मध्यम से उत्तम गढ़न के हैं। मृदभांडों के मुख्य प्रकार घड़े, नुकीले बारी वाले कटोरे (Knife Edged bowls), टोंटीदार बर्तन, तसले, संग्रह पात्र, ढ़क्कन, घुण्डीदार ढ़क्कन आदि हैं। इस काल के मृदभांड अंदर और बाहर दोनों तरफ से काले और सफेद रंग से चित्रित हैं। मृदभांडों की बारी के पास अंदर की ओर चित्रण मिलते हैं जबकि बाहरी भाग पर बारी, गर्दन, ऊपरी हिस्से के पास चित्रण बने हुए मिले हैं। मृदभांड के आंतरिक भाग में आपस में तिरछी काटती हुई रेखाएं, पाश, लहरदार रेखाएं, तिरछी पट्टियां, क्षैतिज पट्टियां आदि चित्रण मिलते हैं जबकि बाहरी भाग के चित्रण में

समानांतर क्षैतिज के पट्टियां के मध्य लहरदार रेखाएं या मोटी काली पट्टियों के मध्य सफेद रंग के बिंदु, समानांतर क्षैतिज पट्टियां, लहरदार रेखाएं, क्षैतिज रेखाओं के मध्य त्रिभुज, आड़ी-तिरछी रेखाए, लंबवत एवं तिरछी रेखाओं की श्रृंखला से युक्त चित्रण सम्मिलित हैं। मृदभांडों की बारी के ऊपरी हिस्से पर भी चित्रण मिलते हैं जिनमें पाश, चित्रण, आड़ी तिरछी रेखाएं ,छ: रेखाओं से युक्त षट्भुज, नीचे की ओर बने पाश में तिरछी रेखाओं से युक्त चित्रण सम्मिलित हैं। इनके अतिरिक्त उत्कीर्ण अलंकरण से युक्त मृदभांड भी मिले हैं जिनकी बाहरी सतह पर लंबवत रेखाओं के साथ-साथ क्षैतिज रेखाओं का भी उत्कीर्ण अलंकरण मिलता है। साल्हावास खंड में 45 पुरास्थलों से पूर्व मध्यकालीन संस्कृति के मृदभांड मिले हैं।

रेखाचित्र: 5.3

1. स्रोत: चांदपुर, व्यास: 11 से.मी., बाह्य रंग: लाल, गढ़न: मध्यम, अनुभाग: लाल रंग, मोटाई: 0.8 से.मी.

2. स्रोत: समासपुर माजरा-3, व्यास: 10 से.मी., बाह्य रंग: लाल, गढ़न: मध्यम, अनुभाग: लाल रंग, मोटाई: 0.7 से.मी.

3. स्रोत: अम्बोली, व्यास: 10 से.मी., बाह्य रंग: लाल, गढ़न: मध्यम, अनुभाग: लाल रंग, मोटाई: 0.9 से.मी.

4. स्रोत: निलाहेड़ी , व्यास: 20 से.मी., बाह्य रंग: लाल, गढ़न: मध्यम, अनुभाग: लाल रंग, मोटाई: 0.7 से.मी.

5. स्रोत: जैतपुर, व्यास: 11 से.मी., बाह्य रंग: लाल, गढ़न: मध्यम, अनुभाग: लाल रंग, मोटाई: 0.8 से.मी.

6. स्रोत: समासपुर माजरा, व्यास: 7 से.मी., बाह्य रंग: लाल, गढ़न: मध्यम, अनुभाग: लाल रंग, मोटाई: 0.6 से.मी.

7. स्रोत: समासपुर माजरा-3, व्यास: 10 से.मी., बाह्य रंग: लाल, गढ़न: मध्यम, अनुभाग: लाल रंग, मोटाई: 0.7 से.मी.

8. स्रोत: जैतपुर, व्यास: 11 से.मी., बाह्य रंग: लाल, गढ़न: मध्यम, अनुभाग: लाल रंग, मोटाई: 0.9 से.मी.

9. स्रोत: साल्हावास-1, व्यास: 9 से.मी., बाह्य रंग: लाल, गढ़न: मध्यम, अनुभाग: लाल रंग, मोटाई: 0.6 से.मी.

10. स्रोत: चांदपुर, व्यास: 10 से.मी., बाह्य रंग: लाल, गढ़न: मध्यम, अनुभाग: लाल रंग, मोटाई: 0.9 से.मी.

11. स्रोत: धनिरवास, व्यास: 11 से.मी., बाह्य रंग: लाल, गढ़न: मध्यम, अनुभाग: लाल रंग, मोटाई: 1 से.मी.

12. स्रोत: धनिरवास , व्यास: 11 से.मी., बाह्य रंग: लाल, गढ़न: मध्यम, अनुभाग: लाल रंग, मोटाई: 0.8 से.मी.

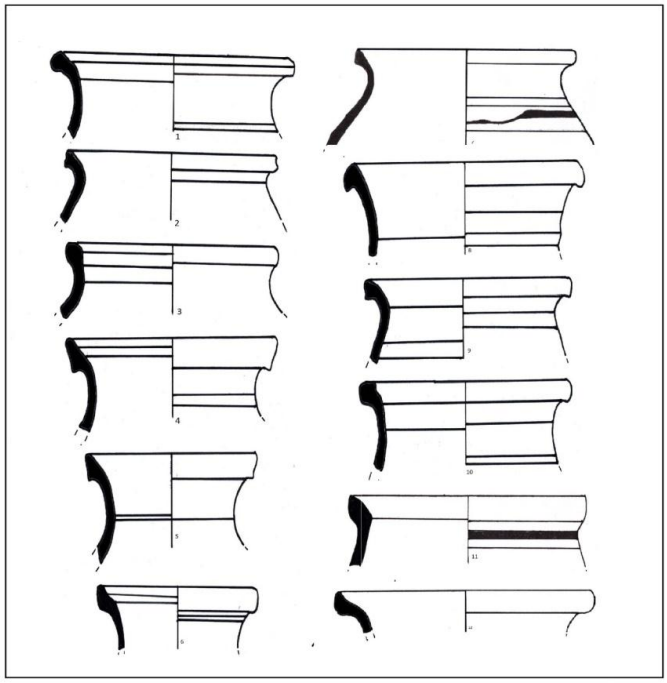

रेखाचित्र: 5.3 पूर्व मध्यकालीन मृदभांड-परंपरा

रेखाचित्र: 5.4

1. स्रोत: चांदपुर, व्यास: 11 से.मी., बाह्य रंग: लाल, गढ़न: मध्यम, अनुभाग: लाल रंग, मोटाई: 1.1 से.मी.

2. स्रोत: निलाहेड़ी, व्यास: 11 से.मी., बाह्य रंग: लाल, गढ़न: मध्यम, अनुभाग: लाल रंग, मोटाई: 0.5 से.मी.

3. स्रोत: तुम्बाहेड़ी, व्यास:9 से.मी., बाह्य रंग: लाल, गढ़न: मध्यम, अनुभाग: लाल रंग, मोटाई: 0.5 से.मी.

4. स्रोत: धनिरवास, व्यास: 8 से.मी., बाह्य रंग: लाल, गढ़न: मध्यम, अनुभाग: लाल रंग, मोटाई: 0.7 से.मी.

5. स्रोत:तुम्बाहेड़ी, व्यास: 10 से.मी., बाह्य रंग: लाल, गढ़न: मध्यम, अनुभाग: लाल रंग, मोटाई: 0.7 से.मी.

6. स्रोत:फतेहपुरी, व्यास: 7 से.मी., बाह्य रंग: लाल, गढ़न: मध्यम, अनुभाग: लाल रंग, मोटाई: 0.8 से.मी.

7. स्रोत: चांदपुर , व्यास: 11 से.मी., बाह्य रंग: लाल, गढ़न: मध्यम, अनुभाग: लाल रंग, मोटाई: 0.5 से.मी.

8. स्रोत: फतेहपुरी , व्यास: 10 से.मी., बाह्य रंग: लाल, गढ़न: मध्यम, अनुभाग: लाल रंग, मोटाई: 0.6 से.मी.

9. स्रोत: फतेहपुरी , व्यास: 10 से.मी., बाह्य रंग: लाल, गढ़न: मध्यम, अनुभाग: लाल रंग, मोटाई: 0.6 से.मी.

10. स्रोत: चांदपुर , व्यास: 11 से.मी., बाह्य रंग: लाल, गढ़न: मध्यम, अनुभाग: लाल रंग, मोटाई: 1 से.मी.

11. स्रोत: तुम्बाहेड़ी, व्यास: 9 से.मी., बाह्य रंग: लाल, गढ़न: मध्यम, अनुभाग: लाल रंग, मोटाई: 0.6 से.मी.

12. स्रोत: समासपुर माजरा-3, व्यास: 11 से.मी., बाह्य रंग: लाल, गढ़न: मध्यम, अनुभाग: लाल रंग, मोटाई: 0.5 से.मी.

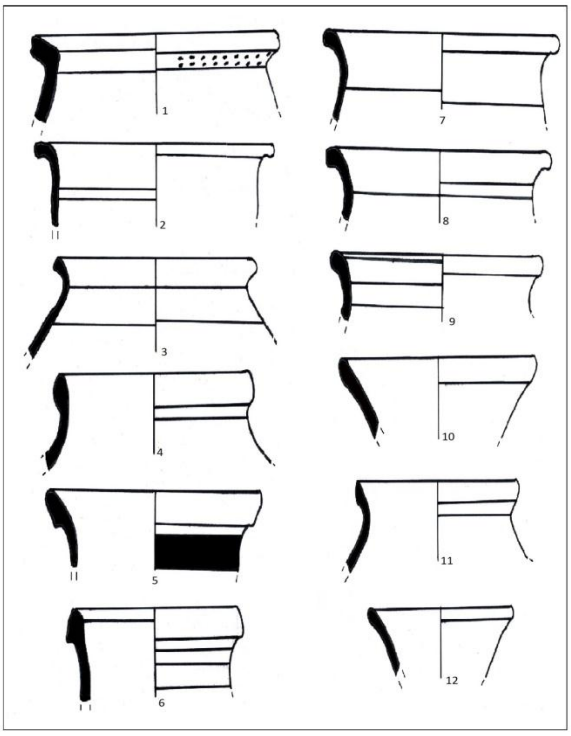

रेखाचित्र: 5.4 पूर्व मध्यकालीन मृदभांड-परंपरा

रेखाचित्र: 5.5

1. स्रोत: जैतपुर, व्यास: 9 से.मी., बाह्य रंग: लाल, गढ़न: मध्यम, अनुभाग: लाल रंग, मोटाई: 1 से.मी.

2. स्रोत: चांदपुर, व्यास: 11 से.मी., बाह्य रंग: लाल, गढ़न: मध्यम, अनुभाग: लाल रंग, मोटाई: 0.8 से.मी.

3. स्रोत: ढ़ाना, व्यास: 11 से.मी., बाह्य रंग: लाल, गढ़न: मध्यम, अनुभाग: लाल रंग, मोटाई: 0.6 से.मी.

4. स्रोत: नीलाहेड़ी, व्यास: 11 से.मी., बाह्य रंग: लाल, गढ़न: मध्यम, अनुभाग: लाल रंग, मोटाई: 1 से.मी.

5. स्रोत: जाटवाड़ा, व्यास: 12 से.मी., बाह्य रंग: लाल, गढ़न: मध्यम, अनुभाग: लाल रंग, मोटाई: 1.1 से.मी.

6. स्रोत: ढ़ाकला, व्यास: 12 से.मी., बाह्य रंग: लाल, गढ़न: मध्यम, अनुभाग: लाल रंग, मोटाई: 0.6 से.मी.

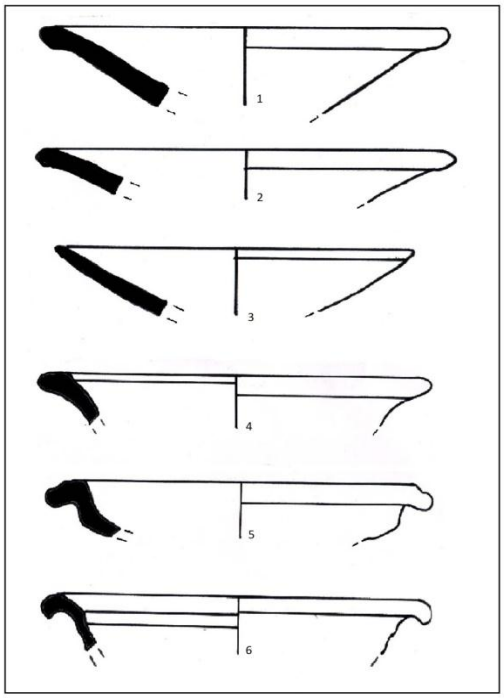

रेखाचित्र: 5.5 पूर्व मध्यकालीन मृदभांड-परंपरा

5.2: पकी मिट्टी से निर्मित वस्तुएं

पकी मिट्टी से निर्मित वस्तुओं की बाहुल्यता हड़प्पा सभ्यता में देखी जा सकती है। पकी मिट्टी की वस्तुओं में मृण्यमूर्तियां (मानव एवं पशु), मुद्रांक, मनके, चूड़ियां, गेंद, मिट्टी की खिलौना गाड़ी, पहिए, पासे, फलक, खेलने की वस्तुएं आदि सम्मिलित हैं। मानहेरू तथा मिताथल के उत्खनन से अच्छी मात्रा में पक्की मिट्टी की निर्मित वस्तुएं मिली हैं जिनमें पशु मृण्मूर्तियां, खिलौने गाड़ी, चक्र, मनके, चूड़ियां, केक, गेंद (सूरजभान 1975) आदि सम्मिलित हैं।

सर्वेक्षण के दौरान साल्हावास खंड के हड़प्पाकालीन पुरास्थलों से पक्की मिट्टी के पुरावशेषों में केवल चूड़ियां प्राप्त हुई हैं। ये पकी मिट्टी से निर्मित चूड़ियां दो पुरास्थलों ढ़ाकला-1 और ढ़ाकला-3 से

मिली हैं। हड़प्पा सभ्यता में पक्की मिट्टी की चूड़ियां व्यापक पैमाने पर प्रचलित थी। सर्वप्रथम पकी मिट्टी की चूड़ियों के साक्ष्य मेहरगढ़ के नवपाषाण कालीन स्तर से प्राप्त हुए थे। चूड़ियां हड़प्पाकाल में चौरस, गोलाकार, त्रिभुजाकार, चतुर्भुज आकार, समतल आकार में मिलती हैं। आरंभिक हड़प्पाकाल में एकल गोल अनुभाग की चूड़ियाँ बड़े पैमाने पर मिलती हैं जबकि जुड़ी हुई चूड़ियाँ (Segmented Bangles) विकसित एवं उत्तर हड़प्पाकाल में अधिक प्रचलित थी (सूरजभान1975: 76)। सर्वेक्षण के दौरान समतल या चौरस आकार वाली चूड़ियाँ मिली हैं जिन पर किसी भी प्रकार का अलंकरण नहीं है।

पूर्व मध्यकालीन संस्कृति में भी पक्की मिट्टी से निर्मित वस्तुएं व्यापक पैमाने पर प्रचलित थी। पकी मिट्टी के पुरावशेषों में चूड़ियां, मनके, खिलौना गाड़ी, मानव एवं पशुओं की मृण्मूर्तियां, पहिए, चक्र आदि सम्मिलित हैं। साल्हावास खंड से सर्वेक्षण के दौरान केवल सुपाड़ी के आकार का मिट्टी से बना हुआ मनका (Arecanut Bead) मिला है। यह मनका अच्छी तरह से पका हुआ है। इस काल में विभिन्न प्रकार के मनके भी प्रचलित थे। इसके अतिरिक्त नीलाहेड़ी नामक पुरास्थल से बैल की टूटी हुई मृण्यमूर्ति मिली है तथा अंबोली-1 पुरास्थल से अज्ञात पक्षी की टूटी हुई मृण्मूर्ति प्राप्त हुई है। चांदपुर, कुंजिया, जैतपुर, न्यौला पुरास्थलों से बच्चों के खेलने के हॉपस्कॉच भी मिले हैं।

5.3: पत्थर से निर्मित वस्तुएं

विभिन्न प्रकार के पत्थर के पुरावशेष हड़प्पा संस्कृति के पुरास्थलों से मिले हैं जैसे- स्तंभ, मूर्तिकला, मनके, बाँट, सिलबट्टे, गेंद, ब्लेड तथा अन्य काटने के उपकरण आदि मिलते हैं (अग्रवाल 2007: 148-153)। पत्थर से निर्मित पुरावशेषों में बादली के उत्खनन से पत्थर की गेंद, सिल-लोढ़े ,चर्ट ब्लेड, घनाकार के बाँट (ठाकरान और अमर सिंह 2009-10: 211) आदि मिले हैं। बहादुरगढ़ (कटारिया 1989-90), बेरी (कादियान 1987-88), झज्जर (राहड़ 1991-92), साल्हावास (1990-91) आदि खंडों से भी पत्थर के पुरावशेष प्रतिवेदित हैं। जिनमें बालुका पत्थर पर निर्मित सिल-लोढ़े, बाँट, गेंद आदि प्रमुख हैं। पत्थर के अन्य पुरावशेष इस क्षेत्र में आरंभिक हड़प्पाकाल से उत्तर हड़प्पाकाल तक मिलते हैं क्योंकि अरावली की पहाड़ियों में कच्चा माल उपलब्ध था। अधिकतर बांट, बालुका पत्थर से निर्मित हैं तथा कुछ ग्रेनाइट व क्वार्ट्जाइट (सूरजभान 1975: 59)। मिताथल (सूरजभान 1975: 59) और मानहेरू (ठाकरान 2012) से बड़े पैमाने पर भिन्न भिन्न आकार-प्रकार की पत्थर की गेंद मिली हैं। मिताथल (1975: 79) से धूसर रंग का बना हुआ वलय पत्थर तथा

क्वार्ट्जाइट पेबुल पर निर्मित दो हथोड़े भी मिले हैं। लाल बलुआ पत्थर पर निर्मित सिल-लोढ़े, मूसल इस क्षेत्र में बहुत प्रचलन में थे (परमार 2012: 128) । चूने पत्थर तथा क्वार्ट्जाइट पर निर्मित मूसल मिताथल से मिले हैं (सूरजभान 1975: 62)। सर्वेक्षण के दौरान ढ़ाकला-1 से बालुका पत्थर पर निर्मित सिलबट्टा तथा पटासनी से क्वार्ट्जाइट का लोढ़ा मिला है। इसके अतिरिक्त पतासनी पुरास्थल से बालुका पत्थर पर निर्मित बांट भी मिला है। पूर्व मध्यकालीन पुरास्थलों में साल्हावास-1, बाबेपुर, खुड्डन-3 और जैतपुर पुरास्थलों से पत्थर निर्मित बाँट तथा खुड्डन-2 और धनिरवास-2 से लोढ़े मिले हैं। समासपुर माजरा-3 पुरास्थल से पत्थर की गेंद मिली है।

5.5: फियांस की वस्तुएँ

फियांस पीसे हुए सफेद रंग के क्वार्ट्ज को गलाने तथा रंजक के मिश्रण से बनता है (केन्योर 1994: 36)। फियांस की वस्तुओं की प्राचीनता तीसरी सहस्राब्दि ईसा पूर्व तक जाती है तथा इसका प्रचलन दक्षिणी एशिया में अभी तक बना हुआ है (केन्योर 1994: 36)। हड़प्पा सभ्यता में फियांस की वस्तुएँ बड़े पैमाने पर मिलती हैं जैसे-चूड़ियाँ, मनके, सील, लघु आकार के मटके, पशु मृण्मूर्तियाँ आदि। आरंभिक हड़प्पाकाल के समय हरियाणा के क्षेत्र में फियांस की वस्तुएँ बहुत कम मात्रा में मिलती हैं। फियांस के केवल कुछ मनके एवम् चूड़ियाँ मानहेरू के आरंभिक हड़प्पाकाल के उपरी चरणों से प्राप्त हुए हैं जबकि मिताथल के इसी स्तर से फियांस की कोई वस्तु प्रतिवेदित नहीं है (परमार 2012: 123)। इन पुरास्थलों के उत्खनन से पता चला है कि फियांस की वस्तुएँ सामान्यत: विकसित हड़प्पाकाल में प्रयोग की जाती थी हालांकि उत्तर हड़प्पाकाल में इनकी अधिकता देखने को मिलती है। फियांस की वस्तुएं बादली के उत्खनन से भी मिली हैं (ठाकरान और अमर सिंह 2008: 170)। सर्वेक्षण में ढ़ाकला-3 पुरास्थल से फियांस की एक चूड़ी मिली है।

अध्याय-6

सांस्कृतिक परिवर्तन

प्रथम कृषीय संस्कृति के विकास में झज्जर जिले ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस क्षेत्र के पश्चिम में बांगर के मैदान दक्षिण एवं दक्षिण-पश्चिम में अरावली की पहाड़ियाँ तथा पूर्व में यमुना नदी स्थित है। झज्जर और उसके आस-पास के क्षेत्र में अनेकों मौसमी नदियाँ साहबी, कृष्णावती, दोहन और इंदौरी आदि बहती थी। इन नदियों ने प्राचीन समय में अनाज उत्पादन, सिंचाई योग्य जल, विविध प्रकार के वनस्पति एवं पेड़-पौधों, जीव-जंतुओं को जीवन देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। साथ ही अरावली की पहाड़ियों से पत्थर, धातु एवं खनिज तत्व प्राप्त कर प्राचीन संस्कृतियों के लोगों ने व्यापार को भी बढ़ावा दिया। इस क्षेत्र में प्रथम नगरीय सभ्यता का भी क्रमबद्ध सांस्कृतिक विकास देखा जा सकता है।

सर्वप्रथम बी .बी. लाल ने झज्जर जिले में बहादुरगढ़ के पास एक पुरास्थल का सर्वेक्षण किया, जिसका कालक्रम पी. जी. डब्लू. संस्कृति (PGW) से जोड़ा गया (1954-55: 139)। इस क्षेत्र में महत्वपूर्ण पुरातात्विक खोज पंजाब सरकार के द्वारा मोहनबाड़ी के पास स्थित खानपुर से 40 पत्थर की मूर्तियाँ प्रतिवेदित करके की गई (आई.ए.आर.1965-66)। तत्पश्चात 1970 के दशक के आरंभ में बादली क्षेत्र में सीलकराम ने सर्वेक्षण किया जिसके परिणामस्वरूप इस क्षेत्र में बादली-1 और सुरहा नामक पुरास्थल प्रकाश में आए (अशोक कुमार 1990-91: 07)। साथ ही सीलकराम ने सामंत देव के सिक्कों और 40 पत्थर की मूर्तियाँ, ब्राह्मण एवं जैन संप्रदाय के संरचनात्मक अवशेषों और 10 वीं शताब्दी ई. के टूटे हुए शिलालेख मोहनबाड़ी से प्रतिवेदित किए । 1975 में शीला देवी ने शोध कार्य हेतु इस पुरास्थल का दौरा किया और 7 पत्थर की मूर्तियाँ प्रतिवेदित की (राजेश कुमार 2016: 31)। सूरजभान ने 1975 में बादली-I पुरास्थल का सर्वेक्षण किया (ठाकरान और अमर सिंह 2008: 166)। 1975 में हरियाणा सरकार के पुरातत्व विभाग ने इस क्षेत्र का पुरातात्विक सर्वेक्षण किया और मोहनबाड़ी से एक बड़े मंदिर के अवशेष एवं आरंभिक ऐतिहासिक सांस्कृतिक सामग्री प्रतिवेदित की (आई.ए.आर 1978-79)। दक्षिणी हरियाणा में सांस्कृतिक क्रम को जानने हेतु भारतीय पुरातात्विक सर्वेक्षण के विभाग के दिल्ली सर्किल ने सी. मार्गबंधु और ओ.पी. शर्मा, डी.पी. सिन्हा और डी.डी. डोंगरा आदि ने साहबी नदी के उत्तरी एवं दक्षिणी किनारों का सर्वेक्षण कार्य किया| इस सर्वेक्षण के परिणामस्वरूप उत्तर हड़प्पाकालीन संस्कृति के औरंगपुर-2, याकूबपुर, बंदौला, झबेली, सुरहा आदि पुरास्थल प्रकाश में आए।

इसके अतिरिक्त महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय के एम. फिल. शोधकर्ताओं ने झज्जर जिले में खंड के आधार पर सर्वेक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। बेरी खंड का सर्वेक्षण गाँव-गाँव घूमकर महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय के एम. फिल. शोधार्थी राय सिंह कादियान (1987-88) ने किया। इसी वर्ष स्नेहलता (1987-88) ने रोहतक के सांपला खंड का सर्वेक्षण किया उनके शोध निबंध में 7 पुरास्थल बहादुरगढ़ खंड से प्रतिवेदित हैं। इसके पश्चात राजीव कटारिया (1989-90) ने बहादुरगढ़ खंड का सर्वेक्षण किया जिसके परिणामस्वरूप 30 पुरास्थल प्रकाश में आए। जयनारायण (1990-91) ने मातनहेल खंड के अंतर्गत आने वाले गाँवों का सर्वेक्षण किया| उन्होंने 19 पुरास्थल प्रतिवेदित किए जिनमें से मोहनबाड़ी का ऐतिहासिक टीला भी शामिल था। इसी वर्ष अशोक कुमार (1990-91) ने बादली क्षेत्र का सर्वेक्षण किया। महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय के एम.फिल शोधार्थी सुरेंद्र सिंह ढाका ने साल्हावास खंड का गाँव-गाँव घूमकर सर्वेक्षण कार्य किया और 20 पुरास्थल प्रतिवेदित किए। जगदीश सिंह राहड़ ने झज्जर खंड का सर्वेक्षण किया और झज्जर खंड में कुल 56 पुरास्थल प्रतिवेदित किए।

झज्जर जिले के बहादुरगढ़ खंड, बेरी खंड, झज्जर खंड, मातनहेल खंड और साल्हावास खंड के सर्वेक्षण के आधार पर 16 पुरास्थल आरंभिक हड़प्पाकालीन संस्कृति, 6 पुरास्थल विकसित हड़प्पाकालीन संस्कृति, 32 पुरास्थल उत्तर हड़प्पाकालीन संस्कृति, 7 पुरास्थल गैरिक मृदभांड संस्कृति, 6 पुरास्थल चित्रित धूसर संस्कृति, 19 पुरास्थल आरंभिक ऐतिहासिक संस्कृति, 107 पुरास्थल पूर्व मध्यकालीन संस्कृति तथा 31 पुरास्थल मध्यकालीन संस्कृति तथा 10 पुरास्थल उत्तर मध्यकालीन से संबंधित हैं। सर्वेक्षण के अतिरिक्त इस क्षेत्र में उत्खनन भी किए गए हैं। बादली-I (आर. सी. ठाकरान और अमर सिंह 2008, 2009-10) और लोहट का उत्खनन (ठाकरान और अमर सिंह: पर्सनल कम्युनिकेशन) आर.सी. ठाकरान और अमर सिंह के नेतत्व में दिल्ली विश्वविद्यालय तथा महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वाधान में किया गया।

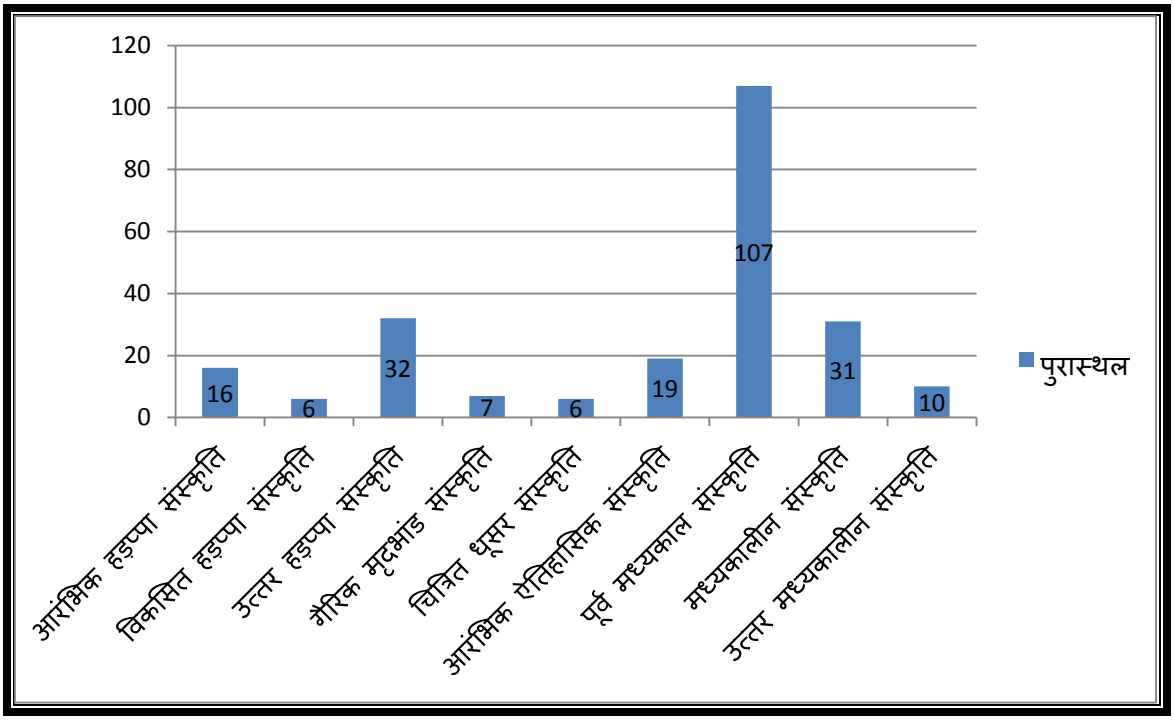

चित्र: 6.1 झज्जर जिले में पुरास्थल

6.1: आरंभिक हड़प्पा संस्कृति

आरंभिक हड़प्पाकाल को दो भागों (हाकड़ा और सोथी-सीसवाल संस्कृति) में विभाजित करते है। साल्हावास खंड में ढ़ाकला-3 पुरास्थल से हाकड़ा संस्कृति के कुछ मृदभांड प्राप्त हुए हैं जिनमें से चिपकवाँ अलंकरण वाले मृदभांड (Mud Applique Ware), रिजर्व प्रलेप वाले मृदभांड (Reserved Slipped Ware) और हैंडल मिले हैं। झज्जर जिले के अन्य खंडों से हाकड़ा संस्कृति के मृदभांड नहीं मिले हैं। हरियाणा के भिवानी जिले में स्थित खानक को छोड़कर अन्य किसी पुरास्थल से हाकड़ा संस्कृति के प्रमाण इस क्षेत्र में नहीं मिले हैं (परमार 2012)। ढ़ाकला-3 पुरास्थल से हाकड़ा मृदभांडों की प्राप्ति यह दर्शाती है कि संभवतः झज्जर क्षेत्र में यह संस्कृति प्रचलित रही होगी।

झज्जर में आरंभिक हड़प्पाकाल की सोथी-सीसवाल संस्कृति के सांस्कृतिक अवशेष बहादुरगढ़ खंड, झज्जर खंड और बेरी खंड से प्रतिवेदित हैं। बहादुरगढ़ खंड के असोढ़ा, जासौर खेड़ी, लुकसार-1, नूना माजरा, निलौठी-2 और परनाला आदि पुरास्थलों से आरंभिक हड़प्पाकालीन संस्कृति के अवशेष मिले हैं। बेरी खंड के चमनपुरा और मेहराना से आरंभिक हड़प्पाकालीन मृदभांड मिले हैं।

बादली के उत्खनन से आरंभिक हड़प्पा संस्कृति के निचले स्तर से राख और जले हुए कण मिले हैं। ये इस काल के लगभग सभी निखातों से मिले हैं (ठाकरान और अमर सिंह 2008: 168)। बादली के (2009-10) उत्खनन से एक एकल ईंट से निर्मित दीवार के संरचनात्मक अवशेष मिले हैं। इन घरों की दीवारें ऊँची नहीं थी तथा इस काल से संबंधित कोई पूरा संरचनात्मक अवशेष नहीं मिला है हालांकि दीवारों के छोटे आकार के आधार पर कहा जा सकता है कि घरों का आकार भी छोटा ही था (ठाकरान और अमर सिंह 2009-10: 210)। ईंटों का आकार 1:2:3 सेंटीमीटर था।

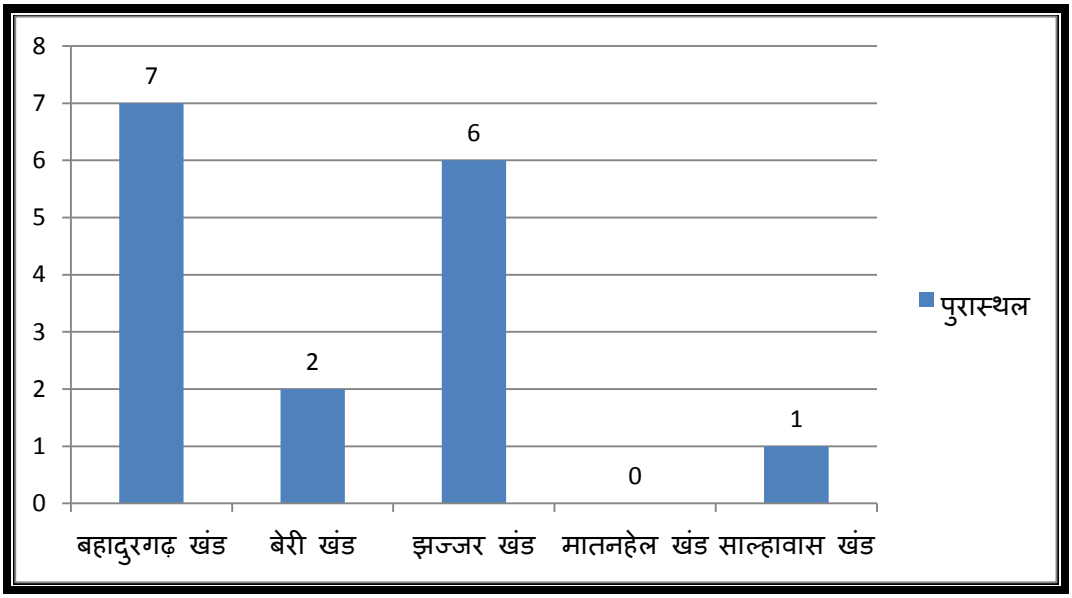

चित्र: 6.2 झज्जर जिले के आरंभिक हड़प्पाकालीन पुरास्थल

बादली के उत्खनन से संग्रह पात्र, हत्थे, कप, कटोरे, साधारण तश्तरियां आदि मिले हैं इन मृदभांडों की सतह पर चित्रण अभिप्राय एवं उत्कीर्ण अलंकरण भी मिलते हैं। चित्रण अभिप्रायों में मुख्यतः समानांतर रेखाएं, क्षैतिज एवं लंबवत रेखाएं, आड़ी-तिरछी रेखाएं, सादे मृदभांड पर काली चौड़ी पट्टियाँ तथा लाल रंग का प्रलेप भी मिलता है। इसके अतिरिक्त मृदभांडों की बाहरी सतह पर पकाने के बाद कुछ मृदभांडों के ऊपर हड़प्पा लिपि के चिन्ह् मिले हैं जिनमें से ज्यादातर रेखाएं हैं (ठाकरान और अमर सिंह 2008: 168)। आरंभिक हड़प्पाकाल के इस स्तर से क्षैतिज एवं लंबवत रेखाएं, लहरदार रेखाएं तथा गढन डी प्रकार के अंदर की ओर उत्कीर्ण अलंकरण से युक्त मृदभांड मिले हैं जो बहुत ही खुरदरे हैं।

बादली के उत्खनन से पकी मिट्टी के मनके, सिलखड़ी, कांचली मिट्टी, कार्नेलियन, हड्डी आदि के मनके मिले हैं। इनमें से मुख्यत: सिलखड़ी और कार्नेलियन के मनके विशिष्ट हैं। ये मनके बटन के आकार, पहिए के आकार और छोटे से छिद्र से युक्त मिले हैं। ये मनके हड़प्पा कालीन संस्कृति के लोगों की तकनीकी दक्षता को दर्शाते हैं। सिलखड़ी के मनकों का व्यास 2 से 3 सेंटीमीटर तक है। उत्खनन से आरंभिक हड़प्पाकाल के पक्की मिट्टी से निर्मित गोलाकार एवं मुष्टिका आकार के चक्र मिले हैं। इनमें से कुछ अच्छी तरह से पके हुए हैं तथा कुछ कम पके हुए हैं।

6.2: विकसित हड़प्पा संस्कृति

झज्जर में विकसित हड़प्पाकालीन पुरास्थल बहादुरगढ़ खंड (कटारिया 1989-90), झज्जर खंड (राहड़ 1991-92) और मातनहेल खंड (जय नारायण 1990-91) से प्रतिवेदित किए गए हैं। बहादुरगढ़ खंड के जासौर खेड़ी-5 और लुकसार-1, झज्जर खंड के दावला-2, मेहराना, सुरहा तथा मातनहेल खंड के अमदल शाहपुर पुरास्थल से विकसित हड़प्पा संस्कृति के प्रमाण मिले हैं।

बादली के उत्खनन से विकसित हड़प्पाकाल के घरों की दीवारें प्रकाश में आई है। ये दीवारें कच्ची मिट्टी से निर्मित थी। इन ईंटों का आकार 1:2:4 से. मी. है जो कि विकसित हड़प्पाकाल का मानक अनुपात है। कहीं-कहीं तीन परतों कि ईंटों का भी प्रयोग किया गया है। सामान्यता घरों की दीवारें इंग्लिश बॉन्ड सिस्टम से बनाई गई है (ठाकरान, अमर सिंह 2008-9: 211)। ईटों के निर्माण में पीले रंग की मिट्टी, गाद, काली मिट्टी से किया गया था और ईंटों के निर्माण के लिए मिट्टी तैयार करते समय क्वार्टज के कणों का प्रयोग किया गया था ताकि उनमें दरारें आने से रोका जा सके। पकी ईंटों का प्रयोग दर्शाता है कि यहां के लोग पकी ईंटों से परिचित थे किंतु इस स्थिति में नहीं थे कि वह इनका निर्माण कर प्रयोग कर सकें (ठाकरान और अमर सिंह 2008: 168)। बादली के उत्खनन से घरों में रसोईघर के प्रमाण मिले हैं। यहां पर रसोईघर उत्तर पूर्वी दिशा में बनाए गए थे (ठाकरान और अमर सिंह 2008: 169)। रसोईघर को एक मिट्टी से निर्मित कच्ची दीवार के द्वारा अलग किया गया है जिसमें एक रसोई घर में गोलाकार चूल्हे का प्रयोग किया गया है तथा दूसरे रसोई घर में 'U' आकार के चूल्हे का प्रयोग किया गया है। इन चूल्हों के निर्माण में लाल रंग की मिट्टी का प्रयोग किया गया है तथा इन्हें मिट्टी की मोटी परत से लीपा भी गया है। यू आकार के चूल्हे के अंदर एक गोलाकार गर्त मिला है जिसमें राख और पशुओं की हड्डियां मिली हैं। इससे स्पष्ट है कि यहां के लोगों का जीवन पशुपालन एवं जंगली पशुओं के शिकार पर निर्भर था।

दावला, मेहराना, सुरहा पुरास्थलों से छिद्रित जार, साधार-तश्तरियाँ, छिद्रित जार, बाहर की ओर झुकी बारी वाले मृदभांड आदि आकार-प्रकार के मृदभांड मिले हैं। ये मृदभांड मध्यम गढ़न के हैं तथा चाक पर निर्मित हैं। संग्रह पात्र और साधार-तश्तरियाँ काले रंग की क्षैतिज पट्टियों से चित्रित हैं। अमदल शाहपुर पुरास्थल से छिद्रित जार, तश्तरियाँ, साधार-तश्तरियाँ, बड़े संग्रह पात्र, चषक, मटके आदि शामिल हैं| बादली के उत्खनन से विकसित हड़प्पाकाल के विशिष्ट मृदभांड मिले हैं जिनमें साधार-तश्तरियाँ, छिद्रित जार और चषक आदि प्रमुख हैं (ठाकरान और अमर सिंह 2009-10: 210)। विकसित हड़प्पा काल में द्विरंगी प्रकार के मृदभांड मिले हैं। ये मृदभांड मोटे, अच्छी तरह से पके हुए और चित्र अलंकरण से युक्त हैं। इन मृदभांडों के चित्रण में मुख्यतः प्राकृतिक एवं ज्यामितीय चित्रण मिले हैं। मृदभांडों के ऊपर लाल रंग का प्रलेप किया गया है तत्पश्चात् उन पर गहरे काले रंग का चित्रण भी किया गया है।

बादली के उत्खनन से विकसित हड़प्पाकाल के चरण से न केवल तांबे से निर्मित वस्तुएं मिली हैं बल्कि मूषक के टूटे हुए टुकड़े भी मिले हैं। इन सभी में तांबे की मात्रा उपलब्ध है हालांकि सीमित मात्रा में तांबे की वस्तुएँ मिलने से यह संकेत मिलता है कि तांबे की वस्तुओं का कम प्रयोग किया जाता है। साधारण तकनीक एवं सीमित मात्रा में तांबे की प्राप्ति के कारण हो सकता है। इसके अतिरिक्त बादली के उत्खनन से 18 सेंटीमीटर लंबी एवं 0.5 सेंटीमीटर चौड़ी एक तांबे की छड़ मिली है जो लंबवत स्थिति में खड़ी मिली है (ठाकरान और अमरसिंह 2008: 169)। सांस्कृतिक पुरावशेषों में मिट्टी से निर्मित चक्र, हस्तनिर्मित छोटे घड़े, पक्की मिट्टी से निर्मितबैल की मूर्तियाँ तथा बैल की नाक में छिद्र किया हुआ मिलता है जो यह दर्शाता है कि इसे खिलौने के रूप में प्रयोग किया गया होगा तथा यह पालतू पशु होने की ओर भी संकेत करता है। इसके अतिरिक्त इस पुरास्थल से पकी मिट्टी की निर्मित चूड़ियां और मनके भी मिले हैं| पकीं मिट्टी से निर्मित की छोटी-छोटी गोलियां भी मिली है। इसके अतिरिक्त सिलखड़ी के मनके भी मिले हैं जिन पर बॉन पॉइंट के छोटे टुकड़ों से अलंकरण किया हुआ मिला है। इसके अतिरिक्त कार्नेलियन के विभिन्न आकर-प्रकार के मनके भी मिले हैं। कुछ मनकों पर विशिष्ट अलंकरण भी किए गए हैं जो हड़प्पाकाल कि प्रमुख विशेषता है। इसके अतिरिक्त चर्ट निर्मित घनाकार बाँट भी मिले हैं| इस काल से पकी मिट्टी के केक भी मिले हैं। जो अच्छी तरह से पके हुए हैं तथा त्रिभुजाकार के हैं तथा समतल एवं चिकने धरातल के हैं| इस पर किसी प्रकार की पॉलिश नहीं की गई है। हालांकि इस काल में इडली प्रकार के केक भी प्रचलित रहे किंतु उन पर हड़प्पा लिपि के उत्कीर्ण चिन्ह मिलते हैं। इसके अतिरिक्त पत्थर निर्मित गेंद, सिल-लोढ़े आदि भी उत्खनन से मिले

हैं| चर्ट ब्लेड, पकी मिट्टी से निर्मित चित्रित चूड़ियां, मनके, अगेट के मनके, एक लाजवर्द का मनका, बोन पॉइंट भी में मिले हैं (ठाकरान और अमर सिंह 2009-10: 210-11)।

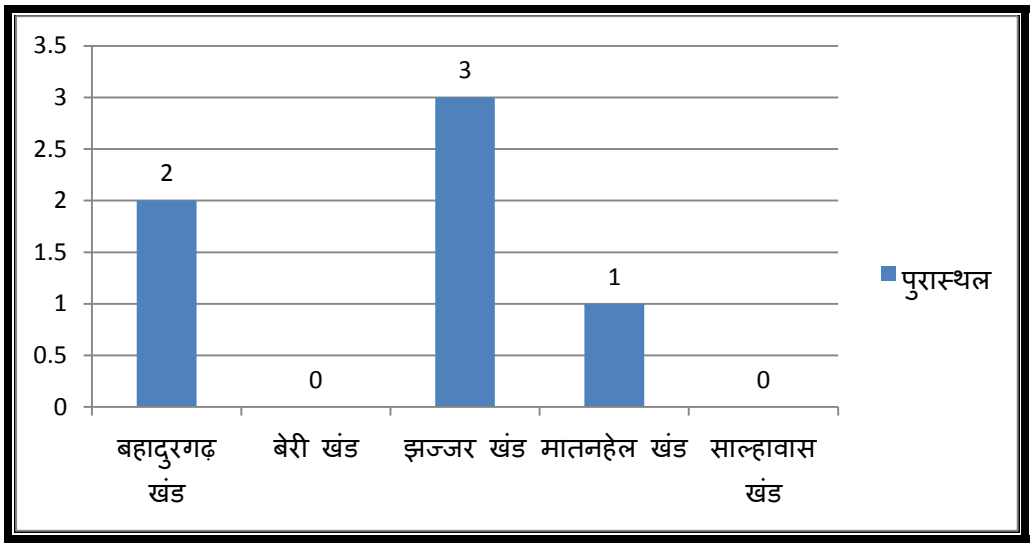

चित्र: 6.3 झज्जर जिले में विकसित हड़प्पाकालीन पुरास्थल

6.3: उत्तर हड़प्पा संस्कृति

उत्तर हड़प्पा काल के सांस्कृतिक अवशेष बहादुरगढ़ (कटारिया 1989-90), बेरी(कादियान 1987-88), झज्जर (राहड 1991-92), बादली (अशोक कुमार 1990-91) साल्हावास खंड (ढाका 1990-91) से प्रतिवेदित हैं। इन पुरास्थलों के उत्खनन से आवासीय-संरचना, मृदभांड-परंपरा, तकनीकी, व्यापार और वाणिज्य आदि प्रकाश में आई हैं। उत्तर हड़प्पा काल के दौरान नगर-नियोजन एवं आवासीय-संरचना इतनी उत्तम नहीं थी जितनी कि विकसित हड़प्पा काल के दौरान दिखाई देती है। घरों का निर्माण मिट्टी तथा कच्ची ईंटों दोनों से किया जाता था तथा घरों में टूटी-फूटी कच्ची ईंटों का प्रयोग किया हुआ मिलता है। संभवत: ये इंटें पूर्ववर्ती चरण से लाई गई होंगी। इस चरण के पुरातात्विक साक्ष्य प्रदर्शित करते हैं कि जल निकासी की उत्तम व्यवस्था नहीं थी।

उत्तर हड़प्पा कालीन मृदभांड लाल रंग के मध्यम से मोटी गढ़न के हैं| इसके अतिरिक्त कालीबंगा-1 गढ़न के ए और एफ प्रकार के मृदभांड भी मिले हैं (कटारिया 1989-90)| यहां से प्राप्त सभी मृदभांड चाक निर्मित मिले हैं और उनके ऊपर लाल रंग का प्रलेपन किया गया है| ये मृदभांड अच्छी तरह से गुंथी मिट्टी से निर्मित हैं और अच्छी तरह से पके हुए हैं। मृदभांडों के मुख्य आकार-प्रकार में लटकती हुई बारी वाली साधारण तश्तरियाँ, लंबी गर्दन वाले घड़े, कोलर वाली बारी के जार,

कटोरे, तसले और छोटे आकार के घड़े शामिल हैं। ये मृदभांड काले रंग की क्षैतिज रेखाओं, लहरदार रेखाओं, लंबवत रेखाओं, बिंदुओं, वनस्पति एवं फूल पत्तियों, जीव-जंतुओं के चित्रण से युक्त हैं। कुछ मृदभांड बाहर की तरफ उत्कीर्ण अलंकरण से युक्त हैं जिनमें उकेरी हुई लहरदार रेखाएं, क्षैतिज रेखाएं, क्षैतिज रेखाओं को काटती हुई तिरछी रेखाएं, लंबवत रेखाएं आदि प्रमुख हैं| कुछ मृदभांडों का निचला हिस्सा उंगलियों से खुरदरा बनाया गया है।

इस काल में क्षेत्रीय उत्पादन या निर्माण पर अधिक बल दिया गया। इस काल में कार्नेलियन, अगेट, सिलखड़ी के मनके बहुत कम मात्रा में मिलते हैं जबकि कांचली मिट्टी की वस्तुएं बड़ी मात्रा में मिलने लगती हैं। इससे पता चलता है कि अर्ध कीमती पत्थर से निर्मित वस्तुओं का स्थान कांचली मिट्टी की वस्तुओं अर्थात् क्षेत्रीय उत्पादों ने ले लिया था जिनमें मनके, चूड़ियाँ, सील आदि प्रमुख हैं। इस काल में पकी मिट्टी से निर्मित वस्तुएं भी पहले के काल की अपेक्षा अधिक मिलती हैं तथा पकीं मिट्टी से निर्मित वस्तुओं में मनके, चूड़ियां, खिलौना गाड़ी-चक्र, पशु मृण्मूर्तियां, खेलने की वस्तुएं, इडली आकार के पकी मिट्टी के केक आदि मिलते हैं। इनके अतिरिक्त पत्थर से निर्मित वस्तुओं में सिल-लोढ़े, बाँट, पत्थर निर्मित गेंद आदि भी मिलती हैं।

उत्तर हड़प्पा संस्कृति में नगर-नियोजन, संस्कृतिक सामग्री, तकनीकी, व्यापार एवं वाणिज्य आदि में अवनति दिखाई देती है। हड़प्पा सभ्यता के विकसित चरण के सभी मूलभूत विशेषताएं जैसे विशिष्ट मृदभांड परंपरा, त्रिभुजाकार केक, पक्की मिट्टी की ईंटों से निर्मित घर, अन्नागार, सामूहिक चूल्हे (दीक्षित 1979: 130)। ये परिवर्तन की प्रक्रिया एक नगरीय सभ्यता से ग्रामीण संस्कृतियों के लिए उत्तरदाई थी। द्वितीय सहस्राब्दी के आरंभ में हड़प्पा सभ्यता के जीवन स्तर में गिरावट आ जाती है। अतः इस चरण में नगरीय सभ्यता क्षेत्रीय ग्रामीण संस्कृति के रूप में परिवर्तित दिखाई देती है

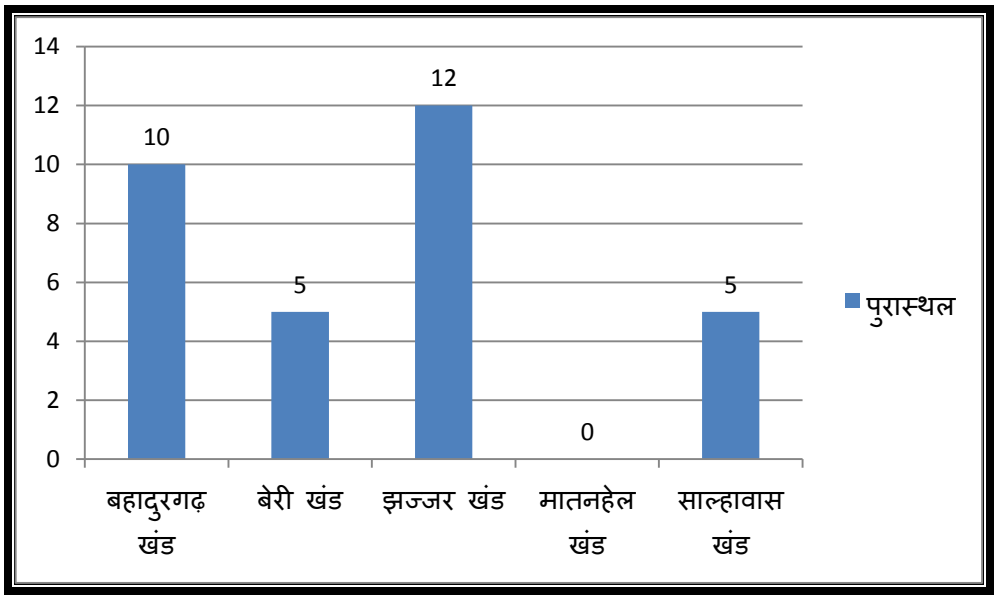

चित्र: 6.4 झज्जर जिले में उत्तर हड़प्पाकालीन पुरास्थल

साल्हावास खंड में उत्तर हड़प्पाकाल के बाद लम्बा सांस्कृतिक अंतराल दिखाई देता है। सर्वेक्षण के दौरान उत्तर हड़प्पा काल के बाद यहाँ पूर्व मध्यकालीन सांस्कृतिक अवशेष मिले हैं। झज्जर जिले के अन्य खंडों से गैरिक मृदभांड संस्कृति, चित्रित धूसर संस्कृति, आरंभिक ऐतिहासिक संस्कृति, मध्यकालीन एवं उत्तर मध्यकालीन संस्कृति के प्रमाण मिलते हैं। गैरिक मृदभांड संस्कृति के 5 पुरास्थल झज्जर खंड तथा 2 पुरास्थल मातनहेल खंड से प्रतिवेदित हैं। चित्रित धूसर संस्कृति के 4 पुरास्थल बहादुरगढ़ खंड,बेरी खंड से 1 पुरास्थल तथा झज्जर खंड से 1 पुरास्थल प्रतिवेदित है। आरंभिक ऐतिहासिक कालीन पुरास्थलों में बहादुरगढ़ खंड से 3 पुरास्थल, बेरी खंड से 11 पुरास्थल, मातनहेल खंड से 5 पुरास्थल प्रतिवेदित हैं। पूर्व मध्यकालीन पुरास्थलों में 19 पुरास्थल बहादुरगढ़ से, 13 पुरास्थल बेरी खंड से, 30 पुरास्थल झज्जर खंड और 45 पुरास्थल साल्हावास खंड से प्रतिवेदित हैं। मध्यकालीन पुरास्थलों में 10 पुरास्थल बेरी खंड तथा 21 पुरास्थल मातनहेल खंड से प्रतिवेदित हैं। उत्तर मध्यकालीन पुरास्थलों में कुल 10 पुरास्थल झज्जर खंड से प्रतिवेदित हैं।

6.4: पूर्व मध्यकालीन संस्कृति

झज्जर जिले के बहादुरगढ़ खंड, पूर्व मध्य काल के दौरान राजनीतिक सत्ता के लिए समय-समय पर होता रहा। इस समय व्यापार-वाणिज्य, उद्योग-धंधों एवम् हस्त-शिल्प और तकनीकी के क्षेत्र में उन्नति

हुई। पूर्व-मध्यकालीन संस्कृति के समय सत्ता परिवर्तन का प्रभाव व्यापारिक वर्ग पर भी पड़ा। इस समय के लोग मकानों, कच्ची ईंटों, पकीं इंटों से निर्मित घरों में निवास करते थे।

सर्वेक्षण के दौरान साल्हावास खंड के पूर्व मध्यकालीन मृदभांडो में अधिकतर लाल रंग के मृदभांड मिले हैं। ये मृदभांड अच्छी तरह से गुंथी हुई मिट्टी से बने हुए हैं तथा तेज गति के चाक पर निर्मित हैं। ये मृदभांड मध्यम से उत्तम गढ़न के हैं। मृदभांडो के मुख्य प्रकार घड़े, नुकीले बारी वाले कटोरे (Knife Edged bowls), टोंटीदार बर्तन, तसले, संग्रह पात्र, ढक्कन, घुण्डीदार ढक्कन आदि हैं। इस काल के मृदभांड अंदर और बाहर दोनों तरफ से काले और सफेद रंग से चित्रित हैं। मृदभांडो की बारी के पास अंदर की ओर चित्रण मिलते हैं जबकि बाहरी भाग पर बारी, गर्दन, ऊपरी हिस्से के पास चित्रण बने हुए मिले हैं। मृदभांड के आंतरिक भाग में आपस में तिरछी काटती हुई रेखाएं, पाश, लहरदार रेखाएं, तिरछी पट्टियां, क्षैतिज पट्टियां आदि चित्रण मिलते हैं पूर्व मध्यकाल के समय कृषि एवं पशुपालन करते थे। गेहूं, धान, जौ आदि की फसलें उगाई जाती थी। शाकाहारी तथा मांसाहारी दोनों प्रकार का भोजन ग्रहण करते थे। इसके अतिरिक्त खान-पान में दूध, दही और विविध प्रकार के फल भी बहुतायत में प्रयोग में लाए जाते थे। पूर्व मध्यकालीन पुरास्थलों से सांस्कृतिक पुरावशेषों में पकी मिट्टी की बैल की मृण्मूर्ति, अज्ञात पक्षी की मृण्मूर्ति, कांचली मिट्टी की चूड़ी, बालुका पत्थर पर निर्मित लोढ़े, बाँट, पकीं मिट्टी के मनके आदि मिले हैं।

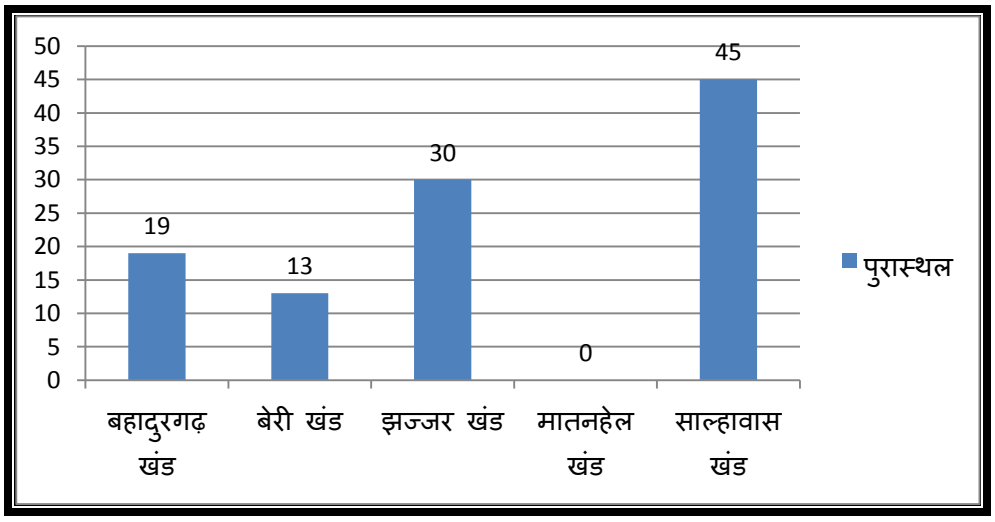

चित्र: 6.5 झज्जर जिले में पूर्व मध्यकालीन पुरास्थल

अध्याय-7

निष्कर्ष

साल्हावास खंड जलोढ़ मैदान, अरावली की पहाड़ियों तथा थार मरुस्थल के मध्य स्थित है। साल्हावास के उत्तर में जलोढ़ मैदान स्थित हैं जिनका निर्माण सरस्वती एवं दृषद्वती नदियों के द्वारा बहाकर लाई गई उपजाऊ मिट्टी से हुआ है। इसके दक्षिण-पश्चिम में थार मरुस्थल के रेतीले टीले और दक्षिण में अरावली की पहाड़ियां विद्यमान हैं। सरस्वती एवम् दृषद्वती नदियों ने न केवल कृषि योग्य उपजाऊ भूमि प्रदान की बल्कि सिंचाई के लिए जल की भी आपूर्ति की। इस नदी घाटी के क्षेत्र की उपजाऊ भूमि ने अधिशेष अनाज के उत्पादन में सहायता की। सरस्वती-दृषद्वती नदियों ने हड़प्पा सभ्यता के उदय एवं विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस क्षेत्र में इतनी अनुकूल परिस्थितियां होने के उपरांत भी हड़प्पा सभ्यता के लोग थार मरुस्थल के अर्ध-शुष्क क्षेत्र तथा अरावली की पहाड़ियों के मध्य आकर बसे। साल्हावास खंड भी अर्ध शुष्क जलवायु क्षेत्र के अंतर्गत आता है। यह अर्ध-शुष्क जलवायु वाला क्षेत्र न हीं इतनी अच्छी कृषि योग्य भूमि तथा सिंचाई के लिए जल की आपूर्ति कर सकता था। इस शोध का मुख्य उद्देश्य यह पता लगाना है कि हड़प्पा सभ्यता के लोग उपजाऊ भूमि से इस अर्ध शुष्क जलवायु क्षेत्र में किन कारणों से आए। साल्हावास खंड का पूर्वी भाग उच्च भूमि मैदानी क्षेत्र के अंतर्गत आता है जबकि पश्चिमी भाग उबड़-खाबड़ टीलों से युक्त रेतीला क्षेत्र है जिसे बांगर कहा जाता है। अरावली की पहाड़ियों में बहुत से खनिज तत्व मौजूद है जैसे- लौह-अयस्क, सोना, चाँदी, टिन, ताम्बा, अभ्रक, क्वार्ट्ज, चूना-पत्थर, मैंग्नीज और मार्बल (ग्रोवर और कुमार 1980)।

साल्हावास खंड के सभी हड़प्पाकालीन पुरास्थल आकार में छोटे एवं ग्रामीण स्वरूप के हैं। ये आवास अरावली के पत्थरों को शहरी केंद्र तथा कस्बों में भेजते थे क्योंकि बड़े पैमाने में सिल-लोढ़े, बांट आदि बड़े-बड़े शहरी केन्द्रों जैसे- राखीगढ़ी, हड़प्पा आदि से मिले हैं। संभवतः साल्हावास खंड के लोग दक्षिण तथा दक्षिण-पूर्व में स्थित अरावली की पहाड़ियों से पत्थर प्राप्त कर उन्हें शहरी केंद्रों में निर्यात करते होंगे। इसके अतिरिक्त यहां के लोग क्षेत्रीय उत्पादों का निर्माण भी करते थे। झज्जर जिले के बहादुरगढ़ खंड में स्थित बादली पुरास्थल के उत्खनन से मृदभांड में तांबे को गलाने के साक्ष्य मिले हैं (अमर सिंह एवं ठाकरान 2008: 169)। खेतड़ी नामक स्थल अरावली की पहाड़ियों में स्थित तांबे का एक महत्वपूर्ण स्रोत है जो इस क्षेत्र से अधिक दूरी पर स्थित नहीं है। इसके अतिरिक्त तांबे का

अयस्क दक्षिणी हरियाणा में स्थित तोशाम की पहाड़ी, खोडाना की पहाड़ी, खालरा की पहाड़ी तथा तीजनवाली पहाड़ी (गुप्ता और कंवर 1969: 50-51) में भी मिलता है।

साल्हासवास खंड में आरंभिक हड़प्पाकालीन संस्कृति प्रथम बार निवास करने वाली संस्कृति थी। साल्हावास खंड के सर्वेक्षण में हाकड़ा संस्कृति के रिज़र्व प्रलेप के मृदभांड (Reserved Slipped Ware), चिपकवाँ अलंकरण के मृदभांड (Mud Applique Ware) तथा हैंडल (Handle) मिले हैं। बादली के उत्खनन से आरंभिक हड़प्पाकालीन संस्कृति के स्तरों से राख, जली मिट्टी के टुकड़े मिले हैं। पूर्वी हाकड़ा संस्कृति में निवास हेतु गर्त-समूह तथा मृदभांड-परंपरा भी इस काल में प्रचलित रही। इस काल में मिताथल और मानहेरू से गोलाकार गर्त-समूह के साक्ष्य मिले हैं जिनमें राख, हड्डी, कोयला, संग्रहण हेतू तथा कूड़ा-कचरा डालने के उद्देश्य से प्रयोग किया जाता था। इसके अतिरिक्त मानहेरू-1 से बाहर की ओर से हल्के उत्कीर्ण अलंकरण से युक्त मृदभांड, खुरदुरे मृदभांड तथा चॉकलेट या ताम्र रंग के प्रलेप वाले मृदभांड मिले हैं। साल्हावास खंड में ढ़ाकला-3 पुरास्थल से रिजर्व स्लिप मृदभांड तथा अंदर की ओर गहरे उत्कीर्ण अलंकरण युक्त मृदभांड मिले हैं। इसके अतिरिक्त चिपकवाँ अलंकरण से युक्त मृदभांड भी मिले हैं। यहां से प्राप्त मृदभांड कालीबंगा-1 गढ़न (ए से एफ) तक के मृदभांडों से मेल खाते हैं। पूर्वी हाकड़ा चरण की विशेषताएं सोथी-सीसवाल में दिखाई देती है जबकि सीसवाल-बी में सोथी-सीसवाल संस्कृति की मृदभांड-परंपरा का विकास देखा जा सकता है। सोथी-सीसवाल चरण में लोग कच्ची ईंटों के घरों में निवास करते थे। अच्छी तरह से पके हुए मृदभांडों का प्रयोग करते थे। कृषि एवम् पशुपालन, तकनीकी, व्यापार एवम् वाणिज्य आदि उनकी आजीविका के साधन थे। ये लोग ना केवल कच्चे माल का निर्यात करते थे बल्कि क्षेत्रीय उत्पादों का निर्माण भी करते थे। साल्हावास खंड में स्थित आरंभिक हड़प्पाकालीन पुरास्थल ढ़ाकला-1 और ढ़ाकला-3 छोटे एवं ग्रामीण स्वरूप के हैं। इन पुरास्थलों पर विकसित हड़प्पाकाल को पहचानना अत्यंत कठिन है क्योंकि ग्रामीण स्वरूप के होने के कारण इन पुरास्थलों के मृदभांडों में अंतर कर पाना सरल नहीं है किंतु स्पष्ट रूप से विकसित हड़प्पाकाल के विषय में कुछ कहा नहीं जा सकता। अर्ध-शुष्क क्षेत्र में आरंभिक हड़प्पाकाल की विशेषताएं बहुतायत से मिलती हैं।

सर्वेक्षण के दौरान साल्हावास खंड से विकसित हड़प्पाकाल के प्रमाण नहीं मिले हैं। ढ़ाकला-3 पुरास्थल से आरंभिक हड़प्पा संस्कृति, उत्तर हड़प्पा संस्कृति के प्रमाण मिले हैं। संभवतः विकसित हड़प्पा काल के लोग भी इस पुरास्थल पर रहे होंगे। सीसवाल-बी चरण की विशेषताएं निरंतर प्रचलन

में रही एवं कुछ नए प्रकार के मृदभांड जैसे- बीकर, छित्रित जार, साधार-तश्तरियाँ, एस आकार के संग्रह पात्र, गोबलेट और चौड़े मुंह वाले संग्रह पात्र आदि मिलते हैं। विकसित हड़प्पाकाल में मिताथल में दो टीले मिले हैं जिन्हें निचला नगर और दुर्ग के नाम से जाना जाता है जो कि विकसित हड़प्पाकाल की मुख्य विशेषताओं में से एक है। इस काल में चक्र के आकार के सिलखड़ी के मनके, नलाकार कार्नेलियन के मनके, अर्ध निर्मित कार्नेलियन के मनके, त्रिभुजाकार केक आदि मिलते हैं। इस काल में मानहेरू एवं मिताथल ने एक क्षेत्रीय केंद्र के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई (परमार 2012: 154)। इन दोनों पुरास्थलों ने कांचली मिट्टी और सिलखड़ी की वस्तुओं के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। अतः इससे स्पष्ट है कि ये आवास शहरी केंद्रों को कच्चे माल के साथ-साथ क्षेत्रीय उत्पाद की वस्तुएं भी निर्यात करते थे।

साल्हावास खंड में उत्तर हड़प्पाकालीन पांच पुरास्थल स्थित हैं। इन पुरास्थलों ने न केवल कृषि एवं पशुपालन व्यवस्था में बल्कि औद्योगिक गतिविधियों में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। सर्वेक्षण के दौरान इन पुरास्थलों से सिल-लोढ़े, लोढ़े, बाँट, मिट्टी की चूड़ियाँ और अरावली के पत्थर (कच्चा माल) मिले हैं जो यह दर्शाता है कि यहाँ के लोग कच्चे माल को कस्बों एवम् शहरों तक पंहुचाते होंगे। उत्तर हड़प्पाकाल में बाह्य व्यापार में गिरावट दिखाई देती है जबकि क्षेत्रीय उत्पाद में वृद्धि परिलक्षित होती है। हरियाणा में स्थित पुरास्थलों ने अरावली पहाड़ी के पत्थरों और क्षेत्रीय उत्पाद की वस्तुओं के निर्यात में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस काल में कांचली मिट्टी की वस्तुएं अत्यधिक प्रचलित थी। मिताथल कांचली मिट्टी की वस्तुओं का निर्माण का प्रमुख केंद्र था जो संभवत इन वस्तुओं को अन्य उत्तर हड़प्पाकालीन पुरास्थलों को निर्यात करता होगा। उत्तर हड़प्पाकाल में संरचनात्मक ढांचे, मृदभांड-परंपरा, सांस्कृतिक पुरावशेषों में परिवर्तन दिखाई देता है। इस काल में मिताथल के उत्खनन से कच्ची इंटें तथा मिट्टी से निर्मित संरचनात्मक अवशेष मिले हैं जो इस काल में अर्थव्यवस्था में आई गिरावट को दर्शाते हैं। इस काल में बड़ी संख्या में टूटी-फूटी कच्ची इंटें प्रयुक्त की गई जो संभवत पूर्ववर्ती चरण से लाई गई थी (सूरजभान 1975)। उत्तर हड़प्पाकाल के मृदभांडों की गढ़न, अलंकरण एवं चित्रण में अवनति दिखाई देती है। इस काल के मृदभांड मध्यम से मोटी गढ़न के तथा वजन में भारी हैं एवं ज्यामितीय चित्रण भी मिलते हैं। इस काल में पकीं मिट्टी से निर्मित वस्तुएं, पत्थर और कांचली मिट्टी से बनी वस्तुएं अत्यधिक अधिक प्रचलित थी। उत्तर हड़प्पाकाल के बाद साल्हावास का क्षेत्र बहुत समय तक वीरान रहा। पूर्व मध्यकाल के दौरान लोगों ने फिर से इस क्षेत्र में निवास करना शुरू किया।

पूर्व मध्यकाल में राजनीतिक सत्ता संघर्ष के कारण समय-समय पर क्षेत्रीय शक्तियों का आधिपत्य रहा। इस काल में कृषि, पशुपालन, व्यापार-वाणिज्य, हस्त-शिल्पी और तकनीकी में सुधार आया। पूर्व मध्यकाल का समय दीर्घकालीन था। इस काल में समय-समय पर राजनीतिक सत्ता में परिवर्तन होता रहा जिसका वर्णन अध्याय-1 में विस्तार से किया गया है। सत्ता-परिवर्तन का प्रभाव व्यापारियों पर पड़ता था। इस समय के मकान कच्ची ईंटों पक्की इंटों तथा पत्थरों से बनाए जाते थे। पूर्व मध्य काल के समय कृषि एवं पशुपालन दोनों पर बल दिया जाता था। गेहूं, धान, जौ आदि फसलें उगाई जाती थी। लोग शाकाहारी तथा मांसाहारी दोनों प्रकार के भोजन का प्रयोग करते थे। भेड़, हिरण तथा मछली आदि का मांस खाया जाता था। इसके अतिरिक्त खानपान में दूध, दही, विविध प्रकार के फल आदि भी बहुतायत में प्रयोग में लाए जाते थे। कृषि के अतिरिक्त वाणिज्य-व्यवसाय, उद्योग धंधे तथा व्यापार उन्नति पर थे। व्यापार या व्यवसाय का कार्य व्यापारिक श्रेणियों के द्वारा किया जाता था। प्रत्येक कार्य की देखरेख के लिए एक अधिकारी की नियुक्ति की जाती थी जिसे अलग-अलग समय पर अलग-अलग पद नाम दिया गया। साल्हावास खंड के पूर्व मध्यकालीन मृदभांडो में अधिकतर लाल रंग के मृदभांड मिले हैं। ये मृदभांड अच्छी तरह से गुंथी हुई मिट्टी से बने हुए हैं तथा तेज गति के चाक पर निर्मित हैं। ये मृदभांड मध्यम से उत्तम गढ़न के हैं। मृदभांडो के मुख्य प्रकार घड़े, नुकीले बारी वाले कटोरे (Knife Edged Bowls), टोंटीदार बर्तन, तसले, संग्रह पात्र, ढक्कन, घुण्डीदार ढक्कन आदि हैं। इस काल के मृदभांड अंदर और बाहर दोनों तरफ से काले और सफेद रंग से चित्रित हैं। मृदभांडो की बारी के पास अंदर की ओर चित्रण मिलते हैं जबकि बाहरी भाग पर बारी, गर्दन, ऊपरी हिस्से के पास चित्रण बने हुए मिले हैं। मृदभांड के आंतरिक भाग में आपस में तिरछी काटती हुई रेखाएं, पाश, लहरदार रेखाएं, तिरछी पट्टियां, क्षैतिज पट्टियां आदि चित्रण मिलते हैं जबकि बाहरी भाग के चित्रण में समानांतर क्षैतिज के पट्टियां के मध्य लहरदार रेखाएं, या मोटी काली पट्टियों के मध्य सफेद रंग के बिंदु, समानांतर क्षैतिज पट्टियां, लहरदार रेखाएं, क्षैतिज रेखाओं के मध्य त्रिभुज, आडी तिरछी रेखाए, लंबवत एवं तिरछी रेखाओं की श्रृंखला से युक्त चित्रण सम्मिलित हैं। पूर्व मध्यकालीन पुरास्थलों से सांस्कृतिक पुरावशेषों में पकी मिट्टी की बैल की मृण्मूर्ति, अज्ञात पक्षी की मृण्मूर्ति, कांचली मिट्टी की चूड़ी, बालुका पत्थर पर निर्मित लोढ़े, बाँट, पकीं मिट्टी के मनके आदि मिले हैं। इसके अतिरिक्त कई पुरास्थलों से पत्थर (कच्चा माल) तथा मुंढ़ेरा-5 पुरास्थल से जैस्पर पत्थर का महीन टुकड़ा मिला है जिससे स्पष्ट है कि हड़प्पाकाल में ही नहीं बल्कि पूर्व-मध्यकाल में भी इन पुरास्थलों ने क्षेत्रीय केन्द्रों की भूमिका निभाई।

इस सर्वेक्षण से साल्हावास खण्ड में कुल 48 पुरास्थल प्रकाश में आए हैं जिनमें से 1 पुरास्थल आरंभिक हड़प्पा काल, 5 पुरास्थल उत्तर हड़प्पाकाल तथा 45 पुरास्थल पूर्व मध्यकाल से संबंधित हैं। इन पुरास्थलों में तीन ऐसे पुरास्थल हैं जो वर्तमान शोधकर्ता द्वारा प्रथम बार प्रतिवेदित किए गए हैं- न्यौला, मुंढ़ेरा-4, मुंढ़ेरा-5। ये तीनों पुरास्थल पूर्व मध्यकालीन संस्कृति के हैं। अधिकतर पुरास्थल एकांकी संस्कृति वाले हैं जबकि ढ़ाकला-1, ढ़ाकला-3, कासनी-1 बहु सांस्कृतिक पुरास्थल हैं। इन पुरास्थलों की आवास योजना का अध्ययन क्षेत्रफल, मृदा, स्वरूप तथा जनसंख्या के आधार पर किया गया है। मृदा के आधार पर आवास योजना का अध्ययन किया गया जिसमें यह पाया गया कि आरंभिक हड़प्पाकालीन के सभी पुरास्थल रेतीले क्षेत्र में स्थित हैं। आरंभिक हड़प्पाकालीन पुरास्थलों का कुल अनुमानित क्षेत्रफल 5 हेक्टेयर है तथा प्रत्येक पुरास्थल का औसत आकार 2.5 हेक्टेयर है। आरंभिक हड़प्पाकाल के सभी पुरास्थल ग्रामीण स्वरूप के हैं जिनके प्रत्येक पुरास्थल का आकार 5 हेक्टेयर क्षेत्र से भी कम है। साल्हावास खंड में आरंभिक हड़प्पा काल के समय कुल जनसंख्या 297 थी जिनमें प्रत्येक आवास की जनसंख्या 148.5 थी।

साल्हावास खंड के उत्तर हड़प्पाकाल के 80% पुरास्थल रेतीले क्षेत्र में स्थित हैं एवं 20% पुरास्थल जलोढ़ मैदान में स्थित हैं। उत्तर हड़प्पाकालीन सभी पुरास्थलों का कुल अनुमानित क्षेत्रफल 10.5 हेक्टेयर है जिनमें से प्रत्येक पुरास्थल का औसत आकार 2.1 हेक्टेयर है। उत्तर हड़प्पाकाल के सभी पुरास्थल ग्रामीण स्वरूप के हैं। इस काल के दौरान इन 5 पुरास्थलों की कुल जनसंख्या 623.7 थी तथा प्रत्येक पुरास्थल की औसत जनसंख्या 124.74 थी। पूर्व मध्यकालीन संस्कृति के 69% पुरास्थल रेतीले क्षेत्र तथा 31 पुरास्थल जलोढ़ मैदान में स्थित हैं। पूर्व मध्यकालीन संस्कृति के आवासों का कुल अनुमानित क्षेत्रफल 112.5 हेक्टेयर है तथा प्रत्येक आवास का औसत आकार 2.5 हेक्टेयर है। पूर्व मध्यकालीन 45 पुरास्थलों की कुल जनसंख्या 6682.5 थी तथा प्रत्येक पुरास्थल की औसत जनसंख्या 159.10 थी। पूर्व मध्यकालीन पुरास्थलों में दो पुरास्थल बड़े गांव की श्रेणी में आते हैं जिनका आकार 5 से 9.9 हेक्टेयर के बीच में है तथा शेष 43 पुरास्थल छोटे गांव की श्रेणी में आते हैं।

अत: साल्हावास के क्षेत्र में सर्वप्रथम बसने वाली संस्कृति आरंभिक हड़प्पाकाल से संबंधित है। यद्यपि इनकी संख्या बहुत कम है फिर भी इनकी उपस्थिति दर्शाती है कि सहाबी और कृष्णावती नदी और अरावली की पहाड़ियों होने के कारण यह क्षेत्र उनकी आजीविका के लिए उपयुक्त था।

सरस्वती-दृषद्वती नदियों से आरंभिक हड़प्पा संस्कृति के लोग धीरे-धीरे दक्षिण की ओर विशेषकर अर्ध-शुष्क क्षेत्र में बसे। अरावली की पहाड़ियों के समीपता के कारण ये लोग इस क्षेत्र में आकर बसे क्योंकि अरावली की पहाड़ियों में पत्थर, खनिज तत्व तथा विभिन्न प्रकार की धातुएं आदि विद्यमान थी। लेकिन वास्तव में पूर्व मध्यकाल में बड़ी सख्यां में लोगों ने यहाँ आकर रहना शुरू किया। इस क्षेत्र में कुछ बड़े गाँव मध्यकाल और उत्तर मध्यकाल से लेकर वर्तमान तक भी आबाद है। यहाँ के लोगों की आजीविका मुख्यत: उच्च तकनीकी के माध्यम से कृषि पर आधारित है।

Bibliography

(सन्दर्भ सूची)

अग्रवाल, आर.सी. 1984. अरावली दि मेजर सोर्स ऑफ कॉपर फॉर दि इंडस एंड इंडस रिलेटेड कल्चर्स, इन फ्रंटियर ऑफ दि इंडस सिविलाइज़ेशन, न्यू दिल्ली

अशोक कुमार 1990-91. *आर्कियोलोजी एंड हिस्ट्री ऑफ बादली रीजन*, डिस्ट्रिक्ट रोहतक (हरियाणा) एम.फिल. डिजरटेशन, एम. डी. यूनिवर्सिटी, रोहतक

आई. ए. आर: *इंडियन आर्कियोलोजी रिव्यू*, नई दिल्ली: आर्कियोलोजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया (1965-66, 1978-79 और 1981-82)

एडम, आर. एम 1965. *लैंड बिहाइंड बगदाद: ए हिस्ट्री ऑफ सेटलमेंट ऑन दि दिवले प्लेन्स शिकागो:* यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो

कटारिया, राजीव 1989-90. *आर्कियोलोजी ऑफ बहादुरगढ़ ब्लॉक, डिस्ट्रिक्ट रोहतक (हरियाणा)* एम. फिल. डिजरटेशन, एम. डी. यूनिवर्सिटी, रोहतक

कादियान, राय सिंह 1987-88. *आर्कियोलोजी एंड हिस्ट्री ऑफ बेरी ब्लॉक, डिस्ट्रिक्ट रोहतक (हरियाणा)* एम.फिल. डिजरटेशन एम. डी. यूनिवर्सिटी, रोहतक

केन्योर, जे. एम. 1994. *फियांस फ्रॉम इंडस वैली सिविलाइज़ेशन ओर्नामेंट* 17(3): 36-39

के. सी. श्रीवास्तव और एम. श्रीवास्तव 2005-06 *प्राचीन भारत का इतिहास तथा संस्कृति*, यूनाइटेड बुक डिपो, इलाहाबाद.

खान, एस. ए. 2007. *ग्राउंड वाटर इनफार्मेशन बुकलेट ऑफ झज्जर डिस्ट्रिक्ट हरियाणा, चंडीगढ़*

खुल्लर, डी. आर. 2014. *ए कॉम्प्रेहेंसिव जियोग्राफी*. कल्याणी पब्लिकेशन, लुधियाना

ग्रोवर एस. पी. और रमेश कुमार 1980. *जियोलॉजी एंड स्ट्रक्चर ऑफ तोशाम एंड बडादरी हिल्स*

तोशाम हरियाणा: इन पब्लिकेशन ऑफ दि सेंटर ऑफ दि एडवांस स्टडीज इन जियोलॉजी, पंजाब यूनिवर्सिटी, चंढ़ीगढ़

गुप्ता, वी. जे और आर. सी. कंवर 1969. *जियोलॉजी एंड मिनरल्स ऑफ हरियाणा*. जर्नल ऑफ हरियाणा स्टडीज 1: 42-46

चांग, के. सी. 1962. *ए टाइपोलोजी ऑफ सेटलमेंट एंड कम्युनिटी पैटर्न इन सम सरकमपोलर सोसायटी.* आर्कटिक एंथ्रोपोलॉजी 1: 28-41

जय नारायण 1990-91. *आर्कियोलोजी एंड हिस्ट्री ऑफ मातनहेल ब्लॉक, डिस्ट्रिक्ट रोहतक (हरियाणा)* एम.फिल. डिजरटेशन, एम. डी. यूनिवर्सिटी, रोहतक

जोन्स, जे.आर.1971. *सेटेलमेंट पैटर्न इन एंग्लो सेक्शन,* इंग्लैंड.एंटिक्विटी 35: 221-232

ट्रिगर, बी. जी. 1968 *दि डिटरमिनन्ट्स ऑफ सेटलमेंट पैटर्न इन सेटलमेंट आर्कियोलोजी* पेज न. 53-78 पेलो एलतो: नेशनल प्रेस

ठाकरान, आर. सी., अमर सिंह, यशपाल, विकास, अन्जू 2009 *एक्सकवेशन एट हड़प्पन साईट बादली* (2008) पुरातत्व 39: 165-171

जियोलोजीकल सर्वे ऑफ इंडिया 2012. *जियोलोजीकल सर्वे ऑफ इंडिया*, नार्थन रिजन: लखनऊ

ठाकरान, आर. सी., अमर सिंह, यशपाल, विकास, नरेन्द्र परमार, अन्जू 2010 *फरदर एक्सकवेशन एट हड़प्पन साईट बादली* (2009-10), डिस्ट्रिक्ट झज्जर, हरियाणा. पुरातत्व 40: 208-213

ठाकरान, आर. सी., अमर सिंह, यशपाल, विकास, नरेन्द्र परमार 2012 *एक्सकवेशन एट हड़प्पन साईट मानहेरू (2009).* डिस्ट्रिक्ट भिवानी, हरियाणा. दक्कन बुलेटिन 70-71: 1-15

डिस्ट्रिक्ट डिजास्टर मैनेजमेंट प्लान झज्जर 2015 डिपार्टमेंट ऑफ़ रेवन्यू एंड डिजास्टर मैनेजमेंट: हरियाणा इंस्टिट्यूट ऑफ़ पब्लिशिंग एडमिनिस्ट्रेशन गुरुग्राम

डिस्ट्रिक्ट सेन्सस हैंडबुक 2011. *डिस्ट्रिक्ट सेन्सस हैंडबुक झज्जर*, डायरेक्टरेट ऑफ सेन्सस ऑपरेशन: हरियाणा

ढाका, सुरेन्द्र सिंह 1990-91 *आर्कियोलोजी एंड हिस्ट्री ऑफ़ साल्हावास ब्लॉक, डिस्ट्रिक्ट रोहतक (हरियाणा)* एम. फिल. डिजरटेसन, एम. डी. यूनिवर्सिटी, रोहतक

दीक्षित, के.एन. 1979 *दि लेट हड़प्पन कल्चर्स इन इंडिया इन इंडियन प्रीहिस्टोरिक*, दिल्ली: बी.आर. पब्लिशिंग कारपोरेशन

नेगी, आर.एस. *1983 फ्लड्स इन साहबी रिवर ए जियोमोर्फिक स्टडी ऑफ दि इंडस सोसाइटी ऑफ फोटो इंटरप्रिटेशन रिक्टर सेंसिंग वॉल्यू-2*

परमार, नरेंद्र *2012. प्रोटोहिस्टोरिक इन्वेस्टीगेसन इन दि भिवानी डिस्ट्रिक्ट ऑफ़ हरियाणा, पी.* एच .डी थीसिस, दक्कन कॉलेज ऑफ़ पोस्ट ग्रेजुएशन एंड रिसर्च इंस्टिट्यूट, पुणे

पर्सन, जे.आर. 1971. *प्रीहिस्टोरिक सेटेलमेंट पैटर्न इन दि टेक्सको रिजन*, मिशिगन यूनिवर्सिटी, म्यूजियम ऑफ एंथ्रोपोलॉजी

ब्लेंटन, आई. ई. 1972. *प्रिहिस्टोरिक एडॉप्शन इन दि पालावा रीजन* नाथ, मैक्सिको

माखनलाल 1984 *सेटलमेंट हिस्ट्री एंड राइज ऑफ सिविलाइज़ेशन इन गंगा यमुना दोआब*, बी. आर. पब्लिशिंग कारपोरेशन, नई दिल्ली

माजिद हुसैन. 2015 *जियोग्राफी ऑफ इंडिया*. नई दिल्ली: मैक ग्रा हील एजुकेशन प्राइवेट लिमिटेड

राहड़, जगदीश सिंह. 1991-92 *आर्कियोलोजी एंड हिस्ट्री ऑफ झज्जर ब्लॉक*, डिस्ट्रिक्ट रोहतक (हरियाणा) एम.फिल. डिजरटेशन, एम. डी. यूनिवर्सिटी, रोहतक

वोग्ट, ई. जड. 1956. *एन अप्रेजल ऑफ़ प्रीहिस्टोरिक सेटलमेंट पैटर्न* इन न्यू वर्ल्ड. पृष्ट (173-182) विकिंग फण्ड पब्लिकेशन इन अन्थ्रोपोलोजी 23

विल्ली, जी. आर. 1953. *प्रीहिस्टोरिक सेटलमेंट पैटर्न इन दि वीरु वैली*, पेरू, ब्यूरो ऑफ़ अमेरिकन एथनोलोजी बुलेटिन 155

शिंदे, वसंत. 1984. *अर्ली सेटलमेंट इन दि सेंट्रल तापी बेसिन*, पी. एच. डी थीसिस. पुणे: दक्कन कॉलेज ऑफ़ पोस्ट ग्रेजुएशन एंड रिसर्च इंस्टिट्यूट

स्टीवर्ड, जे. एच. 1937. *दि इकॉनमी एंड सोशल बेसिस ऑफ़ प्रिमिटिव बेन्ड्स. इन एसेज ओंन एंथ्रोपोलॉजीइन ओनर ऑफ़ एल्फ्रेड लुईस क्रोबेर इकोलॉजिकल आस्पेक्ट्स ऑफ साउथवेस्टर्न सोसाइटी*. एन्थ्रोपोज 32

स्नेहलता 1977-78. *आर्कियोलोजी एंड हिस्ट्री ऑफ सांपला ब्लॉक, डिस्ट्रिक्ट (हरियाणा)* एम.फिल. डेजेरटेशन, रोहतक: एम.डी.यू.

सिंह, आर. एल. 2014. *ए रीजनल जियोग्राफी* . वाराणसी: नेशनल ज्योग्राफिकल सोसाइटी ऑफ इंडिया

सीलकराम 1972. *आर्कियोलोजी ऑफ रोहतक एंड हिसार डिस्ट्रिक्ट (हरियाणा)* एनपब्लिशड पी.एच.डी.थिसीज, कुरुक्षेत्र यूनिवर्सिटी, कुरुक्षेत्र हरियाणा

सूरजभान, 1975. *एक्सक्वेसन अट मिताथल(1968) एंड अदर एक्सप्लोरेशन इन दि सतलुज-यमुना डिवाइड*, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र

सैंडर्स, डब्ल्यू. टी. 1956. *दि सेंट्रल मैक्सीकन सिम्बोलिक रिजन: ए स्टडी इन प्रीहिस्टोरिक सेटेलमेंट पैटर्न इन न्यू वल्ड. विकिंग फण्ड पब्लिकेशन इन* एंथ्रोपोलॉजी न. 23

हरियाणा डिस्ट्रिक्ट गजेटियर 1883-84. *गजेटियर ऑफ रोहतक (हरियाणा)* गजेटियर आर्गेनाईजेशन रिवेन्यू डिपार्टमेंट, चंडीगढ़(रिप्रिन्टेड)

हरियाणा डिस्ट्रिक्ट गजेटियर 1970. *गजेटियर ऑफ रोहतक (हरियाणा)* गजेटियर आर्गेनाईजेशन रिवेन्यू डिपार्टमेंट, चंडीगढ़.

हरियाणा गवर्नमेंट 1972. *स्टैटिस्टिकल एबस्ट्रक्ट ऑफ हरियाणा*, इकोनोमिकल एंड स्टैटिस्टिकल आर्गेनाईजेशन प्लानिंग डिपार्टमेंट: गवर्नमेंट ऑफ हरियाणा

परिशिष्ट-1

साल्हावास खण्ड के पुरास्थल

EH – Early Harappan MH - Mature Harappan
LH- Late Harappan E. Med. - Early Medieval

क्र.सं	पुरास्थल का नाम	अवस्थिति	सांस्कृतिक क्रम	आकार (हेक्टेयर)
1	अम्बोली-1	28°26'42" 76°29'40"	E. Med.	2.50
2	अम्बोली-2	28°27'07" 76°29'56"	E. Med.	3.00
3	बाबेपुर	28°26'29" 76°33'46"	E. Med.	4.00
4	भूरावास	28°28'16" 76°29'38"	E. Med.	2.00
5	बिठला	28°27'44" 76°31'34"	E. Med.	1.00
6	चांदोल	28°29'22." 76°32'28"	E. Med.	2.00
7	चांदपुर	28°29'23" 76°39'27"	E. Med.	6.00
8	छप्पार-1	28°27'13" 76°35'23"	E. Med.	1.50
9	छप्पार -2	28°26'27" 76°34'38"	E. Med.	2.00
10	ढ़ाकला-1	28°30'29" 76°32'18"	LH	2.00
11	ढ़ाकला -2	28°30'25" 76°33'40"	E. Med.	2.00
12	ढ़ाकला -3	28°28'35" 76°32'35"	EH, MH (?), LH, E. Med.	3.00

13	ढ़ाना	28°27'52" 76°27'12"	E. Med.	1.50
14	धनिया	28°25'43" 76°27'13"	E. Med.	2.00
15	धनीरवास-1	28°27'41" 76°27'59"	E. Med.	4.00
16	धनीरवास -2	28°28'04" 76°26'45"	E. Med.	3.00
17	धरौली-1	28°25'34" 76°30'57"	E. Med.	2.50
18	धरौली -2	28°26'05" 76°31'17"	E. Med.	3.00
19	फतेहपुरी	28°31'08" 76°35'08"	E. Med.	2.00
20	जैतपुर	28°25'43" 76°34'25"	E. Med.	4.00
21	जटवाड़ा-1	28°26'25" 76°31'03"	E. Med.	3.00
22	जटवाड़ा -2	28°27'05" 76°32'49"	E. Med.	1.00
23	कनवा	28°31'34" 76°33'51"	E. Med.	1.00
24	कासनी-1	28°30'29" 76°35'00"	LH, E. Med.	1.50
25	कासनी -2	28°31'24" 76°36'01"	E. Med.	1.50
26	खुड्डन-1	28°28'32" 76°36'17"	E. Med.	3.00
27	खुड्डन -2	28°29'23" 76°36'52"	E. Med.	8.00

28	खुड्डन -3	28°28'21" 76°35'20"	E. Med.	4.00
29	कोहंद्रावली-1	28°30'40" 76°32'28"	E. Med.	2.00
30	कोहंद्रावली-2	28°30'35" 76°32'05"	E. Med.	1.50
31	कुंजिया	28°32'17" 76°34'38"	E. Med.	2.50
32	मुंढ़ेरा-1	28°30'04" 76°30'18"	E. Med.	1.50
33	मुंढ़ेरा -2	28°30'38" 76°30'50"	E. Med.	1.50
34	मुंढ़ेरा -3	28°31'29" 76°31'13"	LH	1.50
35	मुंढ़ेरा -4	28°30'04" 76°30'18"	E. Med.	1.00
36	मुंढ़ेरा -5	28°30'02" 76°30'3"	E. Med.	2.50
37	न्यौला	28°28'51" 76°35'33"	E. Med.	1.50
38	नीलाहेड़ी	28°29'47" 76°30'05"	E. Med.	3.00
39	पटासनी	28°29'54" 76°40'21"	LH	2.50
40	साल्हावास-1	28°27'30" 76°27'28"	E. Med.	1.50
41	साल्हावास-2	28°27'13" 76°28'48"	E. Med.	2.00
42	समासपुर माजरा -1	28°29'20" 76°35'17"	E. Med.	3.00

43	समासपुर माजरा-2	28°29'30" 76°34'52"	E. Med.	2.00
44	समासपुर माजरा-3	28°30'19" 76°35'52"	E. Med.	3.00
45	सरोला	28°27'36" 76°35'31"	E. Med.	1.00
46	सुबाना-1	28°28'20" 76°33'54"	E. Med.	3.00
47	सुबाना-2	28°27'34" 76°33'60"	E. Med.	2.00
48	तुम्बाहेड़ी	28°25'06" 76°32'48"	E-Med.	4.00

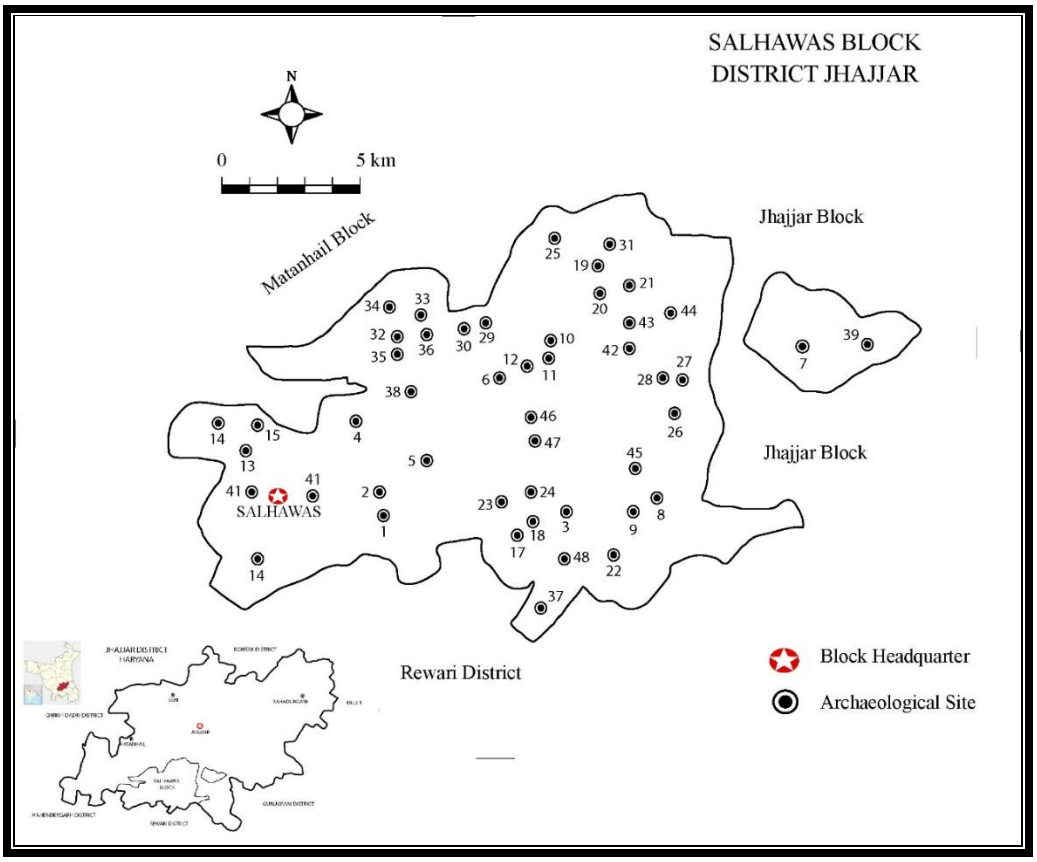

चित्र: 1A साल्हावास खण्ड के पुरास्थल

चित्र: 1 आरंभिक हड़प्पाकालीन मृदभांड

चित्र: 2 उत्तर हड़प्पाकालीन मृदभांड

चित्र: 3 उत्तर हड़प्पाकालीन मृदभांड

चित्र: 4 पूर्व मध्यकालीन मृदभांड

चित्र: 5 पूर्व मध्यकालीन मृदभांड

चित्र: 6 पूर्व मध्यकालीन मृदभांड

चित्र: 7 पकी मिट्टी के पुरावशेष

चित्र : 8 कांचली एवं पकी मिट्टी की चूड़ियाँ

चित्र: 9 पत्थर के पुरावशेष